उत्तराध्ययनसूत्रम्

.....

Uttarādhyayanasūtram

उत्तराध्ययनसूत्रम्

Uttarādhyayanasūtram

A Jain Canonical Work

Edited

for the use of University Students

BY

R. D. VADEKAR, M. A.
Professor of Sanskrit and
Allied Languages,
Fergusson College,
Poona-4.

N. V. VAIDYA, M. A.
Professor of Ardhamāgadhī,
Fergusson College,
Poona-4.

POONA

1954

PREFACE

This edition of the Uttaradhyayans-Sutra is specifically intended for the University students of Ardhamagadhi. The text followed is essentially based on the excellent edition of Prof. Jarl Charpentier of Upsala. But as the edition is no longer available and as there is no other good edition of the text available for the last so many years, we are presenting this complete edition of the text only, at a moderate price for the student world. We have corrected a few misprints in Prof. Charpentier's edition and have incorporated a few better readings, as given in Devendra's commentary. We propose to bring out another edition with introduction, The summary of chapters, Index of verses and vocabulary of difficult words and technical terms if possible. We take this opportunity of thanking the management of the Aryabhushan Press for prompt and excellent printing of the book.

Fergussion College,
Poona
26 January 1954.

R. D. Vadekar
N. V. Vaidya

।। विणयसुयं प्रथमं अध्ययनम् ।।

संजोगा विप्पमुक्कस्स अणगारस्स भिक्खुणो ।
विणयं पाउकरिस्सामि आणुपुव्विं सुणेह मे ॥ १ ॥

आणानिद्देसकरे गुरूणमुववायकारए ।
इंगियागारसंपन्ने से विणीए त्ति वुच्चई ॥ २ ॥

आणानिद्देसकरे गुरूणमणुववायकारए ।
पडणीए असंबुद्धे अविणीए त्ति वुच्चई ॥ ३ ॥

जहा सुणी पूइकण्णी निक्कसिज्जइ सव्वसो ।
एवं दुस्सीलपडिणीए मुहरी निक्कसिज्जई ॥ ४ ॥

कणकुण्डगं चइत्ताणं विट्ठं भुंजइ सूयरे ।
एवं सीलं चइत्ताणं दुस्सीले रमई मिए ॥ ५ ॥

सुणिया भावं साणस्स सूयरस्स नरस्स य ।
विणए ठवेज्ज अप्पाणमिच्छन्तो हियमप्पणो ॥ ६ ॥

तम्हा विणयमेसिज्जा सीलं पडिलभेज्जए ।
बुद्धपुत्ते नियागट्ठी न निक्कसिज्जइ कण्हुई ॥ ७ ॥

निसन्ते सियाऽमुहरी बुद्धाणं अन्तिए सया ।
अट्ठजुत्ताणि सिक्खेज्जा निरट्ठाणि उ वज्जए ॥ ८ ॥

अणुसासिओ न कुप्पिज्जा खंतिं सेविज्ज पण्डिए ।
खुड्डेहिं सह संसग्गिं हासं कीडं च वज्जए ॥ ९ ॥

मा य चण्डालियं कासी बहुयं मा य आलवे ।
कालेण य अहिज्जित्ता तओ झाइज्ज एगगो ॥ १० ॥

आहच्च चण्डालियं कट्टु न निण्हविज्ज कयाइ वि ।
कडं कडे त्ति भासेज्जा अकडं नो कडे त्ति य ॥ ११ ॥

मा गलियस्से व कसं वयणमिच्छे पुणो पुणो ।
कसं व दट्ठुमाइण्णे पावगं परिवज्जए ॥ १२ ॥

अणासवा थूलवया कुसीला
मिउं पि चण्डं पकरिन्ति सीसा ।
चित्ताणुया लहु दक्खोववेया
पसायए ते हु दुरासयं पि ॥ १३ ॥

नापुट्ठो वागरे किंचि पुट्ठो वा नालियं वए ।
कोहं असच्चं कुव्वेज्जा धारेज्जा पियमप्पियं ॥ १४ ॥

अप्पा चेव दमेयव्वो अप्पा हु खलु दुद्दमो ।
अप्पा दन्तो सुही होइ अस्सिं लोए परत्थ य ॥ १५ ॥

वरं मे अप्पा दन्तो संजमेण तवेण य ।
माहं परेहि दम्मन्तो बन्धणेहि वहेहि य ॥ १६ ॥

पडणीयं च बुद्धाणं वाया अदुव कम्मुणा ।
आवी वा जइ वा रहस्से नेव कुज्जा कयाइ वि ॥ १७ ॥

न पक्खओ न पुरओ नेव किच्चाण पिट्ठओ ।
न जुंजे ऊरुणा ऊरुं सयणे नो पडिस्सुणे ॥ १८ ॥

नेव पल्हत्थियं कुज्जा पक्खपिण्डं च संजए ।
पाए पसारिए वावि न चिट्ठे गुरुणन्तिए ॥ १९ ॥

आयारियेहिं वाहित्तो तुसिणीओ न कयाइ वि ।
पसायपेही नियागट्ठी उवचिट्ठे गुरुं सया ॥ २० ॥

आलवन्ते लवन्ते वा न निसीएज्ज कयाइ वि ।
चइऊणमासणं धीरो जओ जत्तं पडिस्सुणे ॥ २१ ॥

आसणगओ न पुच्छिज्जा नेव सेज्जागओ कया ।
आगम्मुक्कुडुओ सन्तो पुच्छिज्जा पंजलीउडो ॥ २२ ॥

एवं विणयजुत्तस्स सुत्तं अत्थं च तदुभयं ।
पुच्छमाणस्स सीसस्स वागरिज्ज जहासुयं ॥ २३ ॥

मुसं परिहरे भिक्खू न य ओहारिणिं वए ।
भासादोसं परिहरे मायं च वज्जए सया ॥ २४ ॥

न लवेज्ज पुट्ठो सावज्जं न निरट्ठं न मम्मयं ।
अप्पणट्ठा परट्ठा वा उभयस्सन्तरेण वा ॥ २५ ॥

समरेसु अगारेसु सन्धीसु य महापहे ।
एगो एगित्थिए सद्धिं नेव चिट्ठे न संलवे ॥ २६ ॥

जं मे बुद्धाणुसासन्ति सीएण फरुसेण वा ।
मम लाभो त्ति पेहाए पयओ तं पडिस्सुणे ॥ २७ ॥

अणुसासणमोवायं दुक्कडस्स य चोयणं ।
हियं तं मण्णई पण्णो वेसं होइ असाहुणो ॥ २८ ॥

हियं विगयभया बुद्धा फरुसं पि अणुसासणं ।
वेसं तं होइ मूढाणं खन्तिसोहिकरं पयं ॥ २९ ॥

आसणे उवचिट्ठेज्जा अणुच्चे अकुए थिरे ।
अप्पुट्ठाई निरुट्ठाई निसीएज्जप्पकुक्कुए ॥ ३० ॥

कालेण निक्खमे भिक्खू कालेण य पडिक्कमे ।
अकालं च विवज्जित्ता काले कालं समायरे ॥ ३१ ॥

परिवाडीए न चिट्ठेज्जा भिक्खू दत्तेसणं चरे ।
पडिरूवेण एसित्ता मियं कालेण भक्खए ॥ ३२ ॥

नाइदूरमणासन्ने नन्नेसिं चक्खुफासओ ।
एगो चिट्ठेज्ज भत्तट्ठा लंघिया तं नइक्कमे ॥ ३३ ॥

नाइउच्चे न नीए वा नासन्ने नाइदूरओ ।
फासुयं परकडं पिण्डं पडिगाहेज्ज संजए ॥ ३४ ॥

अप्पपाणेऽप्पबीयंमि पडिच्छन्नंमि संवुडे ।
समयं संजए भुंजे जयं अपरिसाडियं ॥ ३५ ॥

सुकडि त्ति सुपक्कि त्ति सुच्छिन्ने सुहडे मडे ।
सुणिट्ठिए सुलट्ठि त्ति सावज्जं वज्जए मुणी ॥ ३६ ॥

रमए पण्डिए सासं हयं भद्दं व वाहए ।
बालं सम्मइ सासन्तो गलियस्सं व वाहए ॥ ३७ ॥

खड्डुया मे चवेडा मे अक्कोसा य वहा य मे ।
कल्लाणमणुसासन्तो पावदिट्ठि त्ति मन्नई ॥ ३८ ॥

पुत्तो मे भाय नाइ त्ति साहू कल्लाण मन्नई ।
पावदिट्ठी उ अप्पाणं सासं दासु त्ति मन्नई ॥ ३९ ॥

न कोवए आयरियं अप्पाणं पि न कोवए ।
बुद्धोवघाई न सिया न सिया तोत्तगवेसए ॥ ४० ॥

आयरियं कुवियं नच्चा पत्तिएण पसायए ।
विज्झवेज्ज पंजलिउडो वएज्ज न पुणु त्ति य ॥ ४१ ॥

धम्मज्जियं च ववहारं बुद्धेहायरियं सया।
तमायरन्तो ववहारं गरहं नाभिगच्छई ॥ ४१ ॥

मणोगयं वक्कगयं जाणित्तायरियस्स उ।
तं परिगिज्झ वायाए कम्मुणा उववायए ॥ ४२ ॥

वित्ते अचोइए निच्चं खिप्पं हवइ सुचोइए।
जहोवइट्ठं सुकयं किच्चाइं कुव्वई सया ॥ ४३ ॥

नच्चा नमइ मेहावी लोए कित्ती से जायए।
हवई किच्चाणं सरणं भूयाणं जगई जहा ॥ ४४ ॥

पुज्जा जस्स पसीयन्ति संबुद्धा पुव्वसंथुया।
पसन्ना लाभइस्सन्ति विउलं अट्ठियं सुयं ॥ ४५ ॥

स पुज्जसत्थे सुविणीयसंसए मणोरुई चिट्ठइ कम्मसंपया।
तवोसमायारिसमाहिसंवुडे महज्जुई पंच वयाइं पालिया ॥ ४६ ॥

स देवगन्धव्वमणुस्सपूइए चइत्तु देहं मलपंकपुव्वयं।
सिद्धे वा हवइ सासए देवे वा अप्परए महिड्ढिए ॥४७॥ त्ति बेमि॥

॥ विणयसुयं समत्तं ॥ १ ॥

॥ परीसहज्झयणं द्वितीयं अध्ययनम् ॥

सुयं मे आउसं तेणं भगवया एवमक्खायं। इह खलु बावीसं परीसहा समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया, जे भिक्खू सोच्चा नच्चा जिच्चा अभिभूय भिक्खायरियाए परिव्वयन्तो पुट्ठो नो निण्हवेज्जा। कयरे ते खलु बावीसं परीसहा समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया, जे भिक्खू सोच्चा नच्चा जिच्चा अभिभूय भिक्खायरियाए परिव्वयन्तो पुट्ठो नो निण्हवेज्जा। इमे ते खलु बावीसं परीसहा समणेणं

भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया, जे भिक्खू सोच्चा नच्चा जिच्चा अभिभूय भिक्खायरियाए परिव्वयन्तो पुट्ठो नो निण्हवेज्जा। तं जहा॥ दिगिंछापरीसहे १ पिवासापरीसहे २ सीयपरीसहे ३ उसिणपरीसहे ४ दंसमसयपरीसहे ५ अचेलपरीसहे ६ अरइपरीसहे ७ इत्थीपरीसहे ८ चरियापरीसहे९ निसीहियापरीसहे १०सेज्जापरीसहे ११ अक्कोसपरीसहे१२ वहपरीसहे १३ जायणापरीसहे १४ अलाभपरीसहे १५ रोगपरीसहे १६ तणफासपरीसहे १७ जल्लपरीसहे १८ सक्कारपुरक्कारपरीसहे १९ पन्ना-परीसहे २० अन्नाणपरीसहे २१ दंसणपरीसहे २२॥

परीसहाणं पविभत्ती कासवेणं पवेइया।
तं भे उदाहरिस्सामि आणुपुव्विं सुणेह मे॥ १॥

१ दिगिंछापरिगए देहे तवस्सी भिक्खु थामवं।
न छिन्दे न छिन्दावए न पए न पयावए॥ २॥

कालीपव्वंगसंकासे किसे धमणिसंतए।
मायन्ने असणपाणस्स अदीणमणसो चरे॥ ३॥

२ तओ पुट्ठो पिवासाए दोगुंछी लज्जसंजए।
सीओदगं न सेविज्जा वियडस्सेसणं चरे॥ ४॥

छिन्नावाएसु पन्थेसु आउरे सुपिवासिए।
परिसुक्खमुहादीणे तं तितिक्खे परीसहं॥ ५॥

३ चरन्तं विरयं लूहं सीयं फुसइ एगया।
नाइवेलं मुणी गच्छे सोच्चाणं जिणसासणं॥ ६॥

न मे निवारणं अत्थि छवित्ताणं न विज्जई।
अहे तु अग्गिं सेवामि इइ भिक्खू न चिन्तए॥ ७॥

४ उसिणंपरियावेणं परिदाहेण तज्जिए।
घिंसु वा परियावेणं सायं नो परिदेवए॥ ८॥

उण्हाहितत्ते मेहावी सिणाणं नो वि पत्थए।
गायं नो परिसिंचेज्जा न वीएज्जा य अप्पयं॥ ९॥

५ पुट्ठो य दंसमसएहिं समरेव महामुणी।
नागो संगामसीसे वा सूरो अभिहणे परं॥ १०॥

न संतसे न वारेज्जा मणं पि न पओसए।
उवेहे न हणे पाणे भुंजन्ते मंससोणियं॥ ११॥

६ परिजुण्णेहि वत्थेहिं होक्खामि त्ति अचेलए।
अदुवा सचेले होक्खामि इइ भिक्खू न चिन्तए॥ १२॥

एगयाऽचेलए होइ सचेले आवि एगया।
एयं धम्महियं नच्चा नाणी नो परिदेवए॥ १३॥

७ गामाणुगामं रीयन्तं अणगारं अकिंचणं।
अरई अणुप्पवेसेज्जा तं तितिक्खे परीसहं॥ १४॥

अरइं पिट्ठओ किच्चा विरए आयरक्खिए।
धम्मारामे निरारम्भे उवसन्ते मुणी चरे॥ १५॥

८ संगो एस मणूसाणं जाओ लोगंमि इत्थिओ।
जस्स एया परिन्नाया सुकडं तस्स सामण्णं॥ १६॥

एयमादाय मेहावी पंकभूया उ इत्थिओ।
नो ताहिं विणिहम्मेज्जा चरेज्जत्तगवेसए॥ १७॥

९ एग एव चरे लाढे अभिभूय परीसहे।
गामे वा नगरे वावि निगमे वा रायहाणिए॥ १८॥

असमाणे चरे भिक्खू नेव कुज्जा परिग्गहं।
असंसत्ते गिहत्थेहिं अणिएओ परिव्वए॥ १९॥

१० सुसाणे सुन्नगारे वा रुक्खमूले व एगओ।
अकुक्कुओ निसीएज्जा न य वित्तासए परं॥ २०॥

तत्थ से चिट्ठमाणस्स उवसग्गाभिधारए।
संकाभीओ न गच्छेज्जा उट्ठित्ता अन्नमासणं॥ २१॥

११ उच्चावयाहिं सेज्जाहिं तवस्सी भिक्खु थामवं।
नाइवेलं विहम्मेज्जा पावदिट्ठी विहम्मई॥ २२॥

पइरिक्कुवस्सयं लद्धुं कल्लाणमदुव पावयं।
किमेगराइं करिस्सइ एवं तत्थऽहियासए॥ २३॥

१२ अक्कोसेज्जा परे भिक्खुं न तेसिं पडिसंजले।
सरिसो होइ बालाणं तम्हा भिक्खू न संजले॥ २४॥

सोच्चाणं फरुसा भासा दारुणा गामकण्टगा।
तुसिणीओ उवेहेज्जा न ताओ मणसीकरे॥ २५॥

१३ हओ न संजले भिक्खू मणं पि न पओसए।
तितिक्खं परमं नच्चा भिक्खू धम्मं समायरे॥ २६॥

समणं संजयं दन्तं हणेज्जा कोइ कत्थई ।
नत्थि जीवस्स नासु त्ति एवं पेहेज्ज संजए ॥ २७ ॥

१४ दुक्करं खलु भो निच्चं अणगारस्स भिक्खुणो ।
सव्वं से जाइयं होइ नत्थि किंचि अजाइयं ॥ २८ ॥

गोयरग्गपविट्ठस्स पाणी नो सुप्पसारए ।
सेओ अगारवासु त्ति इइ भिक्खू न चिन्तए ॥ २९ ॥

१५ परेसु घासमेसेज्जा भोयणे परिणिट्ठिए ।
लद्धे पिण्डे अलद्धे वा नाणुतप्पेज्ज पण्डिए ॥ ३० ॥

अज्जेवाहं न लब्भामि अवि लाभो सुए सिया ।
जो एवं पडिसंचिक्खे अलाभो तं न तज्जए ॥ ३१ ॥

१६ नच्चा उप्पइयं दुक्खं वेयणाए दुहट्टिए ।
अदीणो थावए पन्नं पुट्ठो तत्थहियासए ॥ ३२ ॥

तेइच्छं नाभिनन्देज्जा संचिक्खत्तगवेसए ।
एवं खु तस्स सामण्णं जं न कुज्जा न कारवे ॥ ३३ ॥

१७ अचेलगस्स लूहस्स संजयस्स तवस्सिणो ।
तणेसु सयमाणस्स हुज्जा गायविराहणा ॥ ३४ ॥

आयवस्स निवाएणं अउला हवइ वेयणा ।
एवं नच्चा न सेवन्ति तन्तुजं तणतज्जिया ॥ ३५ ॥

१८ किलिन्नगाए मेहावी पंकेण व रएण वा ।
घिंसु वा परियावेण सायं नो परिदेवए ॥ ३६ ॥

वेएज्ज निज्जरापेही आरियं धम्मऽणुत्तरं ।
जाव सरीरभेउ त्ति जल्लं काएण धारए ॥ ३७ ॥

१९ अभिवायणमब्भुट्ठाणं सामी कुज्जा निमन्तणं ।
जे ताइं पडिसेवन्ति न तेसिं पीहए मुणी ॥ ३८ ॥

अणुक्कसाई अप्पिच्छे अन्नाएसी अलोलुए ।
रसेसु नाणुगिज्झेज्जा नाणुतप्पेज्ज पन्नवं ॥ ३९ ॥

२० से नूणं मए पुव्वं कम्माणाणफला कडा ।
जेणाहं नाभिजाणामि पुट्ठो केणइ कण्हुई ॥ ४० ॥

अह पच्छा उइज्जन्ति कम्माणाणफला कडा ।
एवमस्सासि अप्पाणं नच्चा कम्मविवागयं ॥ ४१ ॥

११ निरट्ठगम्मि विरओ मेहुणाओ सुसंवुडो।
जो सक्खं नाभिजाणामि धम्मं कल्लाणपावगं ॥ ४२ ॥

तवोवहाणमादाय पडिमं पडिवज्जओ।
एवं पि विहरओ मे छउमं न नियट्टई ॥ ४३ ॥

१२ नत्थि नूणं परे लोए इड्ढी वावि तवस्सिणो।
अदुवा वंचिओ मि त्ति इइ भिक्खू न चिन्तए ॥ ४४ ॥

अभू जिणा अत्थि जिणा अदुवावि भविस्सई।
मुसं ते एवमाहंसु इइ भिक्खू न चिन्तए ॥ ४५ ॥

एए परीसहा सव्वे कासवेण निवेइया।
जे भिक्खू न विहम्मेज्जा पुट्ठो केणइ कण्हुई ॥ ४६ ॥ त्ति बेमि ॥

॥ परीसहज्झयणं समत्तं ॥ २ ॥

॥ चाउरंगिज्जं तृतीयं अध्ययनम् ॥

चत्तारि परमंगाणि दुल्लहाणीह जन्तुणो।
माणुसत्तं सुई सद्धा संजमंमि य वीरियं ॥ १ ॥

समावन्नाण संसारे नाणागोत्तासु जाइसु।
कम्मा नाणाविहा कट्टु पुढो विस्संभिया पया ॥ २ ॥

एगया देवलोएसु नरएसु वि एगया।
एगया आसुरं कायं आहाकम्मेहिं गच्छई ॥ ३ ॥

एगया खत्तिओ होइ तओ चण्डालबोक्कसो।
तओ कीडपयंगो य तओ कुन्थुपिवीलिया ॥ ४ ॥

एवमावट्टजोणीसु पाणिणो कम्मकिब्बिसा।
न निविज्जन्ति संसारे सव्वट्ठेसु व खत्तिया ॥ ५ ॥

कम्मसंगेहिं सम्मूढा दुक्खिया बहुवेयणा।
अमाणुसासु जोणीसु विणिहम्मन्ति पाणिणो ॥ ६ ॥

कम्माणं तु पहाणाए आणुपुव्वी कयाइ उ।
जीवा सोहिमणुप्पत्ता आययन्ति मणुस्सयं ॥ ७ ॥

माणुस्सं विग्गहं लद्धुं सुई धम्मस्स दुल्लहा।
जं सोच्चा पडिवज्जन्ति तवं खन्तिमहिंसयं॥ ८॥

आहच्च सवणं लद्धुं सद्धा परमदुल्लहा।
सोच्चा नेआउयं मग्गं बहवे परिभस्सई॥ ९॥

सुइं च लद्धुं सद्धं च वीरियं पुण दुल्लहं।
बहवे रोयमाणा वि नो य णं पडिवज्जए॥ १०॥

माणुसत्तंमि आयाओ जो धम्मं सोच्च सद्दहे।
तवस्सी वीरियं लद्धुं संवुडे निद्धुणे रयं॥ ११॥

सोही उज्जुयभूयस्स धम्मो सुद्धस्स चिट्ठई।
निव्वाणं परमं जाइ घयसित्ति व्व पावए॥ १२॥

विगिंच कम्मुणो हेउं जसं संचिणु खन्तिए।
सरीरं पाढवं हिच्चा उड्ढं पक्कमई दिसं॥ १३॥

विसालिसेहिं सीलेहिं जक्खा उत्तरउत्तरा।
महासुक्का व दिप्पन्ता मन्नन्ता अपुणच्चवं॥ १४॥

अप्पिया देवकामाणं कामरूवविउव्विणो।
उड्ढं कप्पेसु चिट्ठन्ति पुव्वा वाससया बहू॥ १५॥

तत्थ ठिच्चा जहाठाणं जक्खा आउक्खए चुया।
उवेन्ति माणुसं जोणिं से दसंगेऽभिजायई॥ १६॥

खेत्तं वत्थुं हिरण्णं च पसवो दासपोरुसं।
चत्तारि कामखन्धाणि तत्थ से उववज्जई॥ १७॥

मित्तवं नायवं होइ उच्चागोए य वण्णवं।
अप्पायंके महापन्ने अभिजाए जसोबले॥ १८॥

भोच्चा माणुस्सए भोए अप्पडिरूवे अहाउयं।
पुव्वि विसुद्धसद्धम्मे केवलं बोहि बुज्झिया॥ १९॥

चउरंगं दुल्लहं मत्ता संजमं पडिवज्जिया।
तवसा धुयकम्मंसे सिद्धे हवइ सासए॥ २०॥ त्ति बेमि॥

॥ चाउरंगिज्जं समत्तं॥ ३॥

॥ असंखयं चतुर्थं अध्ययनम् ॥

असंखयं जीविय मा पमायए जरोवणीयस्स हु नत्थि ताणं ।
एवं विजाणाहि जणे पमत्ते किण्णू विहिंसा अजया गहिन्ति ॥ १ ॥

जे पावकम्मेहि धणं मणूसा समाययन्ती अमइं गहाय ।
पहाय ते पासपयट्टिए नरे वेराणुबद्धा नरयं उवेन्ति ॥ २ ॥

तेणे जहा सन्धिमुहे गहीए सकम्मुणा किच्चइ पावकारी ।
एवं पया पेच्च इहं च लोए कडाण कम्माण न मोक्खु अत्थि ॥ ३ ॥

संसारमावन्न परस्स अट्ठा साहारणं जं च करेइ कम्मं ।
कम्मस्स ते तस्स उ वेयकाले न बन्धवा बन्धवयं उवेन्ति ॥ ४ ॥

वित्तेण ताणं न लभे पमत्ते इमंमि लोए अदुवा परत्था ।
दीवप्पणट्ठे व अणन्तमोहे नेयाउयं दट्ठुमदट्ठुमेव ॥ ५ ॥

सुत्तेसु यावी पडिबुद्धजीवी न वीससे पण्डिए आसुपन्ने ।
घोरा मुहुत्ता अबलं सरीरं भारुण्डपक्खी व चरप्पमत्ते ॥ ६ ॥

चरे पयाइं परिसंकमाणो जं किंचि पासं इह मण्णमाणो ।
लाभन्तरे जीविय वूहइत्ता पच्छा परिन्नाय मलावधंसी ॥ ७ ॥

छन्दंनिरोहेण उवेइ मोक्खं आसे जहा सिक्खियवम्मधारी ।
पुव्वाइं वासाइं चरप्पमत्ते तम्हा मुणी खिप्पमुवेइ मोक्खं ॥ ८ ॥

स पुव्वमेवं न लभेज्ज पच्छा एसोवमा सासयवाइयाणं ।
विसीयई सिढिले आउयंमि कालोवणीए सरीरस्स भेए ॥ ९ ॥

खिप्पं न सक्केइ विवेगमेउं तम्हा समुट्ठाय पहाय कामे ।
समिच्च लोयं समया महेसी आयाणुरक्खी चरमप्पमत्ते ॥ १० ॥

मुहुं मुहुं मोहगुणे जयन्तं अणेगरूवा समणं चरन्तं ।
फासा फुसन्ती असमंजसं च न तेसु भिक्खू मणसा पउस्से ॥ ११ ॥

मन्दा य फासा बहुलोहणिज्जा तहप्पगारेसु मणं न कुज्जा ।
रक्खिज्ज कोहं विणएज्ज माणं मायं न सेवे पयहेज्ज लोहं ॥ १२ ॥

जेऽसंखया तुच्छ परप्पवाई ते पिज्जदोसाणुगया परज्झा ।
एए अहम्मे त्ति दुगुंछमाणो कंखे गुणे जाव सरीरभेओ ॥ १३ ॥

त्ति बेमि ॥

॥ असंखयं समत्तं ॥ ४ ॥

॥ अकाममरणिज्जं पञ्चमं अध्ययनम् ॥

अण्णवंसि महोघंसि एगे तिण्णे दुरुत्तरं।
तत्थ एगे महापन्ने इमं पण्हमुदाहरे ॥ १ ॥

सन्तिमे य दुवे ठाणा अक्खाया मारणन्तिया।
अकाममरणं चेव सकाममरणं तहा ॥ २ ॥

बालाणं अकामं तु मरणं असइं भवे।
पण्डियाणं सकामं तु उक्कोसेण सइं भवे ॥ ३ ॥

तत्थिमं पढमं ठाणं महावीरेण देसियं।
कामगिद्धे जहा बाले भिसं कूराइं कुव्वई ॥ ४ ॥

जे गिद्धे कामभोगेसु एगे कूडाय गच्छई।
न मे दिट्ठे परे लोए चक्खुदिट्ठा इमा रई ॥ ५ ॥

हत्थागया इमे कामा कालिया जे अणागया।
को जाणइ परे लोए अत्थि वा नत्थि वा पुणो ॥ ६ ॥

जणेण सद्धिं होक्खामि इइ बाले पगब्भई।
कामभोगाणुराएणं केसं संपडिवज्जई ॥ ७ ॥

तओ से दण्डं समारभई तसेसु थावरेसु य।
अट्ठाए य अणट्ठाए भूयग्गामं विहिंसई ॥ ८ ॥

हिंसे बाले मुसावाई माइल्ले पिसुणे सढे।
भुंजमाणे सुरं मंसं सेयमेयं ति मन्नई ॥ ९ ॥

कायसा वयसा मत्ते वित्ते गिद्धे य इत्थिसु।
दुहओ मलं संचिणइ सिसुणागु व्व मट्टियं ॥ १० ॥

तओ पुट्ठो आयंकेणं गिलाणो परितप्पई।
पभीओ परलोगस्स कम्माणुप्पेहि अप्पणो ॥ ११ ॥

सुया मे नरए ठाणा असीलाणं च जा गई।
बालाणं कूरकम्माणं पगाढा जत्थ वेयणा ॥ १२ ॥

तत्थोववाइयं ठाणं जहा मेयमणुस्सुयं।
आहाकम्मेहिं गच्छन्तो सो पच्छा परितप्पई ॥ १३ ॥

जहा सागडिओ जाणं समं हिच्चा महापहं।
विसमं मग्गमोइण्णो अक्खे भग्गंमि सोयई ॥ १४ ॥

एवं धम्मं विउक्कम्म अहम्मं पडिवज्जिया।
बाले मच्चुमुहं पत्ते अक्खे भग्गे व सोयई ॥ १५ ॥

तओ से मरणन्तंमि बाले सन्तस्सई भया।
अकाममरणं मरई धुत्ते व कलिना जिए ॥ १६ ॥

एयं अकाममरणं बालाणं तु पवेइयं।
एत्तो सकाममरणं पण्डियाणं सुणेह मे ॥ १७ ॥

मरणं पि सपुण्णाणं जहा मेयमणुस्सुयं।
विप्पसण्णमणाघायं संजयाण वुसीमओ ॥ १८ ॥

न इमं सव्वेसु भिक्खूसु न इमं सव्वेसुऽगारिसु।
नाणासीला अगारत्था विसमसीला य भिक्खुणो ॥ १९ ॥

सन्ति एगेहिं भिक्खूहिं गारत्था संजमुत्तरा।
गारत्थेहि य सव्वेहिं साहवो संजमुत्तरा ॥ २० ॥

चीराजिणं नगिणिणं जडी संघाडिमुण्डिणं।
एयाणि वि न तायन्ति दुस्सीलं परियागयं ॥ २१ ॥

पिण्डोलए व दुस्सीले नरगाओ न मुच्चई।
भिक्खाए वा गिहत्थे वा सुव्वए कम्मई दिवं ॥ २२ ॥

अगारिसामाइयंगाणि सड्ढी काएण फासए।
पोसहं दुहओ पक्खं एगरायं न हावए ॥ २३ ॥

एवं सिक्खासमावन्ने गिहिवासे वि सुव्वए।
मुच्चई छविपव्वाओ गच्छे जक्खसलोगयं ॥ २४ ॥

अह जे संवुडे भिक्खू दोण्हं अन्नयरे सिया।
सव्वदुक्खप्पहीणे वा देवे वावि महिड्ढिए ॥ २५ ॥

उत्तराइं विमोहाइं जुइमन्ताणुपुव्वसो।
समाइण्णाइं जक्खेहिं आवासाइं जसंसिणो ॥ २६ ॥

दीहाउया इड्ढिमन्ता समिद्धा कामरूविणो।
अहुणोववन्नसंकासा भुज्जो अच्चिमलिप्पभा ॥ २७ ॥

ताणि ठाणाणि गच्छन्ति सिक्खित्ता संजमं तवं।
भिक्खाए वा गिहत्थे वा जे सन्ति परिनिव्वुडा ॥ २८ ॥

तेसिं सोच्चा सपुज्जाणं संजयाण वुसीमओ।
न संतसन्ति मरणन्ते सीलवन्ता बहुस्सुया ॥ २९ ॥

तुलिया विसेसमादाय दयाधम्मस्स खन्तिए।
विप्पसीएज्ज मेहावी तहाभूएण अप्पणा ॥ ३० ॥

तओ काले अभिप्पेए सड्ढी तालिसमन्तिए।
विणएज्ज लोमहरिसं भेयं देहस्स कंखए ॥ ३१ ॥

अह कालंमि संपत्ते आघायाय समुस्सयं।
सकाममरणं मरई तिण्हमन्नयरं मुणी ॥ ३२ ॥ त्ति बेमि ॥

॥ अकाममरणिज्जं समत्तं ॥ ५ ॥

॥ खुड्डागनियण्ठिज्जं षष्ठं अध्ययनम् ॥

जावन्तऽविज्जापुरिसा सव्वे ते दुक्खसंभवा।
लुप्पन्ति बहुसो मूढा संसारंमि अणन्तए ॥ १ ॥

समिक्ख पंडिए तम्हा पासजाई पहे बहू।
अप्पणा सच्चमेसेज्जा मेत्तिं भूएसु कप्पए ॥ २ ॥

माया पिया ण्हुसा भाया भज्जा पुत्ता य ओरसा।
नालं ते मम ताणाय लुप्पन्तस्स सकम्मुणा ॥ ३ ॥

एयमट्ठं सपेहाए पासे समियदंसणे।
छिन्द गेद्धिं सिणेहं च न कंखे पुव्वसंथुयं ॥ ४ ॥

गवासं मणिकुंडलं पसवो दासपोरुसं।
सव्वमेयं चइत्ताणं कामरूवी भविस्ससि ॥ ५ ॥

[थावरं जंगमं चेव धणं धण्णं उवक्खरं।
पच्चमाणस्स कम्मेहिं नालं दुक्खाउ मोयणे
अज्झत्थं सव्वओ सव्वं दिस्स पाणे पियायए।
न हणे पाणिणो पाणे भयवेराओ उवरए ॥ ६ ॥

आयाणं नरयं दिस्स नायएज्ज तणामवि।
दोगुंछी अप्पणो पाए दिन्नं भुंजेज्ज भोयणं ॥ ७ ॥

इहमेगे उ मन्नन्ति अप्पच्चक्खाय पावगं।
आयारियं विदित्ताणं सव्वदुक्खाण मुच्चई ॥ ८ ॥

भणन्ता अकरेन्ता य बन्धमोक्खपइण्णिणो।
वायाविरियमेत्तेण समासासेन्ति अप्पयं ॥ ९ ॥

न चित्ता तायए भासा कुओ विज्जाणुसासणं ।
विसन्ना पावकम्मेहिं बाला पंडियमाणिणो ॥ १० ॥

जे केइ सरीरे सत्ता वण्णे रूवे य सव्वसो ।
मणसा कायवक्केणं सव्वे ते दुक्खसंभवा ॥ ११ ॥

आवन्ना दीहमद्धाणं संसारंमि अणंतए ।
तम्हा सव्वदिसं पस्सं अप्पमत्तो परिव्वए ॥ १२ ॥

बहिया उड्ढमादाय नावकंखे कयाइ वि ।
पुव्वकम्मखयट्ठाए इमं देहं समुद्धरे ॥ १३ ॥

विविच्च कम्मुणो हेउं कालकंखी परिव्वए ।
मायं पिंडस्स पाणस्स कडं लद्धूण भक्खए ॥ १४ ॥

सन्निहिं च न कुव्वेज्जा लेवमायाए संजए ।
पक्खी पत्तं समादाय निरवेक्खो परिव्वए ॥ १५ ॥

एसणासमिए लज्जू गामे अणियओ चरे ।
अप्पमत्तो पमत्तेहिं पिंडवायं गवेसए ॥ १६ ॥

एवं से उदाहु अणुत्तरनाणी अणुत्तरदंसी अणुत्तरनाणदंसणधरे
अरहा नायपुत्ते भगवं वेसालिए वियाहिए ॥ त्ति बेमि ॥

॥ खुड्डागनियंठिज्जं समत्तं ॥ ६ ॥

॥ एलयं सत्तमं अध्ययनम् ॥

जहाएसं समुद्दिस्स कोइ पोसेज्ज एलयं ।
ओयणं जवसं देज्जा पोसेज्जा वि सयंगणे ॥ १ ॥

तओ से पुट्ठे परिवूढे जायमेए महोदरे ।
पीणिए विउले देहे आएसं परिकंखए ॥ २ ॥

जाव न एइ आएसे ताव जीवइ से दुही ।
अह पत्तंमि आएसे सीसं छेत्तूण भुज्जई ॥ ३ ॥

जहा खलु से उरब्भे आएसाए समीहिए ।
एवं बाले अहम्मिट्ठे ईहई नरयाउयं ॥ ४ ॥

हिंसे बाले मुसावाई अद्धाणंसि विलोवए।
अन्नऽदत्तहरे तेणे माई कन्नुहरे सढे ॥ ५ ॥

इत्थीविसयगिद्धे य महारंभपरिग्गहे।
भुंजमाणे सुरं मंसं परिवूढे परंदमे ॥ ६ ॥

अयकक्करभोई य तुंडिल्ले चियलोहिए।
आउयं नरए कंखे जहाएसं व एलए ॥ ७ ॥

आसणं सयणं जाणं वित्तं कामे य भुंजिया।
दुस्साहडं धणं हिच्चा बहुं संचिणिया रयं ॥ ८ ॥

तओ कम्मगुरू जन्तू पच्चुप्पन्नपरायणे।
अए व्व आगयाएसे मरणन्तंमि सोयई ॥ ९ ॥

तओ आउपरिक्खीणे चुया देहा विहिंसगा।
आसुरीयं दिसं बाला गच्छन्ति अवसा तमं ॥ १० ॥

जहा कागिणिए हेउं सहस्सं हारए नरो।
अपच्छं अम्बगं भोच्चा राया रज्जं तु हारए ॥ ११ ॥

एवं माणुस्सगा कामा देवकामाण अन्तिए।
सहस्सगुणिया भुज्जो आउं कामा य दिव्विया ॥ १२ ॥

अणेगवासानउया जा सा पन्नवओ ठिई।
जाणि जीयन्ति दुम्मेहा ऊणे वाससयाउए ॥ १३ ॥

जहा य तिन्नि वणिया मूलं घेत्तूण निग्गया।
एगो ऽत्थ लहई लाहं एगो मूलेण आगओ ॥ १४ ॥

एगो मूलं पि हारित्ता आगओ तत्थ वाणिओ।
ववहारे उवमा एसा एवं धम्मे वियाणह ॥ १५ ॥

माणुसत्तं भवे मूलं लाभो देवगई भवे।
मूलच्छेएण जीवाणं नरगतिरिक्खत्तणं धुवं ॥ १६ ॥

दुहओ गई बालस्स आवई वहमूलिया।
देवत्तं माणुसत्तं च जं जिए लोलयासढे ॥ १७ ॥

तओ जिए सई होइ दुविहं दोग्गइं गए।
दुल्लहा तस्स उम्मग्गा अद्धाए सुइरादवि ॥ १८ ॥

एवं जियं सपेहाए तुलिया बालं च पंडियं।
मूलियं ते पवेसन्ति माणुसिं जोणिमेन्ति जे ॥ १९ ॥

वेमायाहिं सिक्खाहिं जे नरा गिहिसुव्वया।
उवेन्ति माणुसं जोणिं कम्मसच्चा हु पाणिणो॥ २०॥

जेसिं तु विउला सिक्खा मूलियं ते अइच्छिया।
सीलवन्ता सविसेसा अदीणा जन्ति देवयं॥ २१॥

एवमद्दीणवं भिक्खुं अगारिं च वियाणिया।
कहण्णु जिच्चमेलिक्खं जिच्चमाणे न संविदे॥ २२॥

जहा कुसग्गे उदगं समुद्देण समं मिणे।
एवं माणुस्सगा कामा देवकामाण अन्तिए॥ २३॥

कुसग्गमेत्ता इमे कामा सन्निरुद्धंमि आउए।
कस्स हेउं पुराकाउं जोगक्खेमं न संविदे॥ २४॥

इह कामाणियट्टस्स अत्तट्ठे अवरज्झई।
सोच्चा नेयाउयं मग्गं जं भुज्जो परिभस्सई॥ २५॥

इह कामाणियट्टस्स अत्तट्ठे नावरज्झई।
पूइदेहनिरोहेणं भवे देवि त्ति मे सुयं॥ २६॥

इड्ढी जुई जसो वण्णो आउं सुहमणुत्तरं।
भुज्जो जत्थ मणुस्सेसु तत्थ से उववज्जई॥ २७॥

बालस्स पस्स बालत्तं अहम्मं पडिवाज्जिया।
चिच्चा धम्मं अहम्मिट्ठे नरए उववज्जई॥ २८॥

धीरस्स पस्स धीरत्तं सव्वधम्माणुवत्तिणो।
चिच्चा अधम्मं धम्मिट्ठे देवेसु उववज्जई॥ २९॥

तुलियाण बालभावं अबालं चेव पण्डिए।
चइऊण बालभावं अबालं सेवए मुणि॥ ३०॥ त्ति बेमि॥

॥ एलयज्झयणं समत्तं॥ ७॥

॥ काविलीयं अष्टमं अध्ययनम् ॥

अधुवे असासयंमी संसारंमि दुक्खपउराए।
किं नाम होज्ज तं कम्मयं जेणाहं दोग्गइं न गच्छेज्जा ॥ १ ॥

विजहित्तु पुव्वसंजोयं न सिणेहं कहिंचि कुव्वेज्जा।
असिणेह सिणेहकरेहिं दोसपओसेहिं मुच्चए भिक्खू ॥ २ ॥

तो नाणदंसणसमग्गो हियनिस्सेसाय सव्वजीवाणं।
तेसिं विमोक्खणट्ठाए भासई मुणिवरो विगयमोहो ॥ ३ ॥

सव्वं गन्थं कलहं च विप्पजहे तहाविहं भिक्खू।
सव्वेसु कामजाएसु पासमाणो न लिप्पई ताई ॥ ४ ॥

भोगामिसदोसविसण्णे हियनिस्सेयसबुद्धिवोच्चत्थे।
बाले य मन्दिए मूढे बज्झई मच्छिया व खेलंमि ॥ ५ ॥

दुपरिच्चया इमे कामा नो सुजहा अधीरपुरिसेहिं।
अह सन्ति सुव्वया साहू जे तरन्ति अतरं वणिया वा ॥ ६ ॥

समणा मु एगे वयमाणा पाणवहं मिया अयाणन्ता।
मन्दा निरयं गच्छन्ति बाला पावियाहिं दिट्ठीहिं ॥ ७ ॥

न हु पाणवहं अणुजाणे मुच्चेज्ज कयाइ सव्वदुक्खाणं।
एवारिएहिं अक्खायं जेहिं इमो साहुधम्मो पन्नत्तो ॥ ८ ॥

पाणे य नाइवाएज्जा से समिए त्ति वुच्चई ताई।
तओ से पावयं कम्मं निज्जाइ उदगं व थलाओ ॥ ९ ॥

जगनिस्सिएहिं भूएहिं तसनामेहिं थावरेहिं च।
नो तेसिमारभे दंडं मणसा वयस कायसा चेव ॥ १० ॥

सुद्धेसणाओ नच्चाणं तत्थ ठवेज्ज भिक्खू अप्पाणं।
जायाए घासमेसेज्जा रसगिद्धे न सिया भिक्खाए ॥ ११ ॥

पन्ताणि चेव सेवेज्जा सीयपिंडं पुराणकुम्मासं।
अदु वक्कसं पुलागं वा जवणट्ठाए निसेवए मंथुं ॥ १२ ॥

जे लक्खणं च सुविणं च अंगविज्जं च जे पउंजन्ति।
न हु ते समणा वुच्चन्ति एवं आयरिएहिं अक्खायं ॥ १३ ॥

इहजीवियं अणियमेत्ता पब्भट्ठा समाहिजोएहिं।
ते कामभोगरसगिद्धा उववज्जन्ति आसुरे काए ॥ १४ ॥

तत्तो वि य उवट्टित्ता संसारं बहुं अणुपरियडन्ति।
बहुकम्मलेवलित्ताणं बोही होइ सुदुल्लहा तेसिं॥ १५॥

कसिणं पि जो इमं लोयं पडिपुण्णं दलेज्ज इक्कस्स।
तेणावि से न संतुस्से इइ दुप्पूरए इमे आया॥ १६॥

जहा लाहो तहा लोहो लाहा लोही पवड्ढई।
दोमासकयं कज्जं कोडीए वि न निट्ठियं॥ १७॥

नो रक्खसीसु गिज्झेज्जा गंडवच्छासुऽणेगचित्तासु।
जाओ पुरिसं पलोभित्ता खल्लन्ति जहा व दासेहिं॥ १८॥

नारीसु नोवगिज्झेज्जा इत्थी विप्पजहे अणगारे।
धम्मं च पेसलं नच्चा तत्थ ठवेज्ज भिक्खू अप्पाणं॥ १९॥

इइ एस धम्मे अक्खाए कविलेणं च विसुद्धपन्नेणं।
तरिहिन्ति जे उ काहिन्ति तेहिं आराहिया दुवे लोग॥ २०॥ त्ति बेमि॥

॥ काविलीयं समत्तं॥ ८॥

॥ नमिपव्वज्जा नवमं अध्ययनम्॥

चइऊण देवलोगाओ उववन्नो माणुसंमि लोगंमि।
उवसन्तमोहणिज्जो सरई पोराणियं जाइं॥ १॥

जाइं सरित्तु भयवं सहसंबुद्धो अणुत्तरे धम्मे।
पुत्तं ठवेत्तु रज्जे अभिणिक्खमई नमी राया॥ २॥

से देवलोगसरिसे अन्तेउरवरगओ वरे भोए।
भुंजित्तु नमी राया बुद्धो भोगे परिच्चयई॥ ३॥

मिहिलं सपुरजणवयं बलमोरोहं च परियणं सव्वं।
चिच्चा अभिनिक्खन्तो एगन्तमहिट्ठिओ भयवं॥ ४॥

कोलाहलगब्भूयं आसी मिहिलाए पव्वयन्तंमि।
तइया रायरिसिंमि नमिंमि अभिणिक्खमन्तंमि॥ ५॥

अब्भुट्ठियं रायरिसिं पव्वज्जाठाणमुत्तमं॥
सक्को माहणरूवेण इमं वयणमब्बवी॥ ६॥

किण्णु भो अज्ज मिहिला कोलाहलगसंकुला।
सुव्वन्ति दारुणा सद्दा पासाएसु गिहेसु य ॥ ७ ॥

एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमब्बवी ॥ ८ ॥

मिहिलाए चेइए वच्छे सीयच्छाए मणोरमे।
पत्तपुप्फफलोवेए बहूणं बहुगुणे सया ॥ ९ ॥

वाएण हीरमाणंमि चेइयंमि मणोरमे।
दुहिया असरणा अत्ता एए कन्दन्ति भो खगा ॥ १० ॥

एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ।
तओ नमिं रायरिसिं देविन्दो इणमब्बवी ॥ ११ ॥

एस अग्गी य वाऊ य एयं डज्झइ मन्दिरं।
भयवं अन्तेउरं तेणं कीस णं नावपेक्खह ॥ १२ ॥

एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमब्बवी ॥ १३ ॥

सुहं वसामो जीवामो जेसिं मो नत्थि किंचण।
मिहिलाए डज्झमाणीए न मे डज्झइ किंचण ॥ १४ ॥

चत्तपुत्तकलत्तस्स निव्वावारस्स भिक्खुणो।
पियं न विज्जई किंचि अप्पियं पि न विज्जई ॥ १५ ॥

बहुं खु मुणिणो भद्दं अणगारस्स भिक्खुणो।
सव्वओ विप्पमुक्कस्स एगन्तमणुपस्सओ ॥ १६ ॥

एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ।
तओ नमिं रायरिसिं देविन्दो इणमब्बवी ॥ १७ ॥

पागारं कारइत्ताणं गोपुरट्टालगाणि य।
उस्सूलगसयग्घीओ तओ गच्छसि खत्तिया ॥ १८ ॥

एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमब्बवी ॥ १९ ॥

सद्धं नगरं किच्चा तवसंवरमग्गलं।
खन्तिं निउणपागारं तिगुत्तं दुप्पधंसयं ॥ २० ॥

धणुं परक्कमं किच्चा जीवं च इरियं सया।
धिइं च केयणं किच्चा सच्चेण पलिमन्थए ॥ २१ ॥

तवनारायजुत्तेण भेत्तूणं कम्मकंचुयं।
मुणी विगयसंगामो भवाओ परिमुच्चए ॥ २२ ॥

एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ।
तओ नमिं रायरिसिं देविन्दो इणमब्बवी ॥ २३ ॥

पासाए कारइत्ताणं वद्धमाणगिहाणि य।
बालग्गपोइयाओ य तओ गच्छसि खत्तिया ॥ २४ ॥

एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमब्बवी ॥ २५ ॥

संसयं खलु सो कुणई जो मग्गे कुणई घरं।
जत्थेव गन्तुमिच्छेज्जा तत्थ कुव्वेज्ज सासयं ॥ २६ ॥

एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ।
तओ नमिं रायरिसिं देविन्दो इणमब्बवी ॥ २७ ॥

आमोसे लोमहारे य गंठिभेए य तक्करे।
नगरस्स खेमं काऊणं तओ गच्छसि खत्तिया ॥ २८ ॥

एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमब्बवी ॥ २९ ॥

असइं तु मणुस्सेहिं मिच्छा दण्डो पजुंजई।
अकारिणोऽत्थ बज्झन्ति मुच्चई कारओ जणो ॥ ३० ॥

एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ।
तओ नमिं रायरिसिं देविन्दो इणमब्बवी ॥ ३१ ॥

जे केइ पत्थिवा तुज्झं नानमन्ति नराहिवा।
वसे ते ठावइत्ताणं तओ गच्छसि खत्तिया ॥ ३२ ॥

एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमब्बवी ॥ ३३ ॥

जो सहस्सं सहस्साणं संगामे दुज्जए जिणे।
एगं जिणेज्ज अप्पाणं एस से परमो जओ ॥ ३४ ॥

अप्पाणमेव जुज्झाहि किं ते जुज्झेण बज्झओ।
अप्पणामेवमप्पाणं जइत्ता सुहमेहए ॥ ३५ ॥

पंचिन्दियाणि कोहं मांणं मायं तहेव लोहं च।
दुज्जयं चेव अप्पाणं सव्वं अप्पे जिए जियं ॥ ३६ ॥

एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ।
तओ नमिं रायरिसिं देविन्दो इणमब्बवी ॥ ३७ ॥

जइत्ता विउले जन्ने भोइत्ता समणमाहणे।
दच्चा भोच्चा य जिट्ठा य तओ गच्छसि खत्तिया ॥ ३८ ॥

एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमब्बवी ॥ ३९ ॥

जो सहस्सं सहस्साणं मासे मासे गवं दए।
तस्सावि संजमो सेओ अदिन्तस्स वि किंचण ॥ ४० ॥

एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ।
तओ नमिं रायरिसिं देविन्दो इणमब्बवी ॥ ४१ ॥

घोरासमं चइत्ताणं अन्नं पत्थेसि आसमं।
इहेव पोसहरओ भवाहि मणुयाहिवा ॥ ४२ ॥

एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमब्बवी ॥ ४३ ॥

मासे मासे तु जो बालो कुसग्गेण तु भुंजए।
न सो सुक्खायधम्मस्स कलं अग्घइ सोलसिं ॥ ४४ ॥

एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ।
तओ नमिं रायरिसिं देविन्दो इणमब्बवी ॥ ४५ ॥

हिरण्णं सुवण्णं मणिमुत्तं कंसं दूसं च वाहणं।
कोसं वड्ढावइत्ताणं तओ गच्छसि खत्तिया ॥ ४६ ॥

एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमब्बवी ॥ ४७ ॥

सुवण्णरुप्पस्स उ पव्वया भवे सिया हु केलाससमा असंखया।
नरस्स लुद्धस्स न तेहिं किंचि इच्छा उ आगाससमा अणन्तिया ॥ ४८ ॥

पुढवी साली जवा चेव हिरण्णं पसुभिस्सह।
पडिपुण्णं नालमेगस्स इइ विज्जा तवं चरे ॥ ४९ ॥

एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ।
तओ नमिं रायरिसिं देविन्दो इणमब्बवी ॥ ५० ॥

अच्छेरयमब्भुदए भोए चयसि पत्थिवा।
असन्ते कामे पत्थेसि संकप्पेण विहम्मसि ॥ ५१ ॥

एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमब्बवी ॥ ५१ ॥

सल्लं कामा विसं कामा कामा आसीविसोवमा।
कामे य पत्थेमाणा अकामा जन्ति दोग्गइं ॥ ५३ ॥

अहे वयन्ति कोहेणं माणेणं अहमा गई।
माया गईपडिग्घाओ लोभाओ दुहओ मयं ॥ ५४ ॥

अवउज्झिऊण माहणरूवं विउव्विऊण इन्दत्तं।
वन्दइ अभित्थुणन्तो इमाहि महुराहिं वग्गूहिं ॥ ५५ ॥

अहो ते निज्जिओ कोहो अहो माणो पराजिओ।
अहो निरक्किया माया अहो लोभो वसीकओ ॥ ५६ ॥

अहो ते अज्जवं साहु अहो ते साहु मद्दवं।
अहो ते उत्तमा खन्ती अहो ते मुत्ति उत्तमा ॥ ५७ ॥

इहं सि उत्तमो भन्ते पच्छा होहिसि उत्तमो।
लोगुत्तमुत्तमं ठाणं सिद्धिं गच्छसि नीरओ ॥ ५८ ॥

एवं अभित्थुणन्तो रायरिसिं उत्तमाए सद्धाए।
पयाहिणं करेन्तो पुणो पुणो वन्दई सक्को ॥ ५९ ॥

तो वन्दिऊण पाए चक्कंकुसलक्खणे मुणिवरस्स।
आगासेणुप्पइओ ललियचलकुंडलतिरीडी ॥ ६० ॥

नमी नमेइ अप्पाणं सक्खं सक्केण चोइओ।
चइऊण गेहं वइदेही सामण्णे पज्जुवट्ठिओ ॥ ६१ ॥

एवं करेन्ति संबुद्धा पंडिया पवियक्खणा।
विणियट्टन्ति भोगेसु जहा से नमी रायरिसि ॥ ६२ ॥ त्ति बेमि ॥

॥ नमिपव्वज्जा समत्ता ॥ ९ ॥

।। दुमपत्तयं दशमं अध्ययनम् ।।

दुमपत्तए पण्डुयए जहा निवडइ राइगणाण अच्चए।
एवं मणुयाण जीवियं समयं गोयम मा पमायए ॥ १ ॥

कुसग्गे जह ओसबिन्दुए थोवं चिट्ठइ लम्बमाणए।
एवं मणुयाण जीवियं समयं गोयम मा पमायए ॥ २ ॥

इइ इत्तरियम्मि आउए जीवियए बहुपच्चवायए।
विहुणाहि रयं पुरे कडं समयं गोयम मा पमायए ॥ ३ ॥

दुलहे खलु माणुसे भवे चिरकालेण वि सव्वपाणिणं।
गाढा य विवाग कम्मुणो समयं गोयम मा पमायए ॥ ४ ॥

पुढविक्कायमइगओ उक्कोसं जीवो उ संवसे।
कालं संखाईयं समयं गोयम मा पमायए ॥ ५ ॥

आउक्कायमइगओ उक्कोसं जीवो उ संवसे।
कालं संखाईयं समयं गोयम मा पमायए ॥ ६ ॥

तेउक्कायमइगओ उक्कोसं जीवो उ संवसे।
कालं संखाईयं समयं गोयम मा पमायए ॥ ७ ॥

वाउक्कायमइगओ उक्कोसं जीवो उ संवसे।
कालं संखाईयं समयं गोयम मा पमायए ॥ ८ ॥

वणस्सइकायमइगओ उक्कोसं जीवो उ संवसे।
कालमणन्तदुरन्तयं समयं गोयम मा पमायए ॥ ९ ॥

बेइन्दियकायमइगओ उक्कोसं जीवो उ संवसे।
कालं संखिज्जसन्नियं समयं गोयम मा पमायए ॥ १० ॥

तेइन्दियकायमइगओ उक्कोसं जीवो उ संवसे।
कालं संखिज्जसन्नियं समयं गोयम मा पमायए ॥ ११ ॥

चउरिन्दियकायमइगओ उक्कोसं जीवो उ संवसे।
कालं संखिज्जसन्नियं समयं गोयम मा पमायए ॥ १२ ॥

पंचिन्दियकायमइगओ उक्कोसं जीवो उ संवसे ॥
सत्तट्ठभवग्गहणे समयं गोयम मा पमायए ॥ १३ ॥

देवे नेरइए यमइगओ उक्कोसं जीवो उ संवसे।
इक्केक्कभवग्गहणे समयं गोयम मा पमायए ॥ १४ ॥

एवं भवसंसारे संसरइ सुहासुहेहि कम्मेहिं ।
जीवो पमायबहुलो समयं गोयम मा पमायए ॥ १५ ॥

लद्धूण वि माणुसत्तणं आरिअत्तं पुणरावि दुल्लहं ।
बहवे दसुया मिलक्खुया समयं गोयम मा पमायए ॥ १६ ॥

लद्धूण वि आरियत्तणं अहीणपंचिन्दियया हु दुल्लहा ।
विगलिन्दियया हु दीसई समयं गोयम मा पमायए ॥ १७ ॥

अहीणपंचिन्दियत्तं पि से लहे उत्तमधम्मसुई हु दुल्लहा ।
कुतित्थिनिसेवए जणे समयं गोयम मा पमायए ॥ १८ ॥

लद्धूण वि उत्तमं सुइं सद्दहणा पुणरावि दुल्लहा ।
मिच्छत्तनिसेवए जणे समयं गोयम मा पमायए ॥ १९ ॥

धम्मं पि हु सद्दहन्तया दुल्लहया काएण फासया ।
इह कामगुणेहि मुच्छिया समयं गोयम मा पमायए ॥ २० ॥

परिजूरइ ते सरीरयं केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
से सोयबले य हायई समयं गोयम मा पमायए ॥ २१ ॥

परिजूरइ ते सरीरयं केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
से चक्खुबले य हायई समयं गोयम मा पमायए ॥ २२ ॥

परिजूरइ ते सरीरयं केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
से घाणबले य हायई समयं गोयम मा पमायए ॥ २३ ॥

परिजूरइ ते सरीरयं केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
से जिब्भबल य हायई समयं गोमय मा पमायए ॥ २४ ॥

परिजूरइ ते सरीरयं केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
से फासबले य हायई समयं गोमय मा पमायए ॥ २५ ॥

परिजूरइ ते सरीरयं केसा पण्डुरया हवन्ति ते ।
से सव्वबले य हायई समयं गोयम मा पमायए ॥ २६ ॥

अरई गण्डं विसूइया आयंका विविहा फुसन्ति ते ।
विहडइ विद्धंसइ ते सरीरयं समयं गोयम मा पमायए ॥ २७ ॥

वोछिन्द सिणेहमप्पणो कुमुयं सारइयं व पाणियं ।
से सव्वसिणेहवज्जिए समयं गोयम मा पमायए ॥ २८ ॥

चिच्चाण धणं च भारियं पव्वइओ हि सि अणगारियं ।
मा वन्तं पुणो वि आइए समयं गोयम मा पमायए ॥ २९ ॥

अवउज्झिय मित्तबन्धवं विउलं चेव धणोहसंचयं ।
मा तं बिइयं गवेसए समयं गोयम मा पमायए ॥ ३० ॥

न हु जिणे अज्ज दिस्सई बहुमए दिस्सई मग्गदेसिए ।
संपइ नेयाउए पहे समयं गोयम मा पमायए ॥ ३१ ॥

अवसोहिय कण्टगापहं ओइण्णो सि पहं महालयं ।
गच्छसि मग्गं विसोहिया समयं गोयम मा पमायए ॥ ३२ ॥

अबले जह भारवाहए मा मग्गे विसमे वगाहिया ।
पच्छा पच्छाणुतावए समयं गोयम मा पमायए ॥ ३३ ॥

तिण्णो हु सि अण्णवं महं किं पुण चिट्ठसि तीरमागओ ।
अभितुर पारं गमित्तए समयं गोयम मा पमायए ॥ ३४ ॥

अकलेवरसेणिमुस्सिया सिद्धिं गोयम लोय गच्छसि ।
खेमं च सिवं अणुत्तरं समयं गोयम मा पमायए ॥ ३५ ॥

बुद्धे परिनिव्वुडे चरे गामगए नगरे व संजए ।
सन्तीमग्गं च बूहए समयं गोयम मा पमायए ॥ ३६ ॥

बुद्धस्स निसम्म भासियं सुकहियमट्ठपओवसोहियं ।
रागं दोसं च छिन्दिया सिद्धिगइं गए गोयमे ॥ ३७ ॥ त्ति बेमि ॥

॥ द्रुमपत्तयं समत्तं ॥ १० ॥

॥ बहुस्सुयपुज्जं एकादशं अध्ययनम् ॥

संजोगा विप्पमुक्कस्स अणगारस्स भिक्खुणो ।
आयारं पाउकरिस्सामि आणुपुव्विं सुणेह मे ॥ १ ॥

जे यावि होइ निव्विज्जे थद्धे लुद्धे अणिग्गहे ।
अभिक्खणं उल्लवई अविणीए अबहुस्सुए ॥ २ ॥

अह पंचहिं ठाणेहिं जेहिं सिक्खा न लब्भई।
थम्भा कोहा पमाएणं रोगेणालस्सएण य ॥ ३ ॥

अह अट्ठहिं ठाणेहिं सिक्खासीले त्ति वुच्चई।
अहस्सिरे सया दन्ते न य मम्ममुदाहरे ॥ ४ ॥

नासीले न विसीले न सिया अइलोलुए।
अकोहणे सच्चरए सिक्खासीले त्ति वुच्चई ॥ ५ ॥

अह चोद्दसहिं ठाणेहिं वट्टमाणे उ संजए।
अविणीए वुच्चई सो उ निव्वाणं च न गच्छइ ॥ ६ ॥

अभिक्खणं कोही हवइ पबन्धं च पकुव्वई।
मेत्तिज्जमाणो वमइ सुयं लद्धूण मज्जई ॥ ७ ॥

अवि पावपरिक्खेवी अवि मित्तेसु कुप्पई।
सुप्पियस्सावि मित्तस्स रहे भासइ पावगं ॥ ८ ॥

पइण्णवाई दुहिले थद्धे लुद्धे अणिग्गहे।
असंविभागी अचियत्ते अविणीए त्ति वुच्चई ॥ ९ ॥

अह पन्नरसहिं ठाणेहिं सुविणीए त्ति वुच्चई।
नीयावत्ती अचवले अमाई अकुऊहले ॥ १० ॥

अप्पं च अहिक्खिवई पबन्धं च न कुव्वई।
मेत्तिज्जमाणो भयई सुयं लद्धुं न मज्जई ॥ ११ ॥

न य पावपरिक्खेवी न य मित्तेसु कुप्पई।
अप्पियस्सावि मित्तस्स रहे कल्लाण भासई ॥ १२ ॥

कलहडमरवज्जिए बुद्धे अभिजाइए।
हिरिमं पडिसंलीणे सुविणीए त्ति वुच्चई ॥ १३ ॥

वसे गुरुकुले निच्चं जोगवं उवहाणवं।
पियंकरे पियंवाई से सिक्खं लद्धुमरिहई ॥ १४ ॥

जहा संखम्मि पयं निहियं दुहओ वि विरायइ।
एवं बहुस्सुए भिक्खू धम्मो कित्ती तहा सुयं ॥ १५ ॥

जहा से कम्बोयाणं आइण्णे कन्थए सिया।
आसे जवेण पवरे एवं हवइ बहुस्सुए ॥ १६ ॥

जहाइण्णसमारूढे सूरे दढपरक्कमे।
उभओ नन्दिघोसेणं एवं हवइ बहुस्सुए ॥ १७ ॥

जहा करेणुपरिकिण्णे कुंजरे सट्ठिहायणे ।
बलवन्ते अप्पडिहए एवं हवइ बहुस्सुए ॥ १८ ॥

जहा से तिक्खसिंगे जायखन्धे विरायई ।
वसहे जूहाहिवई एवं हवइ बहुस्सुए ॥ १९ ॥

जहा से तिक्खदाढे उद्दग्गे दुप्पहंसए ।
सीहे मियाण पवरे एवं हवइ बहुस्सुए ॥ २० ॥

जहा से वासुदेवे संखचक्कगयाधरे ।
अप्पडिहयबले जोहे एवं हवइ बहुस्सुए ॥ २१ ॥

जहा से चाउरन्ते चक्कवट्टी महिड्ढिए ।
चोद्दसरयणाहिवई एवं हवइ बहुस्सुए ॥ २२ ॥

जहा से सहस्सक्खे वज्जपाणी पुरन्दरे ।
सक्के देवाहिवई एवं हवइ बहुस्सुए ॥ २३ ॥

जहा से तिमिरविद्धंसे उच्चिट्ठन्ते दिवायरे ।
जलन्ते इव तेएण एवं हवइ बहुस्सुए ॥ २४ ॥

जहा से उडुवई चन्दे नक्खत्तपरिवारिए ।
पडिपुण्णे पुण्णमासीए एवं हवइ बहुस्सुए ॥ २५ ॥

जहा से सामाइयाणं कोट्ठागारे सुरक्खिए ।
नाणाधन्नपडिपुण्णे एवं हवइ बहुस्सुए ॥ २६ ॥

जहा सा दुमाण पवरा जम्बू नाम सुदंसणा ।
अणाढियस्स देवस्स एवं हवइ बहुस्सुए ॥ २७ ॥

जहा सा नईण पवरा सलिला सागरंगमा ।
सीया नीलवन्तपवहा एवं हवइ बहुस्सुए ॥ २८ ॥

जहा से नगाण पवरे सुमहं मन्दरे गिरी ।
नाणोसहिपज्जलिए एवं हवइ बहुस्सुए ॥ २९ ॥
जहा से सयंभूरमणे उदही अक्खओदए ।
नाणारयणपडिपुण्णे एवं हवइ बहुस्सुए ॥ ३० ॥

समुद्दगम्भीरसमा दुरासया
अचक्किया केणइ दुप्पहंसया ।
सुयस्स पुण्णा विउलस्स ताइणो
खावन्तु कम्म गइमुत्तमं गया ॥ ३१ ॥

तम्हा सुयमहिट्ठिज्जा उत्तमट्ठगवेसए।
जेणऽप्पाणं परं चेव सिद्धिं संपाउणेज्जासि ॥ ३२ ॥ त्ति बेमि ॥

॥ बहुस्सुयपुज्जं समत्तं ॥ ११ ॥

॥ हरिएसिज्जं द्वादशं अध्ययनम् ॥

सोवागकुलसंभूओ गुणुत्तरधरो मुणी।
हरिएसबलो नाम आसि भिक्खू जिइन्दिओ ॥ १ ॥

इरिएसणभासाए उच्चारसमिईसु य।
जओ आयाणनिक्खेवे संजओ सुसमाहिओ ॥ २ ॥

मणगुत्तो वयगुत्तो कायगुत्तो जिइन्दिओ।
भिक्खट्ठा बम्भइज्जम्मि जन्नवाडं उवट्ठिओ ॥ ३ ॥

तं पासिऊणमेज्जन्तं तवेण परिसोसियं।
पन्तोवहिउवगरणं उवहसन्ति अणारिया ॥ ४ ॥

जाईमयपडिबद्धा हिंसगा अजिइन्दिया।
अबम्भचारिणो बाला इमं वयणमब्बवी ॥ ५ ॥

कयरे आगच्छइ दित्तरूवे काले विगराले फोक्कनासे।
ओमचेलए पंसुपिसायभूए संकरदूसं परिवरिय कण्ठे ॥ ६ ॥

को रे तुवं इय अदंसणिज्जे काए व आसाइहमागओ सि।
ओमचेलगा पंसुपिसायभूया गच्छ क्खलाहि किमिहं ठिओ सि ॥ ७ ॥

जक्खे तहिं तिन्दुयरुक्खवासी अणुकम्पओ तस्स महामुणिस्स।
पच्छायइत्ता नियगं सरीरं इमाइं वयणाइमुदाहरित्था ॥ ८ ॥

समणो अहं संजओ बम्भयारी विरओ धणपयणपरिग्गहाओ।
परप्पवित्तस्स उ भिक्खकाले अन्नस्स अट्ठा इहमागओ मि ॥ ९ ॥

वियरिज्जइ खज्जइ भुज्जई य अन्नं पभूयं भवयाणमेयं।
जाणेह मे जायणजीविणु त्ति सेसावसेसं लभऊ तवस्सी ॥ १० ॥

उवक्खडं भोयण माहणाणं अत्तट्ठियं सिद्धमिहेगपक्खं।
न ऊ वयं एरिसमन्नपाणं दाहामु तुज्झं किमिहं ठिओ सि ॥ ११ ॥

थलेसु बीयाइं ववन्ति कासगा तहेव निन्नेसु य आससाए।
एयाह सद्धाए दलाह मज्झं आराहए पुण्णमिणं खु खेत्तं ॥ १२ ॥

खेत्ताणि अम्हं विइयाणि लोए जहिं पकिण्णा विरुहन्ति पुण्णा।
जे माहणा जाइविज्जोववेया ताइं तु खेत्ताइं सुपेसलाइं ॥ १३ ॥

कोहो य माणो य वहो य जेसिं मोसं अदत्तं च परिग्गहं च।
ते माहणा जाइविज्जाविहूणा ताइं तु खेत्ताइं सुपावयाइं ॥ १४ ॥

तुब्भेत्थ भो भारधरा गिराणं अट्ठं न जाणेह अहिज्ज वेए।
उच्चावयाइं मुणिणो चरन्ति ताइं तु खेत्ताइं सुपेसलाइं ॥ १५ ॥

अज्झावयाणं पडिकूलभासी पभाससे किं तु सगासि अम्हं।
अवि एयं विणस्सउ अन्नपाणं न य णं दाहामु तुमं नियण्ठा ॥ १६ ॥

समिईहि मज्झं सुसमाहियस्स गुत्तीहि गुत्तस्स जिइन्दियस्स।
जइ मे न दाहित्थ अहेसणिज्जं किमज्ज जन्नाण लहित्थ लाहं ॥ १७ ॥

के एत्थ खत्ता उवजोइया वा अज्झावया वा सह खण्डिएहिं।
एयं दण्डेण फलेण हन्ता कण्ठम्मि घेत्तूण खलेज्ज जो णं ॥ १८ ॥

अज्झावयाणं वयणं सुणेत्ता उद्धाइया तत्थ बहू कुमारा।
दण्डेहि वित्तेहि कसेहि चेव समागया तं इसिं तालयन्ति ॥ १९ ॥

रन्नो तहिं कोसलियस्स धूया भद्द-त्ति नामेण अणिन्दियंगी।
तं पासिया संजय हम्ममाणं कुद्धे कुमारे परिनिव्ववेइ ॥ २० ॥

देवाभिओगेण निओइएणं दिन्ना मु रन्ना मणसा न झाया।
नरिन्ददेविन्दऽभिवन्दिएणं जेणम्हि वन्ता इसिणा स एसो ॥ २१ ॥

एसो हु सो उग्गतवो महप्पा जिइन्दिओ संजओ बम्भयारी।
जो मे तया नेच्छइ दिज्जमाणिं पिउणा सयं कोसलिएण रन्ना ॥ २२ ॥

महाजसो एस महाणुभागो घोरव्वओ घोरपरक्कमो य।
मा एयं हीलह अहीलणिज्जं मा सव्वे तेएण भे निद्दहेज्जा ॥ २३ ॥

एयाइं तीसे वयणाइं सोच्चा पत्तीइ भद्दाइ सुहासियाइं।
इसिस्स वेयावडियट्ठयाए जक्खा कुमारे विणिवारयन्ति ॥ २४ ॥

ते घोररूवा ठिय अन्तलिक्खेऽसुरा तहिं तं जणं तालयन्ति।
ते भिन्नदेहे रुहिरं वमन्ते पासित्तु भद्दा इणमाहु भुज्जो ॥ २५ ॥

गिरिं नहेहिं खणह अयं दन्तेहिं खायह।
जायतेयं पाएहि हणह जे भिक्खुं अवमन्नह ॥ २६ ॥

आसीविसो उग्गतवो महेसी घोरव्वओ घोरपरक्कमो य।
अगणिं व पक्खन्द पयंगसेणा जे भिक्खुयं भत्तकाले वहेह ॥ २७ ॥

सीसेण एयं सरणं उवेह समागया सव्वजणेण तुब्भे।
जइ इच्छह जीवियं वा धणं वा लोगं पि एसो कुविओ डहेज्जा ॥ २८ ॥

अवहेडिय पिट्ठिसउत्तमंगे पसारियाबाहुअकम्मचेट्ठे।
निज्झेरियच्छे रुहिरं वमन्ते उड्ढंमुहे निग्गयजीहनेत्ते ॥ २९ ॥

ते पासिया खण्डिय कट्ठभूए विमणो विसण्णो अह माहणो सो।
इसिं पसाएइ सभारियाओ हीलं च निन्दं च खमाह भन्ते ॥ ३० ॥

बालेहि मूढेहि अयाणएहिं जं हीलिया तस्स खमाह भन्ते।
महप्पसाया इसिणो हवन्ति न हु मुणी कोवपरा हवन्ति ॥ ३१ ॥

पुव्विं च इण्हिं च अणागयं च मणप्पदोसो न मे अत्थि कोइ।
जक्खा हु वेयावडियं करेन्ति तम्हा हु एए निहया कुमारा ॥ ३२ ॥

अत्थं च धम्मं च वियाणमाणा तुब्भे न वि कुप्पह भूइपन्ना।
तुब्भं तु पाए सरणं उवेमो समागया सव्वजणेण अम्हे ॥ ३३ ॥

अच्चेमु ते महाभाग न ते किंचि न अच्चिमो।
भुंजाहि सालिमं कूरं नाणावंजणसंजुयं ॥ ३४ ॥

इमं च मे अत्थि पभूयमन्नं तं भुंजसू अम्ह अणुग्गहट्ठा।
बाढं ति पडिच्छइ भत्तपाणं मासस्स ऊ पारणए महप्पा ॥ ३५ ॥

तहियं गन्धोदयपुप्फवासं दिव्वा तहिं वसुहारा य वुट्ठा।
पहयाओ दुन्दुहीओ सुरेहिं आगासे अहो दाणं च घुट्ठं ॥ ३६ ॥

सक्खं खु दीसइ तवोविसेसो न दीसई जाइविसेस कोई।
सोवागपुत्तं हरिएससाहुं जस्सेरिसा इड्ढि महाणुभागा ॥ ३७ ॥

किं माहणा जोइसमारभन्ता उदएण सोहिं बहिया विमग्गह।
जं मग्गहा बाहिरियं विसोहिं न तं सुदिट्ठं कुसला वयन्ति ॥ ३८ ॥

कुसं च जूवं तणकट्ठमग्गिं सायं च पायं उदगं फुसन्ता।
पाणाइं भूयाइं विहेडयन्ता भुज्जो वि मन्दा पगरेह पावं ॥ ३९ ॥

कहं चरे भिक्खु वयं जयामो पावाइं कम्माइं पणोल्लयामो।
अक्खाहि णे संजय जक्खपूइया कहं सुजट्ठं कुसला वयन्ति ॥ ४० ॥

छज्जीवकाए असमारभन्ता मोसं अदत्तं च असेवमाणा।
परिग्गहं इत्थिओ माणमायं एयं परिन्नाय चरन्ति दन्ता ॥ ४१ ॥

सुसंवुडा पंचहिं संवरेहिं इह जीवियं अणवकंखमाणा।
वोसट्ठकाए सुइचत्तदेहा महाजयं जयई जन्नसिट्ठं ॥ ४१ ॥

के ते जोई के व ते जोइठाणे का ते सुया किं व ते कारिसंगं।
एहा य ते कयरा सन्ति भिक्खू कयरेण होमेण हुणासि जोइं ॥ ४२ ॥

तवो जोई जीवो जोइठाणं जोगा सुया सरीरं कारिसंगं।
कम्मं एहा संजमजोगसन्ती होमं हुणामि इसिणं पसत्थं ॥ ४३ ॥

के ते हरए के य ते सन्तितित्थे कहिं सिणाओ व रयं जहासि।
आइक्ख णे संजय जक्खपूइया इच्छामो नाउं भवओ सगासे ॥ ४४ ॥

धम्मे हरए बम्भे सन्तितित्थे अणाविले अत्तपसन्नलेसे।
जहिं सिणाओ विमलो विसुद्धो सुसीइभूओ पजहामि दोसं ॥ ४५ ॥

एयं सिणाणं कुसलेहि दिट्ठं महासिणाणं इसिणं पसत्थं।
जहिं सिणाया विमला विसुद्धा महारिसी उत्तमं ठाण पत्ता ॥ ४७ ॥

त्ति बेमि ॥

॥ हरिएसिज्जं समत्तं ॥ १२ ॥

॥ चित्तसम्भूइज्जं त्रयोदशं अध्ययनम् ॥

जाईपराइओ खलु कासि नियाणं तु हत्थिणपुरम्मि।
चुलणीए बम्भदत्तो उववन्नो पउमगुम्माओ ॥ १ ॥

कम्पिल्ले संभूओ चित्तो पुण जाओ पुरिमतालम्मि।
सेट्ठिकुलम्मि विसाले धम्मं सोऊण पव्वइओ ॥ २ ॥

कम्पिल्लम्मि य नयरे समागया दो वि चित्तसम्भूया।
सुहदुक्खफलविवागं कहेन्ति ते एक्कमेक्कस्स ॥ ३ ॥

चक्कवट्टी महिड्ढीओ बम्भदत्तो महायसो।
भायरं बहुमाणेणं इमं वयणमब्बवी ॥ ४ ॥

आसिमो भायरो दो वि अन्नमन्नवसाणुगा।
अन्नमन्नमणूरत्ता अन्नमन्नहिएसिणो ॥ ५ ॥

दासा दसण्णे आसी मिया कालिंजरे नगे।
हंसा मयंगतीरे सोवागा कासिभूमिए ॥ ६ ॥

देवा य देवलोगम्मि आसि अम्हे महिड्ढिया ।
इमा नो छट्टिया जाई अन्नमन्नेण जा विणा ॥ ७ ॥

कम्मा नियाणप्पगडा तुमे राय विचिन्तिया ।
तेसिं फलविवागेण विप्पओगमुवागया ॥ ८ ॥

सच्चसोयप्पगडा कम्मा मए पुरा कडा ।
ते अज्ज परिभुंजामो किं नु चित्ते वि से तहा ॥ ९ ॥

सव्वं सुचिण्णं सफलं नराणं कडाण कम्माण न मोक्ख अत्थि ।
अत्थेहि कामेहि य उत्तमेहिं आया ममं पुण्णफलोववेए ॥ १० ॥

जाणाहि संभूय महाणुभागं महिड्ढियं पुण्णफलोववेयं ।
चित्तं पि जाणाहि तहेव रायं इड्ढी जुई तस्स वि य प्पभूया ॥ ११ ॥

महत्थरूवा वयणप्पभूया गाहाणुगीया नरसंघमज्झे ।
जं भिक्खुणो सीलगुणोववेया इहं जयन्ते समणो मि जाओ ॥ १२ ॥

उच्चोयए महु कक्के य बम्भे पवेइया आवसहा य रम्मा ।
इमं गिहं चित्तधणप्पभूयं पसाहि पंचालगुणोववेयं ॥ १३ ॥

नट्टेहि गीएहि य वाइएहिं नारीजणाहिं परियारयन्तो ।
भुंजाहि भोगाइं इमाइं भिक्खू मम रोयई पव्वज्जा हु दुक्खं ॥ १४ ॥

तं पुव्वनेहेण कयाणुरागं नराहिवं कामगुणेसु गिद्धं ।
धम्मस्सिओ तस्स हियाणुपेही चित्तो इमं वयणमुदाहरित्था ॥ १५ ॥

सव्वं विलवियं गीयं सव्वं नट्टं विडम्बियं ।
सव्वे आभरणा भारा सव्वे कामा दुहावहा ॥ १६ ॥

बालाभिरामेसु दुहावहेसु न तं सुहं कामगुणेसु रायं ।
विरत्तकामाण तवोहणाणं जं भिक्खुणं सीलगुणे रयाणं ॥ १७ ॥

नरिंद जाई अहमा नराणं सोवागजाई दुहओ गयाणं ।
जहिं वयं सव्वजणस्स वेस्सा वसीय सोवागनिवेसणेसु ॥ १८ ॥

तीसे य जाईइ उ पावियाए वुच्छामु सोवागनिवेसणेसु ।
सव्वस्स लोगस्स दुगंछणिज्जा इहं तु कम्माइं पुरे कडाइं ॥ १९ ॥

सो दाणि सिं राय महाणुभागो महिड्ढिओ पुण्णफलोववेओ ।
चइत्तु भोगाइं असासयाइं आयाणहेउं अभिणिक्खमाहि ॥ २० ॥

इह जीविए राय असासयम्मि धणियं तु पुण्णाइं अकुव्वमाणो ।
से सोयई मच्चुमुहोवणीए धम्मं अकाऊण परंसि लोए ॥ २१ ॥

जहेह सीहो व मियं गहाय मच्चू नरं नेइ हु अन्तकाले ।
न तस्स माया व पिया व भाया कालम्मि तम्मंसहरा भवंति ॥ २१ ॥

न तस्स दुक्खं विभयन्ति नाइओ न मित्तवग्गा न सुया न बन्धवा ।
एक्को सयं पच्चणुहोइ दुक्खं कत्तारमेव अणुजाइ कम्मं ॥ २२ ॥

चेच्चा दुपयं च चउप्पयं च खेत्तं गिहं धणधन्नं च सव्वं ।
सकम्मबीओ अवसो पयाइ परं भवं सुंदर पावगं वा ॥ २४ ॥

तं इक्कगं तुच्छसरीरगं से चिईगयं डज्झिय पावगेणं ।
भज्जा य पुत्ता वि य नायओ य दायारमन्नं अणुसंकमन्ति ॥ २५ ॥

उवणिज्जई जीवियमप्पमायं वण्णं जरा हरइ नरस्स राय ।
पंचालराया वयणं सुणाहि मा कासि कम्माइं महालयाइं ॥ २६ ॥

अहं पि जाणामि जहेह साहू जं मे तुमं साहसि वक्कमेयं ।
भोगा इमे संगकरा हवन्ति जे दुज्जया अज्जो अम्हारिसेहिं ॥ २७ ॥

हत्थिणपुरम्मि चित्ता दट्ठूणं नरवइं महिड्ढियं ।
कामभोगेसु गिद्धेणं नियाणमसुहं कडं ॥ २८ ॥

तस्स मे अपडिकन्तस्स इमं एयारिसं फलं ।
जाणमाणो वि जं धम्मं कामभोगेसु मुच्छिओ ॥ २९ ॥

नागो जहा पंकजलावसन्नो दट्ठुं थलं नाभिसमेइ तीरं ।
एवं वयं कामगुणेसु गिद्धा न भिक्खुणो मग्गमणुव्वयामो ॥ ३० ॥

अच्चेइ कालो तूरन्ति राइओ न यावि भोगा पुरिसाण निच्चा ।
उविच्च भोगा पुरिसं चयन्ति दुमं जहा खीणफलं व पक्खी ॥ ३१ ॥

जइ तं सि भोगे चइउं असत्तो अज्जाइं कम्माइं करेहि रायं ।
धम्मे ठिओ सव्वपयाणुकम्पी तो होहिसि देवो इओ विउव्वी ॥ ३२ ॥

न तुज्झ भोगे चइऊण बुद्धी गिद्धो सि आरम्भपरिग्गहेसु ।
मोहं कओ एत्तिउ विप्पलावो गच्छामि रायं आमन्तिओ सि ॥ ३३ ॥

पंचालराया वि य बम्भदत्तो साहुस्स तस्स वयणं अकाउं ।
अणुत्तरे भुंजिय कामभोगे अणुत्तरे सो नरए पविट्ठो ॥ ३४ ॥

चित्तो वि कामेहि विरत्तकामो उदग्गचारित्ततवो महेसी ।
अणुत्तरं संजम पालइत्ता अणुत्तरं सिद्धिगइं गओ ॥ ३५ ॥ त्ति बेमि ॥

॥ चित्तसंभूइज्जं समत्तं ॥ १३ ॥

॥ उसुयारिज्जं चतुर्दशं अध्ययनम् ॥

देवा भवित्ताण पुरे भवम्मी केई चुया एगविमाणवासी ।
पुरे पुराणे उसुयारनामे खाए समिद्धे सुरलोगरम्मे ॥ १ ॥

सकम्मसेसेण पुराकएणं कुलेसुदग्गेसु य ते पसूया ।
निव्विण्णसंसारभया जहाय जिणिन्दमग्गं सरणं पवन्ना ॥ २ ॥

पुमत्तमागम्म कुमार दो वी पुरोहिओ तस्स जसा य पत्ती ।
विसालकित्ती य तहोसुयारो रायत्थ देवी कमलावई य ॥ ३ ॥

जाईजरामच्चुभयाभिभूया बहिंविहाराभिनिविट्ठचित्ता ।
संसारचक्कस्स विमोक्खणट्ठा दट्ठूण ते कामगुणे विरत्ता ॥ ४ ॥

पियपुत्तगा दोन्नि वि माहणस्स सकम्मसीलस्स पुरोहियस्स ।
सरित्तु पोराणिय तत्थ जाइं तहा सुचिण्णं तवसंजमं च ॥ ५ ॥

ते कामभोगेसु असज्जमाणा माणुस्सएसुं जे यावि दिव्वा ।
मोक्खाभिकंखी अभिजायसड्ढा तायं उवागम्म इमं उदाहु ॥ ६ ॥

असासयं दट्ठु इमं विहारं बहुअन्तरायं न य दीहमाउं ।
तम्हा गिहंसि न रइं लहामो आमन्तयामो चरिस्सामु मोणं ॥ ७ ॥

अह तायगो तत्थ मुणीण तेसिं तवस्स वाघायकरं वयासी ।
इमं वयं वेयविओ वयन्ति जहा न होई असुयाण लोगो ॥ ८ ॥

अहिज्ज वेए परिविस्स विप्पे पुत्ते परिट्ठप्प गिहंसि जाया ।
भोच्चाण भोए सह इत्थियाहिं आरण्णगा होह मुणी पसत्था ॥ ९ ॥

सोयग्गिणा आयगुणिन्धणेणं मोहाणिला पज्जलणाहिएणं ।
संतत्तभावं परितप्पमाणं लालप्पमाणं बहुहा बहुं च ॥ १० ॥

पुरोहियं तं कमसोऽणुणन्तं निमंतयन्तं च सुए धणेणं ।
जहक्कमं कामगुणेहि चेव कुमारगा ते पसमिक्ख वक्कं ॥ ११ ॥

वेया अहीया न भवन्ति ताणं भुत्ता दिया निन्ति तमं तमेणं ।
जाया य पुत्ता न हवन्ति ताणं को णाम ते अणुमन्नेज्ज एयं ॥ १२ ॥

खणमेत्तसोक्खा बहुकालदुक्खा पगामदुक्खा अणिगामसोक्खा ।
संसारमोक्खस्स विपक्खभूया खाणी अणत्थाण उ कामभोगा ॥ १३ ॥

परिव्वयन्ते अणियत्तकामे अहो य राओ परितप्पमाणे ।
अन्नप्पमत्ते धणमेसमाणे पप्पोति मच्चुं पुरिसे जरं च ॥ १४ ॥

इमं च मे अत्थि इमं च नत्थि इमं च मे किच्च इमं अकिच्चं ।
तं एवमेवं लालप्पमाणं हरा हरंति त्ति कहं पमाए ॥ १५ ॥

धणं पभूयं सह इत्थियाहिं सयणा तहा कामगुणा पगामा ।
तवं कए तप्पइ जस्स लोगो तं सव्व साहीणमिहेव तुब्भं ॥ १६ ॥

धणेण किं धम्मधुराहिगारे सयणेण वा कामगुणेहि चेव ।
समणा भविस्सामु गुणोहधारी बहिंविहारा अभिगम्म भिक्खं ॥ १७ ॥

जहा य अग्गी अरणी असन्तो खीरे घयं तेल्लमहा तिलेसु ।
एमेव ताया सरीरंसि सत्ता संमुच्छई नासइ नावचिट्ठे ॥ १८ ॥

नो इन्दियग्गेज्झ अमुत्तभावा अमुत्तभावा वि य होइ निच्चो ।
अज्झत्थहेउं नियस्स बन्धो संसारहेउं च वयन्ति बन्धं ॥ १९ ॥

जहा वयं धम्ममजाणमाणा पावं पुरा कम्ममकासि मोहा ।
ओरुज्झमाणा परिरक्खियन्ता तं नेव भुज्जो वि समायरामो ॥ २० ॥

अब्भाहयंमि लोगंमि सव्वओ परिवारिए ।
अमोहाहिं पडन्तीहिं गिहंसि न रइं लभे ॥ २१ ॥

केण अब्भाहओ लोगो केण वा परिवारिओ ।
का वा अमोहा वुत्ता जाया चिंतावरो हुमि ॥ २२ ॥

मच्चुणाऽब्भाहओ लोगो जराए परिवारिओ ।
अमोहा रयणी वुत्ता एवं ताय वियाणह ॥ २३ ॥

जा जा वच्चइ रयणी न सा पडिनियत्तई ।
अहम्मं कुणमाणस्स अफला जन्ति राइओ ॥ २४ ॥

जा जा वच्चइ रयणी न सा पडिनियत्तई ।
धम्मं च कुणमाणस्स सफला जन्ति राइओ ॥ २५ ॥

एगओ संवसित्ताणं दुहओ सम्मत्तसंजुया ।
पच्छा जाया गमिस्सामो भिक्खमाणा कुले कुले ॥ २६ ॥

जस्सत्थि मच्चुणा सक्खं जस्स चऽत्थि पलायणं ।
जो जाणे न मरिस्सामि सो हु कंखे सुए सिया ॥ २७ ॥

अज्जेव धम्मं पडिवज्जयामो जहिं पवन्ना न पुणब्भवामो ।
अणागयं नेव य अत्थि किंचि सद्धाखमं णे विणइत्तु रागं ॥ २८ ॥

पहीणपुत्तस्स हु नत्थि वासो वासिट्ठि भिक्खायरियाइ कालो ।
साहाहि रुक्खो लहए समाहिं छिन्नाहि साहाहि तमेव खाणुं ॥ २९ ॥

पंखाविहूणो व्व जहेव पक्खी भिच्चविहूणो व्व रणे नरिन्दो ।
विवन्नसारो वणिओ व्व पोए पहीणपुत्तो मि तहा अहं पि ॥ ३० ॥

सुसंभिया कामगुणा इमे ते संपिण्डिया अग्गरसप्पभूया ।
भुंजामु ता कामगुणे पगामं पच्छा गमिस्सामु पहाणमग्गं ॥ ३१ ॥

भुत्ता रसा भोइ जहाइ णे वओ न जीवियट्ठा पजहामि भोए ।
लाभं अलाभं च सुहं च दुक्खं संचिक्खमाणो चरिस्सामि मोणं ॥ ३२ ॥

मा हू तुमं सोयरियाण सम्भरे जुण्णो व हंसो पडिसोत्तगामी ।
भुंजाहि भोगाइं मए समाणं दुक्खं खु भिक्खायरियाविहारो ॥ ३३ ॥

जहा य भोई तणुयं भुयंगो निम्मोयणिं हिच्च पलेइ मुत्तो ।
एमेए जाया पयहन्ति भोए ते हं कहं नाणुगमिस्समेक्को ॥ ३४ ॥

छिन्दित्तु जालं अबलं व रोहिया मच्छा जहा कामगुणे पहाय ।
धोरेयसीला तवसा उदारा धीरा हु भिक्खायरियं चरन्ति ॥ ३५ ॥

नहेव कुंचा समइक्कमन्ता तयाणि जालाणि दलित्तु हंसा ।
पलेन्ति पुत्ता य पई य मज्झं ते हं कहं नाणुगमिस्समेक्का ॥ ३६ ॥

पुरोहियं तं ससुयं सदारं सोच्चाऽभिनिक्खम्म पहाय भोए ।
कुडुम्बसारं विउलुत्तमं च रायं अभिक्खं समुवाय देवी ॥ ३७ ॥

वन्तासी पुरिसो रायं न सो होइ पसंसिओ ।
माहणेण परिच्चत्तं धणं आदाउमिच्छसि ॥ ३८ ॥

सव्वं जगं जइ तुहं सव्वं वावि धणं भवे ।
सव्वं पि ते अपज्जत्तं नेव ताणाय तं तव ॥ ३९ ॥

मरिहिसि रायं जया तया वा मणोरमे कामगुणे विहाय ।
एक्को हु धम्मो नरदेव ताणं न विज्जई अन्नमिहेह किंचि ॥ ४० ॥

नाहं रमे पक्खिणि पंजरे वा संताणछिन्ना चरिस्सामि मोणं ।
अकिंचणा उज्जुकडा निरामिसा परिग्गहारम्भनियत्तदोसा ॥ ४१ ॥

दवग्गिणा जहा रण्णे डज्झमाणेसु जन्तुसु ।
अन्ने सत्ता पमोयन्ति रागद्दोसवसं गया ॥ ४२ ॥

एवमेव वयं मूढा कामभोगेसु मुच्छिया ।
डज्झमाणं न बुज्झामो रागद्दोसग्गिणा जगं ॥ ४३ ॥

भोगे भोच्चा वमित्ता य लहुभूयविहारिणो ।
आमोयमाणा गच्छन्ति दिया कामकमा इव ॥ ४४ ॥

इमे य बद्धा फन्दन्ति मम हत्थऽज्जमागया ।
वयं च सत्ता कामेसु भविस्सामो जहा इमे ॥ ४५ ॥

सामिसं कुललं दिस्स बज्झमाणं निरामिसं ।
आमिसं सव्वमुज्झित्ता विहरिस्सामो निरामिसा ॥ ४६ ॥

गिद्धोवमा उ नच्चाणं कामे संसारवड्ढणे ।
उरगो सुवण्णपासे व्व संकमाणो तणुं चरे ॥ ४७ ॥

नागो व्व बन्धणं छित्ता अप्पणो वसहिं वए ।
एयं पच्छं महारायं उसुयारि त्ति मे सुयं ॥ ४८ ॥

चइत्ता विउलं रज्जं कामभोगे य दुच्चए ।
निव्विसया निरामिसा निन्नेहा निप्परिग्गहा ॥ ४९ ॥

सम्मं धम्मं वियाणित्ता चेच्चा कामगुणे वरे ।
तवं पगिज्झऽहक्खायं घोरं घोरपरक्कम्मा ॥ ५० ॥

एवं ते कमसो बुद्धा सव्वे धम्मपरायणा ।
जम्ममच्चुभउव्विग्गा दुक्खस्सन्तगवेसिणो ॥ ५१ ॥

सासणे विगयमोहाणं पुव्विं भावणभाविया ।
अचिरेणेव कालेण दुक्खस्सन्तमुवागया ॥ ५२ ॥

राया सह देवीए माहणो य पुरोहिओ ।
माहणी दारगा चेव सव्वे ते परिनिव्वुड ॥ ५३ ॥ त्ति बेमि ॥

॥ उसुयारिज्जं समत्तं ॥ १४ ॥

॥ सभिक्खू पञ्चदशं अध्ययनम् ॥

मोणं चरिस्सामि समिच्च धम्मं सहिए उज्जुकडे नियाणछिन्ने ।
संथवं जहिज्ज अकामकामे अन्नायएसी परिव्वए स भिक्खू ॥ १ ॥

राओवरयं चरेज्ज लाढे विरए वेयवियाऽऽयरक्खिए ।
पन्ने अभिभूय सव्वदंसी जे कम्हि चि न मुच्छिए स भिक्खू ॥ २ ॥

अक्कोसवहं विइत्तु धीरे मुणी चरे लाढे निच्चमायगुत्ते ।
अव्वग्गमणे असंपहिट्ठे जे कसिणं अहियासए स भिक्खू ॥ ३ ॥

पन्तं सयणासणं भइत्ता सीउण्हं विविहं च दंसमसगं ।
अव्वग्गमणे असंपहिट्ठे जे कसिणं अहियासए स भिक्खू ॥ ४ ॥

नो सक्कईमिच्छई न पूयं नो वि य वन्दणगं कुओ पसंसं ।
से संजए सुव्वए तवस्सी सहिए आयगवेसए स भिक्खू ॥ ५ ॥

जेण पुण जहाइ जीवियं मोहं वा कसिणं नियच्छई ।
नरनारिं पजहे सया तवस्सी न य कोऊहलं उवेइ स भिक्खू ॥ ६ ॥

छिन्नं सरं भोमं अन्तलिक्खं सुमिणं लक्खणदण्डवत्थुविज्जं ।
अंगवियारं सरस्स विजयं जे विज्जाहिं न जीवइ स भिक्खू ॥ ७ ॥

मन्तं मूलं विविहं वेज्जचिन्तं वमणविरेयणधूमणेत्तसिणाणं ।
आउरे सरणं तिगिच्छियं च तं परिन्नाय परिव्वए स भिक्खू ॥ ८ ॥

खत्तियगणउग्गरायपुत्ता माहणभोइय विविहा य सिप्पिणो ।
नो तेसिं वयइ सिलोगपूयं तं परिन्नाय परिव्वए स भिक्खू ॥ ९ ॥

गिहिणो जे पव्वइएण दिट्ठा अप्पवइएण व संथुया हविज्जा ।
तेसिं इहलोइयफलट्ठा जो संथवं न करेइ स भिक्खू ॥ १० ॥

सयणासणपाणभोयणं विविहं खाइमसाइमं परेसिं ।
अदए पडिसेहिए नियण्ठे जे तत्थ न पउस्सई स भिक्खू ॥ ११ ॥

जं किं चि आहारपाणजायं विविहं खाइमसाइमं परेसिं लद्धुं ।
जो तं तिविहेण नाणुकम्पे मणवयकायसुसंवुडे स भिक्खू ॥ १२ ॥

आयामगं चेव जवोदणं च सीयं सोवीरजवोदगं च ।
नो हीलए पिण्डं नीरसं तु पन्तकुलाइं परिव्वए स भिक्खू ॥ १३ ॥

सद्दा विविहा भवन्ति लोए दिव्वा माणुस्सगा तिरिच्छा ।
भीमा भयभेरवा उराला जो सोच्चा न विहिज्जई स भिक्खू ॥ १४ ॥

वादं विविहं समिच्च लोए सहिए खेयाणुगए य कोवियप्पा ।
पन्ने अभिभूय सव्वदंसी उवसन्ते अविहेडए स भिक्खू ॥ १५ ॥

असिप्पजीवी अगिहे अमित्ते जिइन्दिए सव्वओ विप्पमुक्के ।
अणुक्कसाई लहुअप्पभक्खी चेच्चा गिहं एगचरे स भिक्खू ॥ १६ ॥

त्ति बेमि ॥

॥ सभिक्खुयं नाम समत्तं ॥ १५ ॥

॥ बम्भचेरसमाहिठाणा षोडशं अध्ययनम् ॥

सुयं मे आउसं तेणं भगवया एवमक्खायं। इह खलु थेरेहिं भगवन्तेहिं दस बम्भचेरसमाहिठाणा पन्नत्ता जे भिक्खू सोच्चा निसम्म संजमबहुले संवरबहुले समाहिबहुले गुत्ते गुत्तिन्दिए गुत्तबम्भयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा। कयरे खलु ते थेरेहिं भगवन्तेहिं दस बम्भचेरसमाहिठाणा पन्नत्ता जे भिक्खू सोच्चा निसम्म संजमबहुले संवरबहुले समाहिबहुले गुत्ते गुत्तिन्दिए गुत्तबम्भयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा॥ इमे खलु ते थेरेहिं भगवन्तेहिं दस बम्भचेरसमाहिठाणा पन्नत्ता जे भिक्खू सोच्चा निसम्म संजमबहुले संवरबहुले समाहिबहुले गुत्ते गुत्तिन्दिए गुत्तबम्भयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा। तं जहा। विवित्ताइं सयणासणाइं सेवित्ता हवइ से निग्गन्थे। नो इत्थीपसुपण्डगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवित्ता हवइ से निग्गन्थे। तं कहमिति चे। आयरियाह। निग्गन्थस्स खलु इत्थीपसुपण्डगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा कंखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा भेदं वा लभेज्जा उम्मायं वा पाउणिज्जा दीहकालियं वा रोगायकं हवेज्जा केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा नो इत्थिपसुपण्डगसंसत्ताइं सयणासयाइं सेवित्ता हवइ से निग्गन्थे ॥ १ ॥

नो इत्थीणं कहं कहित्ता हवइ से निग्गन्थे। तं कहमिति चे। आयरियाह। निग्गन्थस्स खलु इत्थीणं कहं कहेमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा कंखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा भेदं वा लभेज्जा उम्मायं वा पाउणिज्जा दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा नो इत्थीणं कहं कहेज्जा ॥२॥

नो इत्थीणं सद्धिं सन्निसेज्जागए विहरित्ता हवइ से निग्गन्थे। तं कहमिति चे। आयरियाह। निग्गन्थस्स खलु इत्थीहिं सद्धिं सन्निसेज्जागयस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा कंखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा भेदं वा लभेज्जा उम्मायं वा पाउणिज्जा दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा खलु नो निग्गन्थे इत्थीहिं सद्धिं सन्निसेज्जागए विहरेज्जा ॥ ३ ॥

नो इत्थीणं इन्दियाइं मणोहराइं मणोरमाइं आलोइत्ता निज्झाइत्ता हवइ से निग्गन्थे। तं कहमिति चे। आयरियाह। निग्गन्थस्स खलु इत्थीणं इन्दियाइं मणोहराइं मणोरमाइं आलोएमाणस्स निज्झायमाणस्स

बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा कंखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा भेदं वा लभेज्जा उम्मायं वा पाउणिज्जा दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा खलु नो निग्गन्थे इत्थीणं इन्दियाइं मणोहराइं मणोरमाइं आलोएज्जा निज्झाएज्जा ॥ ४ ॥

नो इत्थीणं कुड्डन्तरंसि वा दूसन्तरंसि वा भित्तन्तरंसि वा कूइयसद्दं वा रुइयसद्दं वा गीयसद्दं वा हसियसद्दं वा थणियसद्दं वा कन्दियसद्दं वा विलवियसद्दं वा सुणेत्ता हवइ से निग्गन्थे। तं कहमिति चे। आयरियाह। निग्गन्थस्स खलु इत्थीणं कुड्डन्तरंसि वा दूसन्तरंसि वा भित्तन्तरंसि वा कूइयसद्दं वा रुइयसद्दं वा गीयसद्दं वा हसियसद्दं वा थणियसद्दं वा कन्दियसद्दं वा विलवियसद्दं वा सुणेमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा कंखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा भेदं वा लभेज्जा उम्मायं वा पाउणिज्जा दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा खलु नो निग्गन्थे इत्थीणं कुड्डन्तरंसि वा दूसन्तरंसि वा भित्तन्तरंसि वा कूइयसद्दं वा रुइयसद्दं वा गीयसद्दं वा हसियसद्दं वा थणियसद्दं वा कन्दियसद्दं वा विलवियसद्दं वा सुणेमाणे विहरेज्जा ॥ ५ ॥

नो निग्गन्थे पुव्वरयं पुव्वकीलियं अणुसरित्ता हवइ से निग्गन्थे। तं कहमिति चे। आयरियाह। निग्गन्थस्स खलु पुव्वरयं पुव्वकीलियं अणुसरमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा कंखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा भेदं वा लभेज्जा उम्मायं वा पाउणिज्जा दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा खलु नो निग्गन्थे पुव्वरयं पुव्वकीलियं अणुसरेज्जा ॥ ६ ॥

नो पणीयं आहारं आहरित्ता हवइ से निग्गन्थे। तं कहमिति चे। आयरियाह। निग्गन्थस्स खलु पणीयं आहारं आहारेमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा कंखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा भेदं वा लभेज्जा उम्मायं वा पाउणिज्जा। दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा खलु नो निग्गन्थे पणीयं आहारं आहारेज्जा ॥ ७ ॥

नो अइमायाए पाणभोयणं आहारेत्ता हवइ से निग्गन्थे। तं कहमिति चे। आयरियाह। निग्गन्थस्स खलु अइमायाए पाणभोयणं आहारेमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा कंखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा भेदं वा लभेज्जा उम्मायं वा पाउणिज्जा दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा खलु नो निग्गन्थे अइमायाए पाणभोयणं आहारेज्जा ॥ ८ ॥

नो विभूसाणुवाई हवइ से निग्गन्थे। तं कहमिति चे। आयरियाह। विभूसावत्तिए विभूसियसरीरे इत्थिजणस्स अभिलसणिज्जे हवइ। तओ णं इत्थिजणेणं अभिलसिज्जमाणस्स बम्भचेरे संका वा कंखा वा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा भेदं वा लभेज्जा उम्मायं वा पाउणिज्जा दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा खलु नो निग्गन्थे विभूसाणुवाई हविज्जा ॥ ९ ॥

नो सद्दरूवरसगन्धफासाणुवाई हवइ से निग्गन्थे। तं कहमिति चे। आयरियाह। निग्गन्थस्स खलु सद्दरूवरसगन्धफासाणुवाइस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा कंखा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा भेदं वा लभेज्जा उम्मायं वा पाउणिज्जा दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा खलु नो सद्दरूव-रसगन्धफासाणुवाई भवेज्जा से निग्गन्थे। दसमे बम्भचेरसमाहिठाणे हवइ ॥ १० ॥

॥ भवन्ति इत्थ सिलोगा ॥ तं जहा ॥

जं विवित्तमणाइण्णं रहियं इत्थिजणेण य।
बम्भचेरस्स रक्खट्ठा आलयं तु निसेवए ॥ १ ॥

मणपल्हायजणणिं कामरागविवड्ढणिं।
बम्भचेररओ भिक्खू थीकहं तु विवज्जए ॥ २ ॥

समं च संथवं थीहिं संकहं च अभिक्खणं।
बम्भचेररओ भिक्खू निच्चसो परिवज्जए ॥ ३ ॥

अंगपच्चंगसंठाणं चारुल्लवियपेहियं।
बम्भचेररओ थीणं चक्खुगिज्झं विवज्जए ॥ ४ ॥

कूइयं रुइयं गीयं हसियं थणियकन्दियं।
बम्भचेररओ थीणं सोयगेज्झं विवज्जए ॥ ५ ॥

हासं किड्डं रइं दप्पं सहसावित्तासियाणि य।
बम्भचेररओ थीणं नाणुचिन्ते कयाइ वि ॥ ६ ॥

पणीयं भत्तपाणं तु खिप्पं मयविवड्ढणं।
बम्भचेररओ भिक्खू निच्चसो परिवज्जए ॥ ७ ॥

धम्मलद्धं मियं काले जत्तत्थं पणिहाणवं।
नाइमत्तं तु भुंजेज्जा बम्भचेररओ सया ॥ ८ ॥

विभूसं परिवज्जेज्जा सरीरपरिमण्डणं ।
बम्भचेररओ भिक्खू सिंगारत्थं न धारए ॥ ९ ॥

सद्दे रूवे य गन्धे य रसे फासे तहेव य ।
पंचविहे कामगुणे निच्चसो परिवज्जए ॥ १० ॥

आलओ थीजणाइण्णो थीकहा य मणोरमा ।
संथवो चेव नारीणं तासिं इन्दियदरिसणं ॥ ११ ॥

कूइयं रुइयं गीयं हासभुत्तासियाणि य ।
पणीयं भत्तपाणं च अइमायं पाणभोयणं ॥ १२ ॥

गत्तभूसणमिट्ठं च कामभोगा य दुज्जया ।
नरस्सऽत्तगवेसिस्स विसं तालउडं जहा ॥ १३ ॥

दुज्जए कामभोगे य निच्चसो परिवज्जए ।
संकाठाणाणि सव्वाणि वज्जेज्जा पणिहाणवं ॥ १४ ॥

धम्मारामे चरे भिक्खू धिइमं धम्मसारही ।
धम्मारामरए दन्ते बम्भचेरसमाहिए ॥ १५ ॥

देवदाणवगन्धव्वा जक्खरक्खसकिन्नरा ।
बम्भयारिं नमंसन्ति दुक्करं जे करन्ति तं ॥ १६ ॥

एस धम्मे धुवे निच्चे सासए जिणदेसिए ।
सिद्धा सिज्झन्ति चाणेण सिज्झिस्सन्ति तहावरे ॥ १७ ॥

त्ति बेमि ॥

॥ बम्भचेरसमाहिठाणा समत्ता ॥ १६ ॥

॥ पावसमणिज्जं सप्तदशं अध्ययनम् ॥

जे केइ उ पव्वइए नियण्ठे धम्मं सुणित्ता विणओववन्ने ।
सुदुल्लहं लहिउं बोहिलाभं विहरेज्ज पच्छा य जहासुहं तु ॥ १ ॥

सेज्जा दढा पाउरणं मि अत्थि उप्पज्जई भोत्तु तहेव पाउं ।
जाणामि जं वट्टइ आउसु त्ति किं नाम काहामि सुएण भन्ते ॥ २ ॥

जे केइ पव्वईए निद्दासीले पगामसो भोच्चा ।
पेच्चा सुहं सुवइ पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ ३ ॥

आयरियउवज्झाएहिं सुयं विणयं च गाहिए।
ते चेव खिंसई बाले पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ ४ ॥

आयरियउवज्झायाणं सम्मं नो पडितप्पइ।
अप्पडिपूयए थद्धे पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ ५ ॥

सम्मद्दमाणो पाणाणि बीयाणि हरियाणि य।
असंजए संजयमन्नमाणे पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ ६ ॥

संथारं फलगं पीढं निसेज्जं पायकम्बलं।
अप्पमज्जियमारुहइ पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ ७ ॥

दवदवस्स चरई पमत्ते य अभिक्खणं।
उल्लंघणे य चण्डे य पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ ८ ॥

पडिलेहेइ पमत्ते अवउज्झइ पायकम्बलं।
पडिलेहाअणाउत्ते पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ ९ ॥

पाडिलेहेइ पमत्ते से किंचि हु निसामिया।
गुरुपारिभावए निच्चं पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ १० ॥

बहुमाई पमुहरी थद्धे लुद्धे अणिग्गहे।
असंविभागी अचियत्ते पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ ११ ॥

विवादं च उदीरेइ अहम्मे अत्तपन्नहा।
वुग्गहे कलहे रत्ते पावसमणि त्ति वुच्चई। १२ ॥

अथिरासणे कुक्कुईए जत्थ तत्थ निसीयई।
आसणम्मि अणाउत्ते पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ १३ ॥

ससरक्खपाए सुवई सेज्जं न पडिलेहइ।
संथारए अणाउत्ते पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ १४ ॥

दुद्धदहीविगईओ आहारेइ अभिक्खणं।
अरए य तवोकम्मे पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ १५ ॥

अत्थन्तम्मि य सूरम्मि आहारेइ अभिक्खणं।
चोइओ पडिचोएइ पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ १६ ॥

आयरियपरिच्चाई परपासण्डसेवए।
गाणंगणिए दुब्भूए पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ १७ ॥

सयं गेहं परिचज्ज परगेहंसि वावडे।
निमित्तेण य ववहरई पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ १८ ॥

सन्नाइपिण्डं जेमेइ नेच्छई सामुदाणियं ।
गिहिनिसेज्जं च वाहेइ पावसमणि त्ति वुच्चई ॥ १९ ॥

एयारिसे पंचकुसीलसंवुडे रूवंधरे मुणिपवराण हेट्ठिमे ।
अयंसि लोए विसमेव गरहिए न से इहं नेव परत्थ लोए ॥ २० ॥

जे वज्जए एए सया उ दोसे से सुव्वए होइ मुणीण मज्झे ।
अयंसि लोए अमयं व पूइए आराहए लोगमिणं तहा परं ॥ २१ ॥
त्ति बेमि ॥

॥ पावसमणिज्जं समत्तं ॥ १७॥

॥ संजइज्जं अट्ठादशं अध्ययनम् ॥

कम्पिल्ले नयरे राया उदिण्णबलवाहणे ।
नामेणं संजए नामं मिगव्वं उवणिग्गए ॥ १ ॥

हयाणीए गयाणीए रहाणीए तहेव य ।
पायत्ताणीए महया सव्वओ परिवारिए ॥ २ ॥

मिए छुहित्ता हयगओ कम्पिल्लुज्जाणकेसरे ।
भीए सन्ते मिए तत्थ वहेइ रसमुच्छिए ॥ ३ ॥

अह केसरम्मि उज्जाणे अणगारे तवोधणे ।
सज्झायज्झाणसंजुत्ते धम्मज्झाणं झियायई ॥ ४ ॥

अप्फोवमण्डवम्मि झायई खवियासवे ।
तस्सागए मिगे पासं वहेई से नराहिवे ॥ ५ ॥

अह आसगओ राया खिप्पमागम्म सो तहिं ।
हए मिगे उ पासित्ता अणगारं तत्थ पासई ॥ ६ ॥

अह राया तत्थ संभन्तो अणगारो मणाऽऽहओ ।
मए उ मन्दपुण्णेणं रसगिद्धेण घत्तुणा ॥ ७ ॥

आसं विसज्जइत्ताणं अणगारस्स सो निवो ।
विणएण वन्दए पाए भगवं एत्थ मे खमे ॥ ८ ॥

अह मोणेण सो भगवं अणगारे झाणमस्सिए ।
रायाणं न पडिमन्तेइ तओ राया भयद्दुओ ॥ ९ ॥

संजओ अहमम्मीति भगवं वाहराहि मे ।
कुद्धे तेएण अणगारे डहेज्ज नरकोडिओ ॥ १० ॥

अभयं पत्थिवा तुब्भं अभयदाया भवाहि य ।
अणिच्चे जीवलोगम्मि किं हिंसाए पसज्जसि ॥ ११ ॥

जया सव्वं परिच्चज्ज गन्तव्वमवसस्स ते ।
अणिच्चे जीवलोगम्मि किं रज्जम्मि पसज्जसि ॥ १२ ॥

जीवियं चेव रूवं च विज्जुसंपायचंचलं ।
जत्थ तं मुज्झसी रायं पेच्चत्थं नावबुज्झसे ॥ १३ ॥

दाराणि य सुया चेव मित्ता य तह बन्धवा ।
जीवन्तमणुजीवन्ति मयं नाणुव्वयन्ति य ॥ १४ ॥

नीहरन्ति मयं पुत्ता पियरं परमदुक्खिया ।
पियरो वि तहा पुत्ते बन्धू रायं तवं चरे ॥ १५ ॥

तओ तेणऽज्जिए दव्वे दारे य परिरक्खिए ।
कीलन्तऽन्ने नरा रायं हट्ठतुट्ठमलंकिया ॥ १६ ॥

तेणावि जं कयं कम्मं सुहं वा जइ वा दुहं ।
कम्मुणा तेण संजुत्तो गच्छई उ परं भवं ॥ १७ ॥

सोऊण तस्स सो धम्मं अणगारस्स अन्तिए ।
महया संवेगनिव्वेगं समावन्नो नराहिवो ॥ १८ ॥

संजओ चइउं रज्जं निक्खन्तो जिणसासणे ।
गद्दभालिस्स भगवओ अणगारस्स अन्तिए ॥ १९ ॥

चिच्चा रट्ठं पव्वइए खत्तिए परिभासइ ।
जहा ते दीसई रूवं पसन्नं ते तहा मणो ॥ २० ॥

किंनामे किंगोत्ते कस्सट्ठाए व माहणे ।
कहं पडियरसी बुद्धे कहं विणीए त्ति वुच्चसि ॥ २१ ॥

संजओ नाम नामेणं तहा गोत्तेण गोयमे ।
गद्दभाली ममायरिया विज्जाचरणपारगा ॥ २२ ॥

किरियं अकिरियं विणयं अन्नाणं च महामुणी ।
एएहिं चउहिं ठाणेहिं मेयन्ने किं पभासई ॥ २३ ॥

इइ पाउकरे बुद्धे नायए परिनिव्वुडे ।
विज्जाचरणसंपन्ने सच्चे सच्चपरक्कमे ॥ २४ ॥

पडन्ति नरए घोरे जे नरा पावकारिणो ।
दिव्वं च गइं गच्छन्ति चरित्ता धम्ममारियं ॥ १५ ॥

मायावुइयमेयं तु मुसाभासा निरत्थिया ।
संजममाणो वि अहं वसामि इरियामि य ॥ १६ ॥

सव्वे ते विइया मज्झं मिच्छादिट्ठी अणारिया ।
विज्जमाणे परे लोए सम्मं जाणामि अप्पगं ॥ १७ ॥

अहमासी महापाणे जुइमं वरिससओवमं ।
जा सा पाली महापाली दिव्वा वरिससओवमा ॥ १८ ॥

से चुए बम्भलोगाओ माणुसं भवमागए ।
अप्पणो य परेसिं च आउं जाणे जहा तहा ॥ १९ ॥

नाणारुई च छन्दं च परिवज्जेज्ज संजए ।
अणट्ठा जे य सव्वत्था इइ विज्जामणुसंचरे ॥ २० ॥

पडिक्कमामि पसिणाणं परमन्तेहिं वा पुणो ।
अहो उट्ठिए अहोरायं इइ विज्जा तवं चरे ॥ २१ ॥

जं च मे पुच्छसी काले सम्मं सुद्धेण चेयसा ।
ताइं पाउकरे बुद्धे तं नाणं जिणसासणे ॥ २२ ॥

किरियं च रोयए धीरे अकिरियं परिवज्जए ।
दिट्ठीए दिट्ठिसंपन्ने धम्मं चर सुदुच्चरं ॥ २३ ॥

एयं पुण्णपयं सोच्चा अत्थधम्मोवसोहियं ।
भरहो वि भारहं वासं चेच्चा कामाइं पव्वए ॥ २४ ॥

सगरो वि सागरन्तं भरहवासं नराहिवो ।
इस्सरियं केवलं हिच्चा दयाए परिनिव्वुडे ॥ २५ ॥

चइत्ता भारहं वासं चक्कवट्टी महिड्ढिओ ।
पव्वज्जमब्भुवगओ मघवं नाम महाजसो ॥ २६ ॥

सणंकुमारो मणुस्सिन्दो चक्कवट्टी महिड्ढिओ ।
पुत्तं रज्जे ठवेऊणं सो वि राया तवं चरे ॥ २७ ॥

चइत्ता भारहं वासं चक्कवट्टी महिड्ढिओ ।
सन्ती सन्तिकरे लोए पत्तो गइमणुत्तरं ॥ २८ ॥

इक्खागरायवसभो कुन्थू नाम नरीसरो ।
विक्खायकित्ती भगवं पत्तो गइमणुत्तरं ॥ २९ ॥

सागरन्तं चइत्ताणं भरहं नरवरीसरो ।
अरो य अरयं पत्तो पत्तो गइमणुत्तरं ॥ ४० ॥

चइत्ता भारहं वासं चइत्ता बलवाहणं ।
चइत्ता उत्तमे भोए महापउमे तवं चरे ॥ ४१ ॥

एगच्छत्तं पसाहित्ता महिं माणनिसूरणो ।
हरिसेणो मणुस्सिन्दो पत्तो गइमणुत्तरं ॥ ४२ ॥

अन्निओ रायसहस्सेहिं सुपरिच्चाई दमं चरे ।
जयनामो जिणक्खायं पत्तो गइमणुत्तरं ॥ ४३ ॥

दसण्णरज्जं मुइयं चइत्ताणं मुणी चरे ।
दसण्णभद्दो निक्खन्तो सक्खं सक्केण चोइओ ॥ ४४ ॥

नमी नमेइ अप्पाणं सक्खं सक्केण चोइओ ।
चइऊण गेहं वइदेही सामण्णे पज्जुवट्ठिओ ॥ ४५ ॥

करकण्डू कलिंगेसु पंचालेसु य दुम्मुहो ।
नमी राया विदेहेसु गन्धारेसु य नग्गई ॥ ४६ ॥

एए नरिन्दवसभा निक्खन्ता जिणसासणे ।
पुत्ते रज्जे ठवेऊणं सामण्णे पज्जुवट्ठिया ॥ ४७ ॥

सोवीररायवसभो चइत्ताण मुणी चरे ।
उदायणो पव्वइओ पत्तो गइमणुत्तरं ॥ ४८ ॥

तहेव कासीराया सेओसच्चपरक्कमे ।
कामभोगे परिच्चज्ज पहणे कम्ममहावणं ॥ ४९ ॥

तहेव विजओ राया अणट्टाकित्ति पव्वए ।
रज्जं तु गुणसमिद्धं पयहित्तु महाजसो ॥ ५० ॥

तहेवुग्गं तवं किच्चा अव्वक्खित्तेण चेयसा ।
महाबलो रायरिसी आदाय सिरसा सिरिं ॥ ५१ ॥

कहं धीरो अहेऊहिं उम्मत्तो व महिं चरे ।
एए विसेसमादाय सूरा दढपरक्कमा ॥ ५२ ॥

अच्चन्तनियाणखमा सच्चा मे भासिया वई ।
अतरिंसु तरन्तेगे तरिस्सन्ति अणागया ॥ ५३ ॥

कहं धीरे अहेऊहिं अत्ताणं परियावसे ।
सव्वसंगविनिम्मुक्के सिद्धे हवइ नीरए ॥ ५४ ॥ त्ति बेमि ॥

॥ संजइज्जं समत्तं ॥ १८ ॥

॥ मियापुत्तीयं एकोनविंशतितमं अध्ययनम् ॥

सुग्गीवे नयरे रम्मे काणणुज्जाणसोहिए ।
राया बलभद्दो त्ति मिया तस्सग्गमाहिसी ॥ १ ॥

तेसिं पुत्ते बलसिरी मियापुत्ते त्ति विस्सुए ।
अम्मापिऊण दइए जुवराया दमीसरे ॥ २ ॥

नन्दणे सो उ पासाए कीलए सह इत्थिहिं ।
देवे दोगुन्दगे चेव निच्चं मुइयमाणसो ॥ ३ ॥

मणिरयणकोट्टिमतले पासायालोयणट्ठिओ ।
आलोएइ नगरस्स चउक्कतियचच्चरे ॥ ४ ॥

अह तत्थ अइच्छन्तं पासई समणसंजयं ।
तवनियमसंजमधरं सीलड्ढं गुणआगरं ॥ ५ ॥

तं देहई मियापुत्ते दिट्ठीए अणिमिसाए उ ।
कहिं मन्नेरिसं रूवं दिट्ठपुव्वं मए पुरा ॥ ६ ॥

साहुस्स दरिसणे तस्स अज्झवसाणम्मि सोहणे ।
मोहंगयस्स सन्तस्स जाईसरणं समुप्पन्नं ॥ ७ ॥

जाईसरणे समुप्पन्ने मियापुत्ते महिड्ढिए ।
सरई पोराणियं जाइं सामण्णं च पुरा कयं ॥ ८ ॥

विसएहि अरज्जन्तो रज्जन्तो संजमम्मि य ।
अम्मापियरं उवागम्म इमं वयणमब्बवी ॥ ९ ॥

सुयाणि मे पंच महव्वयाणि नरएसु दुक्खं च तिरिक्खजोणिसु ।
निव्विण्णकामो मि महण्णवाओ अणुजाणह पव्वइस्सामि अम्मो ॥ १० ॥

अम्मताय मए भोगा भुत्ता विसफलोवमा ।
पच्छा कडुयविवागा अणुबन्धदुहावहा ॥ ११ ॥

इमं सरीरं अणिच्चं असुइं असुइसंभवं ।
असासयावासमिणं दुक्खकेसाण भायणं ॥ १२ ॥

असासए सरीरम्मि रइं नोवलभामहं ।
पच्छा पुरा व चइयव्वे फेणबुब्बुयसन्निभे ॥ १३ ॥

माणुसत्ते असारम्मि वाहीरोगाण आलए ।
जरामरणघत्थम्मि खणं पि न रमामऽहं ॥ १४ ॥

जम्मं दुक्खं जरा दुक्खं रोगाणि मरणाणि य ।
अहो दुक्खो हु संसारो जत्थ कीसन्ति जन्तवो ॥ १५ ॥

खेत्तं वत्थुं हिरण्णं च पुत्तदारं च बन्धवा ।
चइत्ताणं इमं देहं गन्तव्वमवसस्स मे ॥ १६ ॥

जहा किम्पागफलाणं परिणामो न सुन्दरो ।
एवं भुत्ताण भोगाणं परिणामो न सुन्दरो ॥ १७ ॥

अद्धाणं जो महन्तं तु अपाहेओ पवज्जई ।
गच्छन्ते से दुही होइ छुहातण्हाए पीडिए ॥ १८ ॥

एवं धम्मं अकाऊणं जो गच्छइ परं भवं ।
गच्छन्तो सो दुही होइ वाहीरोगेहिं पीडिओ ॥ १९ ॥

अद्धाणं जो महन्तं तु सपाहेओ पवज्जई ।
गच्छन्तो सो सुही होइ छुहातण्हाविवज्जिओ ॥ २० ॥

एवं धम्मं पि काऊणं जो गच्छइ परं भवं ।
गच्छन्तो सो सुही होइ अप्पकम्मे अवेयणे ॥ २१ ॥

जहा गेहे पलित्तम्मि तस्स गेहस्स जो पहू ।
सारभण्डाणि नीणेइ असारं अवउज्झइ ॥ २२ ॥

एवं लोए पलित्तम्मि जराए मरणेण य ।
अप्पाणं तारइस्सामि तुब्भेहिं अणुमन्निओ ॥ २३ ॥

तं बिन्ति अम्मापियरो सामण्णं पुत्त दुच्चरं ।
गुणाणं तु सहस्साइं धारेयव्वाइं भिक्खुणा ॥ २४ ॥

समया सव्वभूएसु सत्तुमित्तेसु वा जगे ।
पाणाइवायविरई जावज्जीवाए दुक्करं ॥ २५ ॥

निच्चकालऽप्पमत्तेणं मुसावायविवज्जणं ।
भासियव्वं हियं सच्चं निच्चाउत्तेण दुक्करं ॥ २६ ॥

दन्तसोहणमाइस्स अदत्तस्स विवज्जणं ।
अणवज्जेसणिज्जस्स गेण्हणा अवि दुक्करं ॥ २७ ॥

विरई अबम्भचेरस्स कामभोगरसन्नुणा ।
उग्गं महव्वयं बम्भं धारेयव्वं सुदुक्करं ॥ २८ ॥

धणधन्नपेसवग्गेसु परिग्गहविवज्जणं ।
सव्वारम्भपरिच्चाओ निम्ममत्तं सुदुक्करं ॥ २९ ॥

चउव्विहे वि आहारे राईभोयणवज्जणा ।
सन्निहीसंचओ चेव वज्जेयव्वो सुदुक्करं ॥ ३० ॥

छुहा तण्हा य सीउण्हं दंसमसगवेयणा ।
अक्कोसा दुक्खसेज्जा य तणफासा जल्लमेव य ॥ ३१ ॥

तालणा तज्जणा चेव वहबन्धपरीसहा ।
दुक्खं भिक्खायरिया जायणा य अलाभया ॥ ३२ ॥

कावोया जा इमा वित्ती केसलोओ य दारुणो ।
दुक्खं बम्भवयं घोरं धारेउं य महप्पणो ॥ ३३ ॥

सुहोइओ तुमं पुत्ता सुकुमालो सुमज्जिओ ।
न हु सी पभू तुमं पुत्ता सामण्णमणुपालिया ॥ ३४ ॥

जावज्जीवमविस्सामो गुणाणं तु महब्भरो ।
गुरू उ लोहभारो व्व जो पुत्ता होइ दुव्वहो ॥ ३५ ॥

आगासे गंगसोओ व्व पडिसोओ व्व दुत्तरो ।
बाहाहिं सागरो चेव तरियव्वो गुणोयही ॥ ३६ ॥

वालुयाकवलो चेव निरस्साए उ संजमे ।
असिधारागमणं चेव दुक्करं चरिउं तवो ॥ ३७ ॥

अहीवेगन्तदिट्ठीए चरित्ते पुत्त दुच्चरे ।
जवा लोहमया चेव चावेयव्वा सुदुक्करं ॥ ३८ ॥

जहा अग्गिसिहा दित्ता पाउं होइ सुदुक्करा ।
तहा दुक्करं करेउं जे तारुण्णे समणत्तणं ॥ ३९ ॥

जहा दुक्खं भरेउं जे होइ वायस्स कोत्थलो ।
तहा दुक्खं करेउं जे कीवेणं समणत्तणं ॥ ४० ॥

जहा तुलाए तोलेउं दुक्करो मन्दरो गिरी ।
तहा निहुयं नीसंकं दुक्करं समणत्तणं ॥ ४१ ॥

जहा भुयाहिं तरिउं दुक्करं रयणागरो ।
तहा अणुवसन्तेणं दुत्तरं दमसागरो ॥ ४२ ॥

भुंज माणुस्सए भोगे पंचलक्खणए तुमं ।
भुत्तभोगी तओ जाया पच्छा धम्मं चरिस्ससि ॥ ४३ ॥

सो वेइ अम्मापियरो एवमेयं जहा फुडं ।
इह लोए निप्पिवासस्स नत्थि किंचि वि दुक्करं ॥ ४४ ॥

सारीरमाणसा चेव वेयणाओ अणन्तसो ।
मए सोढाओ भीमाओ असइं दुक्खभयाणि य ॥ ४५ ॥

जरामरणकन्तारे चाउरन्ते भयागरे ।
मए सोढाणि भीमाणि जम्माणि मरणाणि य ॥ ४६ ॥

जहा इहं अगणी उण्हो एत्तोऽणन्तगुणे तहिं ।
नरएसु वेयणा उण्हा अस्साया वेइया मए ॥ ४७ ॥

जहा इमं इहं सीयं एत्तोऽणन्तगुणं तहिं ।
नरएसु वेयणा सीया अस्साया वेइया मए ॥ ४८ ॥

कन्दन्तो कंदुकुम्भीसु उड्ढपाओ अहोसिरो ।
हुयासणे जलन्तम्मि पक्कपुव्वो अणन्तसो ॥ ४९ ॥

महादवग्गिसंकासे मरुम्मि वइरवालुए ।
कलम्बवालुयाए य दड्ढपुव्वो अणन्तसो ॥ ५० ॥

रसन्तो कन्दुकुम्भीसु उड्ढं बद्धो अबन्धवो ।
करवत्तकरकयाईहिं छिन्नपुव्वो अणन्तसो ॥ ५१ ॥

अइतिक्खकण्टगाइण्णे तुंगे सिम्बलिपायवे ।
खेवियं पासबद्धेणं कड्ढोकड्ढाहिं दुक्करं ॥ ५२ ॥

महाजन्तेसु उच्छू वा आरसन्तो सुभेरवं ।
पीलिओ मि सकम्मेहिं पावकम्मो अणन्तसो ॥ ५३ ॥

कूवन्तो कोलसुणएहिं सामेहिं सबलेहि य ।
पाडिओ फालिओ छिन्नो विप्फुरन्तो अणेगसो ॥ ५४ ॥

असीहि अयसिवण्णाहिं भल्लीहिं पट्टिसेहि य ।
छिन्नो भिन्नो विभिन्नो य ओइण्णो पावकम्मुणा ॥ ५५ ॥

अवसो लोहरहे जुत्तो जलन्ते समिलाजुए ।
चोइओ तोत्तजुत्तेहिं रोज्झो वा जह पाडिओ ॥ ५६ ॥

दुयासणे जलन्तम्मि चियासु महिसो विव ।
दड्ढो पक्को य अवसो पावकम्मेहि पाविओ ॥ ५७ ॥

बला संडासतुण्डेहिं लोहतुण्डेहि पक्खिहिं ।
विलुत्तो विलवन्तो हं ढंकगिद्धेहिंऽणन्तसो ॥ ५८ ॥

तण्हाकिलन्तो धावन्तो पत्तो वेयरणिं नदिं ।
जलं पाहिं ति चिन्तन्तो खुरधाराहिं विवाइओ ॥ ५९ ॥

उण्हाभितत्तो संपत्तो असिपत्तं महावणं ।
असिपत्तेहिं पडन्तेहिं छिन्नपुव्वो अणेगसो ॥ ६० ॥

मुग्गरेहिं मुसंढीहिं सूलेहिं मुसलेहि य ।
गयासं भग्गगत्तेहिं पत्तं दुक्खं अणन्तसो ॥ ६१ ॥

खुरेहिं तिक्खधारेहिं छुरियाहिं कप्पणीहि य ।
कप्पिओ फालिओ छिन्नो उक्कित्तो य अणेगसो ॥ ६२ ॥

पासेहिं कूडजालेहिं मिओ वा अवसो अहं ।
वाहिओ बद्धरुद्धो वा बहू चेव विवाइओ ॥ ६३ ॥

गलेहिं मगरजालेहिं मच्छो वा अवसो अहं ।
उल्लिओ फालिओ गहिओ मारिओ य अणन्तसो ॥ ६४ ॥

वीदंसएहि जालेहिं लेप्पाहिं सउणो विव ।
गहिओ लग्गो बद्धो य मारिओ य अणन्तसो ॥ ६५ ॥

कुहाडफरसुमाईहिं वड्ढईहिं दुमो विव ।
कुट्टिओ फालिओ छिन्नो तच्छिओ य अणन्तसो ॥ ६६ ॥

चवेडमुट्ठिमाईहिं कुमारेहिं अयं पिव ।
ताडिओ कुट्टिओ भिन्नो चुण्णिओ य अणन्तसो ॥ ६७ ॥

तत्ताइं तम्बलोहाइं तउयाइं सीसयाणि य ।
पाइओ कलकलन्ताइं आरसन्तो सुभेरवं ॥ ६८ ॥

तुहं पियाइं मंसाइं खण्डाइं सोल्लगाणि य ।
खाविओ मि समंसाइं अग्गिवण्णाइं णेगसो ॥ ६९ ॥

तुहं पिया सुरा सीहू मेरओ य महूणि य ।
पाइओ मि जलन्तीओ वसाओ रुहिराणि य ॥ ७० ॥

निच्चं भीएण तत्थेण दुहिएण वहिएण य ।
परमा दुहसंबद्धा वेयणा वेइया मए ॥ ७१ ॥

तिव्वचण्डप्पगाढाओ घोराओ अइदुस्सहा ।
महब्भयाओ भीमाओ नरएसु वेइया मए ॥ ७२ ॥

जारिसा माणुसे लोए ताया दीसन्ति वेयणा ।
एत्तो अणन्तगुणिया नरएसुं दुक्खवेयणा ॥ ७३ ॥

सव्वभवेसु अस्साया वेयणा वेइया मए ।
निमेसन्तरमित्तं पि जं साया नत्थि वेयणा ॥ ७४ ॥

तं बिन्तऽम्मापियरो छन्देणं पुत्त पव्वया ।
नवरं पुण सामण्णे दुक्खं निप्पडिकम्मया ॥ ७५ ॥

सो बेइ अम्मापियरो एवमेयं जहाफुडं ।
पडिकम्मं को कुणई अरण्णे मियपक्खिणं ॥ ७६ ॥

एगभूए अरण्णे व जहा उ चरई मिगे ।
एवं धम्मं चरिस्सामि संजमेण तवेण य ॥ ७७ ॥

जया मिगस्स आयंको महारण्णमि जायई ।
अच्चन्तं रुक्खमूलम्मि को णं ताहे तिगिच्छई ॥ ७८ ॥

को वा से ओसहं देई को वा से पुच्छई सुहं ।
को से भत्तं व पाणं वा आहरित्तु पणामए ॥ ७९ ॥

जया य से सुही होइ तया गच्छइ गोयरं ।
भत्तपाणस्स अट्ठाए वल्लराणि सराणि य ॥ ८० ॥

खाइत्ता पाणियं पाउं वल्लरेहिं सरेहि य ।
मिगचारियं चरित्ताणं गच्छई मिगचारियं ॥ ८१ ॥

एवं समुट्ठिओ भिक्खू एवमेव अणेगए ।
मिगचारियं चरित्ताणं उड्ढं पक्कमई दिसं ॥ ८२ ॥

जहा मिगे एग अणेगचारी अणेगवासे धुवगोयरे य ।
एवं मुणी गोयरियं पविट्ठे नो हीलए नो वि य खिंसएज्जा ॥ ८३ ॥

मिगचारियं चरिस्सामि एवं पुत्ता जहासुहं ।
अम्मापिईहिऽणुन्नाओ जहाइ उवहिं तओ ॥ ८४ ॥

मियचारियं चरिस्सामि सव्वदुक्खविमोक्खणिं ।
तुब्भेहिं अम्ब‌ऽणुन्नाओ गच्छ पुत्त जहासुहं ॥ ८५ ॥

एवं सो अम्मापियरो अणुमाणित्ताण बहुविहं ।
ममत्तं छिन्दई ताहे महानागो व्व कंचुयं ॥ ८६ ॥

इड्ढी वित्तं च मित्ते य पुत्तदारं च नायओ ।
रेणुयं व पडे लग्गं निद्धुणित्ताण निग्गओ ॥ ८७ ॥

पंचमहव्वयजुत्तो पंचहिं समिओ तिगुत्तिगुत्तो य ।
सब्भिन्तरबाहिरओ तवोकम्मंसि उज्जुत्तो ॥ ८८ ॥

निम्ममो निरहंकारो निस्संगो चत्तगारवो ।
समो य सव्वभूएसु तसेसु थावरेसु य ॥ ८९ ॥

लाभालाभे सुहे दुक्खे जीविए मरणे तहा ।
समो निन्दापसंसासु तहा माणावमाणओ ॥ ९० ॥

गारवेसु कसाएसु दण्डसल्लभएसु य ।
नियत्तो हाससोगाओ अनियाणो अबन्धणो ॥ ९१ ॥

अणिस्सिओ इहं लोए परलोए अणिस्सिओ ।
वासीचन्दणकप्पो य असणे अणसणे तहा ॥ ९२ ॥

अप्पसत्थेहिं दारेहिं सव्वओ पिहियासवे ।
अज्झप्पज्झाणजोगेहिं पसत्थदमसासणे ॥ ९३ ॥

एवं नाणेण चरणेण दंसणेण तवेण य ।
भावणाहि य सुद्धाहिं सम्मं भावेत्तु अप्पयं ॥ ९४ ॥

बहुयाणि उ वासाणि सामण्णमणुपालिया ।
मासिएण उ भत्तेण सिद्धिं पत्तो अणुत्तरं ॥ ९५ ॥

एवं करन्ति संबुद्धा पण्डिया पवियक्खणा ।
विणियट्टन्ति भोगेसु मियापुत्ते जहामिसी ॥ ९६ ॥

महापभावस्स महाजसस्स मियाइ पुत्तस्स निसम्म भासियं ।
तवप्पहाणं चरियं च उत्तमं गइप्पहाणं च तिलोगविस्सुयं ॥ ९७ ॥

वियाणिया दुक्खविवद्धणं धणं ममत्तबंधं च महाभयावहं ।
सुहावहं धम्मधुरं अणुत्तरं धारेज्ज निव्वाणगुणावहं महं ॥९८॥ त्ति बेमि ॥

॥ मियापुत्तीयं समत्तं ॥ १९ ॥

॥ महानियण्ठिज्जं विंशतितमं अध्ययनम् ॥

सिद्धाण नमो किच्चा संजयाणं च भावओ ।
अत्थधम्मगइं तच्चं अणुसट्ठिं सुणेह मे ॥ १ ॥

पभूयरयणो राया सेणिओ मगहाहिवो ।
विहारजत्तं निज्जाओ मण्डिकुच्छिंसि चेइए ॥ २ ॥

नाणादुमलयाइण्णं नाणापक्खिनिसेवियं ।
नाणाकुसुमसंछन्नं उज्जाणं नन्दणोवमं ॥ ३ ॥

तत्थ सो पासई साहुं संजयं सुसमाहियं ।
निसण्णं रुक्खमूलम्मि सुकुमालं सुहोइयं ॥ ४ ॥

तस्स रूवं तु पासित्ता राइणो तम्मि संजए ।
अच्चन्तपरमो आसी अउलो रूवविम्हओ ॥ ५ ॥

अहो वण्णो अहो रूवं अहो अज्जस्स सोमया ।
अहो खन्ती अहो मुत्ती अहो भोगे असंगया ॥ ६ ॥

तस्स पाए उ वन्दित्ता काऊण य पयाहिणं ।
नाइदूरमणासन्ने पंजली पडिपुच्छई ॥ ७ ॥

तरुणो सि अज्जो पव्वइओ भोगकालम्मि संजया ।
उवट्ठिओ सि सामण्णे एयमट्ठं सुणेमि ता ॥ ८ ॥

अणाहो मि महाराय नाहो मज्झ न विज्जई ।
अणुकम्पगं सुहिं वावि कंचि नाभिसमेमऽहं ॥ ९ ॥

तओ सो पहसिओ राया सेणिओ मगहाहिवो ।
एवं ते इड्ढिमन्तस्स कहं नाहो न विज्जई ॥ १० ॥

होमि नाहो भयन्ताणं भोगे भुंजाहि संजया ।
मित्तनाईपरिवुडो माणुस्सं खु सुदुल्लहं ॥ ११ ॥

अप्पणा वि अणाहो सि सेणिया मगहाहिवा ।
अप्पणा अणाहो सन्तो कस्स नाहो भविस्ससि ॥ १२ ॥

एवं वुत्तो नरिन्दो सो सुसंभन्तो सुविम्हिओ ।
वयणं अस्सुयपुव्वं साहुणा विम्हयन्निओ ॥ १३ ॥

अस्सा हत्थी मणुस्सा मे पुरं अन्तेउरं च मे ।
भुंजामि माणुसे भोगे आणाइस्सरियं च मे ॥ १४ ॥

परिसे सम्पयग्गम्मि सव्वकामसमप्पिए ।
कहं अणाहो भवइ मा हु भन्ते मुसं वए ॥ १५ ॥

न तुमं जाणे अणाहस्स अत्थं पोत्थं च पत्थिवा ।
जहा अणाहो भवई सणाहो वा नराहिवा ॥ १६ ॥

सुणेह मे महाराय अव्वक्खित्तेण चेयसा ।
जहा अणाहो भवई जहा मे य पवत्तियं ॥ १७ ॥

कोसम्बी नाम नयरी पुराणपुरभेयणी ।
तत्थ आसी पिया मज्झ पभूयधणसंचओ ॥ १८ ॥

पढमे वए महाराय अउला मे अच्छिवेयणा ।
अहोत्था विउलो डाहो सव्वंगेसु य पत्थिवा ॥ १९ ॥

सत्थं जहा परमतिक्खं सरीरविवरन्तरे ।
आवीलिज्ज अरी कुद्धो एवं मे अच्छिवेयणा ॥ २० ॥

तियं मे अन्तरिच्छं च उत्तमंगं च पीडई ।
इन्दासणिसमा घोरा वेयणा परमदारुणा ॥ २१ ॥

उवट्ठिया मे आयरिया विज्जामन्ततिगिच्छया ।
अधीया सत्थकुसला मन्तमूलविसारया ॥ २२ ॥

ते मे तिगिच्छं कुव्वन्ति चाउप्पायं जहाहियं ।
न य दुक्खा विमोयन्ति एसा मज्झ अणाहया ॥ २३ ॥

पिया मे सव्वसारं पि दिज्जा हि मम कारणा ।
न य दुक्खा विमोएइ एसा मज्झ अणाहया ॥ २४ ॥

माया य मे महाराय पुत्तसोगदुहट्टिया ।
न य दुक्खा विमोएइ एसा मज्झ अणाहया ॥ २५ ॥

भायरो मे महाराय सगा जेट्ठकणिट्ठगा ।
न य दुक्खा विमोयन्ति एसा मज्झ अणाहया ॥ २६ ॥

भइणीओ मे महाराय सगा जेट्ठकणिट्ठगा ।
न य दुक्खा विमोयन्ति एसा मज्झ अणाहया ॥ २७

भारिया मे महाराय अणुरत्ता अणुव्वया ।
अंसुपुण्णेहिं नयणेहिं उरं मे परिसिंचई ॥ २८ ॥

अन्नं पाणं च ण्हाणं च गन्धमल्लविलेवणं ।
मए नायमणायं वा सा बाला नेव भुंजई ॥ २९ ॥

खणं पि मे महाराय पासाओ वि न फिट्टई ।
न य दुक्खा विमोएइ एसा मज्झ अणाहया ॥ ३० ॥

तओ हं एवमाहंसु दुक्खमा हु पुणो पुणो ।
वेयणा अणुभविउं जे संसारम्मि अणन्तए ॥ ३१ ॥

सइं च जइ मुच्चेज्जा वेयणा विउला इओ ।
खन्तो दन्तो निरारम्भो पव्वए अणगारियं ॥ ३२ ॥

एवं च चिन्तइत्ताणं पसुत्तो मि नराहिवा ।
परियत्तन्तीए राईए वेयणा मे खयं गया ॥ ३३ ॥

तओ कल्ले पभायम्मि आपुच्छित्ताण बन्धवे ।
खन्तो दन्तो निरारम्भो पव्वइओऽणगारियं ॥ ३४ ॥

तो हं नाहो जाओ अप्पणो य परस्स य ।
सव्वेसिं चेव भूयाणं तसाण थावराण य ॥ ३५ ॥

अप्पा नई वेयरणी अप्पा मे कूडसामली ।
अप्पा कामदुहा धेणू अप्पा मे नन्दणं वणं ॥ ३६ ॥

अप्पा कत्ता विकत्ता य दुक्खाण य सुहाण य ।
अप्पा मित्तममित्तं च दुप्पट्ठियसुपट्ठिओ ॥ ३७ ॥

इमा हु अन्ना वि अणाहया निवा तमेगचित्तो निहुओ सुणेहि ।
नियण्ठधम्मं लहियाण वी जहा सीयन्ति एगे बहुकायरा नरा ॥ ३८ ॥

जो पव्वइत्ताण महव्वयाइं सम्मं च नो फासयई पमाया ।
अनिग्गहप्पा य रसेसु गिद्धे न मूलओ छिन्दइ बन्धणं से ॥ ३९ ॥

आउत्तया जस्स न अत्थि काइ इरियाए भासाए तहेसणाए ।
आयाणनिक्खेवदुगुंछणाए न धीरजायं अणुजाइ मग्गं ॥ ४० ॥

चिरं पि से मुण्डरुई भवित्ता अथिरव्वए तवनियमेहि भट्ठे ।
चिरं पि अप्पाण किलेसइत्ता न पारए होइ हु संपराए ॥ ४१ ॥

पोल्ले व मुट्ठी जह से असारे अयन्तिए कूडकहावणे वा ।
राढामणी वेरुलियप्पगासे अमहग्घए होइ य जाणएसु ॥ ४२ ॥

कुसीललिंगं इह धारइत्ता इसिज्झयं जीविय वूहइत्ता ।
असंजए संजयलप्पमाणे विणिग्घायमागच्छइ से चिरं पि ॥ ४३ ॥

विसं तु पीयं जह कालकूडं हणाइ सत्थं जह कुग्गहीयं ।
एसो वि धम्मो विसओववन्नो हणाइ वेयाल इवाविवन्नो ॥ ४४ ॥

जे लक्खणं सुविण पउंजमाणे निमित्तकोऊहलसंपगाढे ।
कुहेडविज्जासवदारजीवी न गच्छई सरणं तम्मि काले ॥ ४५ ॥

तमंतमेणेव उ से असीले सया दुही विप्परियासुवेइ ।
संधावई नरगतिरिक्खजोणिं मोणं विराहेत्तु असाहुरूवे ॥ ४६ ॥

उद्देसियं कीयगडं नियागं न मुंचई किंचि अणेसणिज्जं ।
अग्गी विवा सव्वभक्खी भवित्ता इत्तो चुए गच्छइ कट्टु पावं ॥ ४७ ॥

न तं अरी कण्ठछेत्ता करेइ जं से करे अप्पणिया दुरप्पया ।
से नाहिई मच्चुमुहं तु पत्ते पच्छाणुतावेण दयाविहूणो ॥ ४८ ॥

निरट्ठिया नग्गरुई उ तस्स जे उत्तिमट्ठे विवज्जासमेई ।
इमे वि से नत्थि परे वि लोए दुहओ वि से झिज्जइ तत्थ लोए ॥ ४९ ॥

एमेवऽहाछन्दकुसीलरूवे मग्गं विराहेत्तु जिणुत्तमाणं ।
कुररी विवा भोगरसाणुगिद्धा निरट्ठसोया परियावमेइ ॥ ५० ॥

सोच्चाण मेहावि सुभासियं इमं अणुसासणं नाणगुणोववेयं ।
मग्गं कुसीलाण जहाय सव्वं महानियण्ठाण वए पहेणं ॥ ५१ ॥

चरित्तमायारगुणन्निए तओ अणुत्तरं संजम पालियाणं ।
निरासवे संखवियाण कम्मं उवेइ ठाणं विउलुत्तमं धुवं ॥ ५२ ॥

एवुग्गदन्ते वि महातवोधणे महामुणी महापइन्ने महायसे ।
महानियण्ठिज्जमिणं महासुयं से काहई महया वित्थरेणं ॥ ५३ ॥

तुट्ठो य सेणिओ राया इणमुदाहु कयंजली ।
अणाहत्तं जहाभूयं सुट्ठु मे उवदंसियं ॥ ५४ ॥

तुज्झं सुलद्धं खु मणुस्सजम्मं लाभा सुलद्धा य तुमे महेसी ।
तुब्भे सणाहा य सबन्धवा य जं भे ठिया मग्गे जिणुत्तमाण ॥ ५५ ॥

तं सि नाहो अणाहाणं सव्वभूयाण संजया ।
खामेमि ते महाभाग इच्छामि अणुसासिउं ॥ ५६ ॥

पुच्छिऊण मए तुब्भं झाणविग्घो उ जो कओ ।
निमन्तिया य भोगेहिं तं सव्वं मरिसेहि मे ॥ ५७ ॥

एवं थुणित्ताण स रायसीहो अणगारसीहं परमाइ भत्तिए ।
सओरोहो सपरियणो सबन्धवो धम्माणुरत्तो विमलेण चेयसा ॥ ५८ ॥

ऊससियरोमकूवो काऊण य पयाहिणं ।
अभिवन्दिऊण सिरसा अइयाओ नराहिवो ॥ ५९ ॥

इयरो वि गुणसमिद्धो तिगुत्तिगुत्तो तिदण्डविरओ य ।
विहग इव विप्पमुक्को विहरइ वसुहं विगयमोहो ॥ ६० ॥

॥ त्ति बेमि ॥

॥ महानियण्ठिज्जं समत्तं ॥ २० ॥

॥ समुद्दपालीयं एकविंशं अध्ययनम् ॥

चम्पाए पालिए नाम सावए आसि वाणिए ।
महावीरस्स भगवओ सीसे सो उ महप्पणो ॥ १ ॥

निग्गन्थे पावयणे सावए से वि कोविए ।
पोएण ववहरन्ते पिहुण्डं नगरमागए ॥ २ ॥

पिहुण्डे ववहरन्तस्स वाणिओ देइ धूयरं ।
तं ससत्तं पइगिज्झ सदेसमह पत्थिओ ॥ ३ ॥

अह पालियस्स घरणी समुद्दंमि पसवई ।
अह बालए तहिं जाए समुद्दपालि त्ति नामए ॥ ४ ॥

खेमेण आगए चम्पं सावए वाणिए घरं ।
संवड्ढई घरे तस्स दारए से सुहोइए ॥ ५ ॥

बावत्तरिं कलाओ य सिक्खई नीइकोविए ।
जोव्वणेण य संपन्ने सुरूवे पियदंसणे ॥ ६ ॥

तस्स रूववइं भज्जं पिया आणेइ रूविणिं ।
पासाए कीलए रम्मे देवो दोगुन्दओ जहा ॥ ७ ॥

अह अन्नया कयाई पासायालोयणे ठिओ ।
वज्झमण्डणसोभागं वज्झं पासइ वज्झगं ॥ ८ ॥

तं पासिऊण संविग्गो समुद्दपालो इणमब्बवी ।
अहोऽसुभाण कम्माणं निज्जाणं पावगं इमं ॥ ९ ॥

संबुद्धो सो तहिं भगवं परमसंवेगमागओ ।
आपुच्छऽम्मापियरो पव्वए अणगारियं ॥ १० ॥

जहित्तु सग्गन्थमहाकिलेसं महन्तमोहं कसिणं भयावहं ।
परियायधम्मं चऽभिरोयएज्जा वयाणि सीलाणि परीसहे य ॥ ११ ॥

अहिंस सच्चं च अतेणगं च तत्तो य बम्भं अपरिग्गहं च।
पडिवज्जिया पंच महव्वयाणि चरिज्ज धम्मं जिणदेसियं विदू॥ ११॥

सव्वेहिं भूएहिं दयाणुकम्पी खन्तिक्खमे संजयबम्भयारी।
सावज्जजोगं परिवज्जयन्तो चरिज्ज भिक्खू सुसमाहिइन्दिए॥ १३॥

कालेण कालं विहरेज्ज रट्ठे बलाबलं जाणिय अप्पणो य।
सीहो व सद्देण न संतसेज्जा वयजोग सुच्चा न असब्भमाहु॥ १४॥

उवेहमाणो उ परिव्वएज्जा पियमप्पियं सव्व तितिक्खएज्जा।
न सव्व सव्वत्थऽभिरोयएज्जा न यावि पूयं गरहं च संजए॥ १५॥

अणेगछन्दामिह माणवेहिं जे भावओ संपगरेइ भिक्खू।
भयभेरवा तत्थ उइन्ति भीमा दिव्वा मणुस्सा अदुवा तिरिच्छा॥ १६॥

परीसहा दुव्विसहा अणेगे सीयन्ति जत्था बहुकायरा नरा।
से तत्थ पत्ते न वहिज्ज भिक्खू संगामसीसे इव नागराया॥ १७॥

सीओसिणा दंसमसा य फासा आयंका विविहा फुसन्ति देहं।
अकुक्कुओ तत्थऽहियासएज्जा रयाइं खेवेज्ज पुरेकडाइं॥ १८॥

पहाय रागं च तहेव दोसं मोहं च भिक्खू सयया वियक्खणो।
मेरु व्व वाएण अकम्पमाणो परीसहे आयगुत्ते सहेज्जा॥ १९॥

अणुन्नए नावणए महेसी न यावि पूयं गरहं च संजए।
स उज्जुभावं पडिवज्ज संजए निव्वाणमग्गं विरए उवेइ॥ २०॥

अरइरइसहे पहीणसंथवे विरए आयहिए पहाणवं।
परमट्ठपएहिं चिट्ठई छिन्नसोए अममे अकिंचणे॥ २१॥

विवित्तलयणाइं भएज्ज ताई निरोवलेवाइं असंथडाइं।
इसीहि चिण्णाइं महायसेहिं काएण फासेज्ज परीसहाइं॥ २२॥

स नाणनाणोवगए महेसी अणुत्तरं चरिउं धम्मसंचयं।
अणुत्तरे नाणधरे जसंसी ओभासई सूरिए वन्तलिक्खे॥ २३॥

दुविहं खवेऊण य पुण्णपावं निरंगणे सव्वओ विप्पमुक्के।
तरित्ता समुद्दं व महाभवोघं समुद्दपाले अपुणागमं गए॥ २४॥

॥ त्ति बेमि॥

॥ समुद्दपालीयं समत्तं॥ २१॥

।। रहनेमिज्जं द्वाविंशं अध्ययनम् ।।

सोरियपुरंमि नयरे आसि राया महिड्ढिए ।
वसुदेवे त्ति नामेणं रायलक्खणसंजुए ॥ १ ॥

तस्स भज्जा दुवे आसी रोहिणी देवई तहा ।
तासिं दोण्हं दुवे पुत्ता इट्ठा रामकेसवा ॥ २ ॥

सोरियपुरंमि नयरे आसी राया महिड्ढिए ।
समुद्दविजए नामं रायलक्खणसंजुए ॥ ३ ॥

तस्स भज्जा सिवा नाम तीसे पुत्तो महायसो ।
भगवं अरिट्ठनेमि त्ति लोगनाहे दमीसरे ॥ ४ ॥

सोऽरिट्ठनेमिनामो उ लक्खणस्सरसंजुओ ।
अट्ठसहस्सलक्खणधरो गोयमो कालगच्छवी ॥ ५ ॥

वज्जरिसहसंघयणो समचउरंसो झसोयरो ।
तस्स राईमई कन्नं भज्जं जायइ केसवो ॥ ६ ॥

अह सा रायवरकन्ना सुसीला चारुपेहिणी ।
सव्वलक्खणसंपन्ना विज्जुसोयामणिप्पभा ॥ ७ ॥

अहाह जणओ तीसे वासुदेवं महिड्ढियं ।
इहागच्छऊ कुमारो जा से कन्नं दलामि हं ॥ ८ ॥

सव्वोसहीहि ण्हविओ कयकोउयमंगलो ।
दिव्वजुयलपरिहिओ आभरणेहिं विभूसिओ ॥ ९ ॥

मत्तं च गन्धहत्थिं वासुदेवस्स जेट्ठगं ।
आरूढो सोहए अहियं सिरे चूडामणी जहा ॥ १० ॥

अह ऊसिएण छत्तेण चामराहि य सोहिए ।
दसारचक्केण य सो सव्वओ परिवारिओ ॥ ११ ॥

चउरंगिणीए सेनाए रइयाए जहक्कमं ।
तुरियाण सन्निनाएण दिव्वेण गगणं फुसे ॥ १२ ॥

एयारिसाए इड्ढीए जुईए उत्तिमाए य ।
नियगाओ भवणाओ निज्जाओ वण्हिपुंगवो ॥ १३ ॥

अह सो तत्थ निज्जन्तो दिस्स पाणे भयद्दुए ।
वाडेहिं पंजरेहिं च सन्निरुद्धे सुदुक्खिए ॥ १४ ॥

जीवियन्तं तु संपत्ते मंसट्ठा भक्खियव्वए ।
पासेत्ता से महापन्ने सारहिं इणमब्बवी ॥ १५ ॥

कस्स अट्ठा इमे पाणा एए सव्वे सुहेसिणो ।
वाडेहिं पंजरेहिं च सन्निरुद्धा य अच्छहिं ॥ १६ ॥

अह सारही तओ भणइ एए भद्दा उ पाणिणो ।
तुज्झं विवाहकज्जंमि भोयावेउं बहुं जणं ॥ १७ ॥

सोऊण तस्स वयणं बहुपाणिविणासणं ।
चिन्तेइ से महापन्ने साणुक्कोसे जिएहि उ ॥ १८ ॥

जइ मज्झ कारणा एए हम्मन्ति सुबहू जिया ।
न मे एयं तु निस्सेसं परलोगे भविस्सई ॥ १९ ॥

सो कुण्डलाण जुयलं सुत्तगं च महायसो ।
आभरणाणि य सव्वाणि सारहिस्स पणामए ॥ २० ॥

मणपरिणामे य कए देवा य जहोइयं समोइण्णा ।
सव्विड्ढीए सपरिसा निक्खमणं तस्स काउं जे ॥ २१ ॥

देवमणुस्सपरिवुडो सीयारयणं तओ समारूढो ।
निक्खमिय बारगाओ रेवयर्यंमि ट्ठिओ भगवं ॥ २२ ॥

उज्जाणं संपत्तो ओइण्णो उत्तिमाओ सीयाओ ।
साहस्सीए परिवुडो अह निक्खमई उ चित्ताहिं ॥ २३ ॥

अह से सुगन्धगन्धिए तुरियं मउकुंचिए ।
सयमेव लुंचई केसे पंचमुट्ठीहिं समाहिओ ॥ २४ ॥

वासुदेवो य णं भणइ लुत्तकेसं जिइन्दियं ।
इच्छियमणोरहे तुरियं पावसू तं दमीसरा ॥ २५ ॥

नाणेणं दंसणेणं च चरित्तेण तवेण य ।
खन्तीए मुत्तीए वड्ढमाणो भवाहि य ॥ २६ ॥

एवं ते रामकेसवा दसारा य बहू जणा ।
अरिट्ठणेमिं वन्दित्ता अभिगया बारगापुरिं ॥ २७ ॥

सोऊण रायकन्ना पव्वज्जं सा जिणस्स उ ।
नीहासा य निराणन्दा सोगेण उ समुत्थिया ॥ २८ ॥

राईमई विचिन्तेइ धिरत्थु मम जीवियं ।
जा हं तेण परिच्चत्ता सेयं पव्वइउं मम ॥ २९ ॥

अह सा भमरसन्निभे कुच्चफणगसाहिए ।
सयमेव लुंचई केसे धिइमन्ता ववस्सिया ॥ ३० ॥

वासुदेवो य णं भणइ लुत्तकेसं जिइन्दियं ।
संसारसागरं घोरं तर कन्ने लहुं लहुं ॥ ३१ ॥

सा पव्वइया सन्ती पव्वावेसी तहिं बहुं ।
सयणं परियणं चेव सीलवन्ता बहुस्सुया ॥ ३२ ॥

गिरिं रेवययं जन्ती वासेणुल्ला उ अन्तरा ।
वासन्ते अन्धयारंमि अन्तो लयणस्स सा ठिया ॥ ३३ ॥

चीवराइं विसारन्ती जहाजाय त्ति पासिया ।
रहनेमी भग्गचित्तो पच्छा दिट्ठो य तीइ वि ॥ ३४ ॥

भीया य सा तहिं दट्ठुं एगन्ते संजयं तयं ।
बाहाहिं काउं संगोप्फं वेवमाणी निसीयई ॥ ३५ ॥

अह सो वि रायपुत्तो समुद्दविजयंगओ ।
भीयं पवेवियं दट्ठुं इमं वक्कं उदाहरे ॥ ३६ ॥

रहनेमी अहं भद्दे सुरूवे चारुभासिणि ।
ममं भयाहि सुयणू न ते पीला भविस्सई ॥ ३७ ॥

एहि ता भुंजिमो भोए माणुस्सं खु सुदुल्लहं ।
भुत्तभोगी पुणो पच्छा जिणमग्गं चरिस्सिमो ॥ ३८ ॥

दट्ठूण रहनेमिं तं भग्गुज्जोयपराइयं ।
राईमई असम्भन्ता अप्पाणं संवरे तहिं ॥ ३९ ॥

अह सा रायवरकन्ना सुट्ठिया नियमव्वए ।
जाई कुलं च सीलं च रक्खमाणी तयं वए ॥ ४० ॥

जइ सि रूवेण वेसमणो ललिएण नलकूबरो ।
तहा वि ते न इच्छामि जइ सि सक्खं पुरन्दरो ॥ ४१ ॥

धिरत्थु ते जसोकामी जो तं जीवियकारणा ।
वन्तं इच्छसि आवाउं सेयं ते मरणं भवे ॥ ४२ ॥

अहं च भोगरायस्स तं च सि अन्धगवण्हिणो ।
मा कुले गन्धणा होमो संजमं निहुओ चर ॥ ४३ ॥

जइ तं काहिसि भावं जा जा दच्छसि नारिओ ।
वायाविद्धो व्व हडो अट्ठिअप्पा भविस्ससि ॥ ४४ ॥

गोवालो भण्डवालो वा जहा तद्दव्वऽणिस्सरो ।
एवं अणिस्सरो तं पि सामण्णस्स भविस्ससि ॥ ४५ ॥

तीसे सो वयणं सोच्चा संजयाए सुभासियं ।
अंकुसेण जहा नागो धम्मे संपडिवाइओ ॥ ४६ ॥

मणगुत्तो वयगुत्तो कायगुत्तो जिइन्दिओ ।
सामण्णं निच्चलं फासे जावज्जीवं दढव्वओ ॥ ४७ ॥

उग्गं तवं चरित्ताणं जाया दोण्णि वि केवली ।
सव्वं कम्मं खवित्ताणं सिद्धिं पत्ता अणुत्तरं ॥ ४८ ॥

एवं करेन्ति संबुद्धा पण्डिया पवियक्खणा ।
विणियट्टन्ति भोगेसु जहा सो पुरिसोत्तमो ॥ ४९ ॥ त्ति बेमि ॥

॥ रहनेमिज्जं समत्तं ॥ २२ ॥

॥ केसिगोयमिज्जं त्रयोविंशं अध्ययनम् ॥

जिणे पासे त्ति नामेण अरहा लोगपूइओ ।
संबुद्धप्पा य सव्वन्नू धम्मतित्थयरे जिणे ॥ १ ॥

तस्स लोगपईवस्स आसि सीसे महायसे ।
केसीकुमारसमणे विज्जाचरणपारगे ॥ २ ॥

ओहिनाणसुए बुद्धे सीससंघसमाउले ।
गामाणुगामं रीयन्ते सावत्थिं पुरमागए ॥ ३ ॥

तिन्दुयं नाम उज्जाणं तम्मी नगरमण्डले ।
फासुए सिज्जसंथारे तत्थ वासमुवागए ॥ ४ ॥

अह तेणेव कालेणं धम्मतित्थयरे जिणे ।
भगवं वद्धमाणो त्ति सव्वलोगम्मि विस्सुए ॥ ५ ॥

तस्स लोगपईवस्स आसि सीसे महायसे ।
भगवं गोयमे नामं विज्जाचरणपारगे ॥ ६ ॥

बारसंगविऊ बुद्धे सीससंघसमाउले ।
गामाणुगामं रीयन्ते से वि सावत्थिमागए ॥ ७ ॥

कोट्ठगं नाम उज्जाणं तम्मी नयरमण्डले ।
फासुए सिज्जसंथारे तत्थ वासमुवागए ॥ ८ ॥

केसीकुमारसमणे गोयमे य महायसे ।
उभओ वि तत्थ विहरिंसु अल्लीणा सुसमाहिया ॥ ९ ॥

उभओ सीससंघाणं संजयाणं तवस्सिणं ।
तत्थ चिन्ता समुप्पन्ना गुणवन्ताण ताइणं ॥ १० ॥

केरिसो वा इमो धम्मो इमो धम्मो व केरिसो ।
आयारधम्मपणिही इमा वा सा व केरिसी ॥ ११ ॥

चाउज्जामो य जो धम्मो जो इमो पंचसिक्खिओ ।
देसिओ वद्धमाणेण पासेण य महामुणी ॥ १२ ॥

अचेलगो य जो धम्मो जो इमो सन्तरुत्तरो ।
एगकज्जपवन्नाणं विसेसे किं नु कारणं ॥ १३ ॥

अह ते तत्थ सीसाणं विन्नाय पवितक्कियं ।
समागमे कयमई उभओ केसिगोयमा ॥ १४ ॥

गोयमे पडिरूवन्नू सीससंघसमाउले ।
जेट्ठं कुलमवेक्खन्तो तिन्दुयं वणमागओ ॥ १५ ॥

केसीकुमारसमणे गोयमं दिस्समागयं ।
पडिरूवं पडिवत्तिं सम्मं संपडिवज्जई ॥ १६ ॥

पलालं फासुयं तत्थ पंचमं कुसतणाणि य ।
गोयमस्स निसेज्जाए खिप्पं संपणामए ॥ १७ ॥

केसीकुमारसमणे गोयमे य महायसे ।
उभओ निसण्णा सोहन्ति चन्दसूरसमप्पभा ॥ १८ ॥

समागया बहू तत्थ पासण्डा कोउगा मिगा ।
गिहत्थाणं चउणेगाओ साहस्सीओ समागया ॥ १९ ॥

देवदाणवगन्धव्वा जक्खरक्खसकिन्नरा ।
अदिस्साणं च भूयाणं आसी तत्थ समागमो ॥ २० ॥

पुच्छामि ते महाभाग केसी गोयममब्बवी ।
तओ केसिं बुवन्तं तु गोयमो इणमब्बवी ॥ २१ ॥

पुच्छ भन्ते जहिच्छं ते केसिं गोयममब्बवी ।
तओ केसी अणुन्नाए गोयमं इणमब्बवी ॥ २२ ॥

चाउज्जामो य जो धम्मो जो इमो पंचसिक्खिओ।
देसिओ वद्धमाणेण पासेण य महामुणी ॥ २३ ॥

एगकज्जपवन्नाणं विसेसे किं नु कारणं।
धम्मे दुविहे मेहावि कहं विप्पच्चओ न ते ॥ २४ ॥

तओ केसिं बुवन्तं तु गोयमो इणमब्बवी।
पन्ना समिक्खए धम्मतत्तं तत्तविणिच्छियं ॥ २५ ॥

पुरिमा उज्जुजडा उ वंकजडा य पच्छिमा।
मज्झिमा उज्जुपन्ना उ तेण धम्मे दुहा कए ॥ २६ ॥

पुरिमाणं दुव्विसोज्झो उ चरिमाणं दुरणुपालओ।
कप्पो मज्झिमगाणं तु सुविसोज्झो सुपालओ ॥ २७ ॥

साहु गोयम पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो।
अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा ॥ २८ ॥

अचेलगो य जो धम्मो जो इमो सन्तरुत्तरो।
देसिओ वद्धमाणेण पासेण य महामुणी ॥ २९ ॥

एगकज्जपवन्नाणं विसेसे किं नु कारणं।
लिंगे दुविहे मेहावी कहं विप्पच्चओ न ते ॥ ३० ॥

केसिमेवं बुवाणं तु गोयमो इणमब्बवी।
विन्नाणेण समागम्म धम्मसाहणमिच्छियं ॥ ३१ ॥

पच्चयत्थं च लोगस्स नाणाविहविगप्पणं।
जत्तत्थं गहणत्थं च लोगे लिंगपओयणं ॥ ३२ ॥

अह भवे पइन्ना उ मोक्खसब्भूयसाहणा।
नाणं च दंसणं चेव चरित्तं चेव निच्छए ॥ ३३ ॥

साहु गोयम पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो।
अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा ॥ ३४ ॥

अणेगाणं सहस्साणं मज्झे चिट्ठसि गोयमा।
ते य ते अहिगच्छन्ति कहं ते निज्जिया तुमे ॥ ३५ ॥

एगे जिए जिया पंच पंच जिए जिया दस।
दसहा उ जिणित्ताणं सव्वसत्तू जिणामहं ॥ ३६ ॥

सत्तू य इइ के वुत्ते केसी गोयममब्बवी।
तओ केसिं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥ ३७ ॥

एगप्पा अजिए सत्तू कसाया इन्दियाणि य।
ते जिणित्तु जहानायं विहरामि अहं मुणी ॥ ३८ ॥

साहु गोयम पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो।
अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा ॥ ३९ ॥

दीसन्ति बहवे लोए पासबद्धा सरीरिणो।
मुक्कपासो लहुब्भूओ कहं विहरसी मुणी ॥ ४० ॥

ते पासे सव्वसो छित्ता निहन्तूण उवायओ।
मुक्कपासो लहुब्भूओ विहरामि अहं मुणी ॥ ४१ ॥

पासा य इइ के वुत्ता केसी गोयममब्बवी।
केसिमेवं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥ ४२ ॥

रागद्दोसादओ तिव्वा नेहपासा भयंकरा।
ते छिन्दित्ता जहानायं विहरामि जहक्कमं ॥ ४३ ॥

साहु गोयम पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो।
अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा ॥ ४४ ॥

अन्तोहियसंभूया लया चिट्ठइ गोयमा।
फलेइ विसभक्खीणि सा उ उद्धरिया कहं ॥ ४५ ॥

तं लयं सव्वसो छित्ता उद्धरित्ता समूलियं।
विहरामि जहानायं मुक्को मि विसभक्खणा ॥ ४६ ॥

लया य इइ का वुत्ता केसी गोयममब्बवी।
केसिमेवं बुवन्तं तु गोयमो इणमब्बवी ॥ ४७ ॥

भवतण्हा लया वुत्ता भीमा भीमफलोदया।
तमुच्छित्तु जहानायं विहरामि जहासुहं ॥ ४८ ॥

साहु गोयम पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो।
अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा ॥ ४९ ॥

संपज्जलिया घोरा अग्गी चिट्ठइ गोयमा।
जे डहन्ति सरीरत्था कहं विज्झाविया तुमे ॥ ५० ॥

महामेहप्पसूयाओ गिज्झ वारि जलुत्तमं।
सिंचामि सययं देहं सित्ता नो व डहन्ति मे ॥ ५१ ॥

अग्गी य इइ के वुत्ता केसी गोयममब्बवी।
केसिमेवं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥ ५२ ॥

कसाया अग्गिणो वुत्ता सुयसीलतवो जलं।
सुयधाराभिहया सन्ता भिन्ना हु न डहन्ति मे॥ ५३॥

साहु गोयम पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो।
अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा॥ ५४॥

अयं साहसिओ भीमो दुट्ठस्सो परिधावई।
जंसि गोयम आरूढो कहं तेण न हीरसि॥ ५५॥

पधावन्तं निगिण्हामि सुयरस्सीसमाहियं।
न मे गच्छइ उम्मग्गं मग्गं च पडिवज्जई॥ ५६॥

आसे य इइ के वुत्ते केसी गोयममब्बवी।
केसिमेवं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी॥ ५७॥

मणो साहसिओ भीमो दुट्ठस्सो परिधावई।
तं सम्मं तु निगिण्हामि धम्मसिक्खाए कन्थगं॥ ५८॥

साहु गोयम पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो।
अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा॥ ५९॥

कुप्पहा बहवो लोए जेहिं नासन्ति जन्तुणो।
अद्धाणे कह वट्टन्ते तं न नाससि गोयमा॥ ६०॥

जे य मग्गेण गच्छन्ति जे य उम्मग्गपट्ठिया।
ते सव्वे विइया मज्झं तो न नस्सामहं मुणी॥ ६१॥

मग्गे य इइ के वुत्ते केसी गोयममब्बवी।
केसिमेवं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी॥ ६२॥

कुप्पवयणपासण्डी सव्वे उम्मग्गपट्ठिया।
सम्मग्गं तु जिणक्खायं एस मग्गे हि उत्तमे॥ ६३॥

साहु गोयम पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो।
अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा॥ ६४॥

महाउदगवेगेणं वुज्झमाणाण पाणिणं।
सरणं गई पइट्ठा य दीवं कं मन्नसी मुणी॥ ६५॥

अत्थि एगो महादीवो वारिमज्झे महालओ।
महाउदगवेगस्स गई तत्थ न विज्जई॥ ६६॥

दीवे य इइ के वुत्ते केसी गोयममब्बवी।
केसिमेवं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी॥ ६७॥

जरामरणवेगेणं वुज्झमाणाण पाणिणं ।
धम्मो दीवो पइट्ठा य गई सरणमुत्तमं ॥ ६८ ॥

साहु गोयम पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा ॥ ६९ ॥

अण्णवंसि महोहंसि नावा विपरिधावई ।
जंसि गोयममारूढो कहं पारं गमिस्ससि ॥ ७० ॥

जा उ अस्सावणी नावा न सा पारस्स गामिणी ।
जा निरस्सावणी नावा सा उ पारस्स गामिणी ॥ ७१ ॥

नावा य इइ का वुत्ता केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेवं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥ ७२ ॥

सरीरमाहु नाव त्ति जीवो वुच्चइ नाविओ ।
संसारो अण्णवो वुत्तो जं तरन्ति महेसिणो ॥ ७३ ॥

साहु गोयम पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा ॥ ७४ ॥

अन्धयारे तमे घोरे चिट्ठन्ति पाणिणो बहू ।
को करिस्सइ उज्जोयं सव्वलोगंमि पाणिणं ॥ ७५ ॥

उग्गओ विमलो भाणू सव्वलोगप्पभंकरो ।
सो करिस्सइ उज्जोयं सव्वलोगंमि पाणिणं ॥ ७६ ॥

भाणू य इइ के वुत्ते केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेवं बुवन्तं तु गोयमो इणमब्बवी ॥ ७७ ॥

उग्गओ खीणसंसारो सव्वन्नू जिणभक्खरो ।
सो करिस्सइ उज्जोयं सव्वलोयंमि पाणिणं ॥ ७८ ॥

साहु गोयम पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा ॥ ७९ ॥

सारीरमाणसे दुक्खे बज्झमाणाण पाणिणं ।
खेमं सिवमणाबाहं ठाणं किं मन्नसी मुणी ॥ ८० ॥

अत्थि एगं धुवं ठाणं लोगग्गंमि दुरारुहं ।
जत्थ नत्थि जरा मच्चू वाहिणो वेयणा तहा ॥ ८१ ॥

ठाणे य इइ के वुत्ते केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेवं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥ ८२ ॥

निव्वाणं ति अबाहं ति सिद्धी लोगग्गमेव य।
खेमं सिवं अणाबाहं जं चरन्ति महेसिणो॥ ८३॥

तं ठाणं सासयं वासं लोगग्गंमि दुरारुहं।
जं संपत्ता न सोयन्ति भवोहन्तकरा मुणी॥ ८४॥

साहु गोयम पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो।
नमो ते संसयाईय सव्वसुत्तमहोयही॥ ८५॥

एवं तु संसए छिन्ने केसी घोरपरक्कमे।
अभिवन्दित्ता सिरसा गोयमं तु महायसं॥ ८६॥

पंचमहव्वयधम्मं पडिवज्जइ भावओ।
पुरिमस्स पच्छिमंमी मग्गे तत्थ सुहावहे॥ ८७॥

केसीगोयमओ निच्चं तम्मि आसि समागमे।
सुयसीलसमुक्कंसो महत्थऽत्थविणिच्छओ॥ ८८।

तोसिया परिसा सव्वा सम्मग्गं समुवट्ठिया।
संथुया ते पसीयन्तु भयवं केसिगोयमे॥ ८९॥ त्ति बेमि॥

॥ केसिगोयमिज्जं समत्तं॥ २३॥

॥ समिईओ चतुर्विंशं अध्ययनम् ॥

अट्ठ पवयणमायाओ समिई गुत्ती तहेव य।
पंचेव य समिईओ तओ गुत्तीओ आहिया॥ १॥

इरियाभासेसणादाणे उच्चारे समिई इय॥
मणगुत्ती वयगुत्ती कायगुत्ती य अट्ठमा॥ २॥

एयाओ अट्ठ समिईओ समासेण वियाहिया।
दुवालसंगं जिणक्खायं मायं जत्थ उ पवयणं॥ ३॥

आलम्बणेण कालेण मग्गेण जयणाइ य।
चउकारणपरिसुद्धं संजए इरियं रिए॥ ४॥

तत्थ आलंबणं नाणं दंसणं चरणं तहा।
काले य दिवसे वुत्ते मग्गे उप्पहवज्जिए॥ ५॥

दव्वओ खेत्तओ चेव कालओ भावओ तहा ।
जायणा चउव्विहा वुत्ता तं मे कित्तयओ सुण ॥ ६ ॥

दव्वओ चक्खुसा पेहे जुगमित्तं च खेत्तओ ।
कालओ जाव रीएज्जा उवउत्ते य भावओ ॥ ७ ॥

इन्दियत्थे विवज्जित्ता सज्झायं चेव पंचहा ।
तम्मुत्ती तप्पुरक्कारे उवउत्ते रियं रिए ॥ ८ ॥

कोहे माणे य मायाए लोभे य उवउत्तया ।
हासे भए मोहरिए विगहासु तहेव च ॥ ९ ॥

एयाइं अट्ठ ठाणाइं परिवज्जित्तु संजए ।
असावज्जं मियं काले भासं भासेज्ज पन्नवं ॥ १० ॥

गवेसणाए गहणे य परिभोगेसणाय जा ।
आहारोवहिसेज्जाए एए तिन्नि विसोहए ॥ ११ ॥

उग्गमुप्पायणं पढमे बीए सोहेज्ज एसणं ।
परिभोयंमि चउक्कं विसोहेज्ज जयं जई ॥ १२ ॥

ओहोवहोवग्गहियं भण्डगं दुविहं मुणी ।
गिण्हन्तो निक्खिवन्तो वा पउंजेज्ज इमं विहिं ॥ १३ ॥

चक्खुसा पडिलेहित्ता पमज्जेज्ज जयं जई ।
आइए निक्खिवेज्जा वा दुहओ वि समिए सया ॥ १४ ॥

उच्चारं पासवणं खेलं सिंघाणजल्लियं ।
आहारं उवहिं देहं अन्नं वावि तहाविहं ॥ १५ ॥

अणावायमसंलोए अणावाए चेव होइ संलोए ।
आवायमसंलोए आवाए चेय संलोए ॥ १६ ॥

अणावायमसंलोए परस्सऽणुवघाइए ।
समे अज्झुसिरे यावि अचिरकालकयंमि य ॥ १७ ॥

वित्थिण्णे दूरमोगाढे नासन्ने बिलवज्जिए ।
तसपाणबीयरहिए उच्चाराईणि वोसिरे ॥ १८ ॥

एयाओ पंच समिईओ समासेण वियाहिया ।
एत्तो य तओ गुत्तीओ वोच्छामि अणुपुव्वसो ॥ १९ ॥

सच्चा तहेव मोसा य सच्चमोसा तहेव य ।
चउत्थी असच्चमोसा य मणगुत्तीओ चउव्विहा ॥ २० ॥

संरम्भसमारम्भे आरम्भे य तहेव य ।
मणं पवत्तमाणं तु नियत्तेज्ज जयं जई ॥ २१ ॥

सच्चा तहेव मोसा य सच्चमोसा तहेव य ।
चउत्थी असच्चमोसा य वइगुत्ती चउव्विहा ॥ २२ ॥

संरम्भसमारम्भे आरम्भे य तहेव य ।
वयं पवत्तमाणं तु नियत्तेज्ज जयं जई ॥ २३ ॥

ठाणे निसीयणे चेव तहेव य तुयट्टणे ।
उल्लंघणपल्लंघणे इन्दियाण य जुंजणे ॥ २४ ॥

संरम्भसमारम्भे आरम्भे य तहेव य ।
कायं पवत्तमाणं तु नियत्तेज्ज जयं जई ॥ २५ ॥

एयाओ पंच समिईओ चरणस्स य पवत्तणे ।
गुत्ती नियत्तणे वुत्ता असुभत्थेसु सव्वसो ॥ २६ ॥

एसा पवयणमाया जे सम्मं आयरे मुणी ।
से खिप्पं सव्वसंसारा विप्पमुच्चइ पण्डिए ॥ २७ ॥ त्ति बेमि ॥

॥ समिईओ समत्ताओ ॥ २४ ॥

॥ जन्नइज्जं पंचविंशं अध्ययनम् ॥

माहणकुलसंभूओ आसि विप्पो महायसो ।
जायाई जमजन्नंमि जयघोसे त्ति नामओ ॥ १ ॥

इन्दियग्गामनिग्गाही मग्गगामी महामुणी ।
गामाणुगामं रीयन्ते पत्ते वाणारसिं पुरिं ॥ २ ॥

वाणारसीए बहिया उज्जाणंमि मणोरमे ।
फासुए सेज्जसंथारे तत्थ वासमुवागए ॥ ३ ॥

अह तेणेव कालेणं पुरीए तत्थ माहणे ।
विजयघोसे त्ति नामेण जन्नं जयइ वेयवी ॥ ४ ॥

अह से तत्थ अणगारे मासक्खमणपारणे ।
विजयघोसस्स जन्नंमि भिक्खमट्ठा उवट्ठिए ॥ ५ ॥

समुवट्ठियं तहिं सन्तं जायगो पडिसेहए।
न हु दाहामि ते भिक्खं भिक्खू जायाहि अन्नओ ॥ ६ ॥

जे य वेयविऊ विप्पा जन्नट्ठा य जे दिया।
जोइसंगविऊ जे य जे य धम्माण पारगा ॥ ७ ॥

जे समत्था समुद्धत्तुं परमप्पाणमेव य।
तेसिं अन्नमिणं देयं भो भिक्खू सव्वकामियं ॥ ८ ॥

सो तत्थ एव पडिसिद्धो जायगेण महामुणी।
न वि रुट्ठो न वि तुट्ठो उत्तिमट्ठगवेसओ ॥ ९ ॥

नऽन्नट्ठं पाणहेउं वा न वि निव्वाहणाय वा।
तेसिं विमोक्खणट्ठाए इणं वयणमब्बवी ॥ १० ॥

नवि जाणासि वेयमुहं नवि जन्नाण जं मुहं।
नक्खत्ताण मुहं जं च जं च धम्माण वा मुहं ॥ ११ ॥

जे समत्था समुद्धत्तुं परमप्पाणमेव य।
न ते तुमं वियाणासि अह जाणासि तो भण ॥ १२ ॥

तस्सऽक्खेवपमोक्खं तु अवयन्तो तहिं दिओ।
सपरिसो पंजली होउं पुच्छई तं महामुणिं ॥ १३ ॥

वेयाणं च मुहं बूहि बूहि जन्नाण जं मुहं।
नक्खत्ताण मुहं बूहि बूहि धम्माण वा मुहं ॥ १४ ॥

जे समत्था समुद्धत्तुं परमप्पाणमेव य।
एयं मे संसयं सव्वं साहू कहसु पुच्छिओ ॥ १५ ॥

अग्गिहुत्तमुहा वेया जन्नट्ठी वेयसां मुहं।
नक्खत्ताण मुहं चन्दो धम्माणं कासवो मुहं ॥ १६ ॥

जहा चन्दं गहाईया चिट्ठन्ती पंजलीउडा।
वन्दमाणा नमंसन्ता उत्तमं मणहारिणो ॥ १७ ॥

अजाणगा जन्नवाई विज्जामाहणसंपया।
गूढा सज्झायतवसा भासच्छन्ना इवऽग्गिणो ॥ १८ ॥

जो लोए बम्भणो वुत्तो अग्गीव महिओ जहा।
सया कुसलसंदिट्ठं तं वयं बूम माहणं ॥ १९ ॥

जो न सज्जइ आगन्तुं पव्वयन्तो न सोयई।
रमए अज्जवयणंमि तं वयं बूम माहणं ॥ २० ॥

जायरूवं जहामट्ठं निद्धन्तमलपावगं।
रागद्दोसभयाईयं तं वयं बूम माहणं ॥ २१ ॥

तवस्सियं किसं दन्तं अवचियमंससोणियं।
सुव्वयं पत्तनिव्वाणं तं वयं बूम माहणं ॥ २२ ॥

तसपाणे वियाणेत्ता संगहेण य थावरे।
जो न हिंसइ तिविहेणं तं वयं बूम माहणं ॥ २३ ॥

कोहा वा जइ वा हासा लोहा वा जइ वा भया।
मुसं न वयई जो उ तं वयं बूम माहणं ॥ २४ ॥

चित्तमन्तमचित्तं वा अप्पं वा जइ वा बहुं।
न गिण्हाइ अदत्तं जो तं वयं बूम माहणं ॥ २५ ॥

दिव्वमाणुसतेरिच्छं जो न सेवइ मेहुणं।
मणसा कायवक्केणं तं वयं बूम माहणं ॥ २६ ॥

जहा पोमं जले जायं नोवलिप्पइ वारिणा।
एवं अलित्तं कामेहिं तं वयं बूम माहणं ॥ २७

अलोलुयं मुहाजीविं अणगारं अकिंचणं।
असंसत्तं गिहत्थेसु तं वयं बूम माहणं ॥ २८ ॥

जहित्ता पुव्वसंजोगं नाइसंगे य बन्धवे।
जो न सज्जइ एएहिं तं वयं बूम माहणं ॥ २९ ॥

पसुबन्धा सव्ववेया जट्ठं च पावकम्मुणा।
न तं तायन्ति दुस्सीलं कम्माणि बलवन्ति हि ॥ ३० ॥

न वि मुण्डिएण समणो न ओंकारेण बम्भणो।
न मुणी रण्णवासेणं कुसचीरेण तावसो ॥ ३१ ॥

समयाए समणो होइ बम्भचेरेण बम्भणो।
नाणेण य मुणी होइ तवेणं होइ तावसो ॥ ३१ ॥

कम्मुणा बम्भणो होइ कम्मुणा होइ खत्तिओ।
वइस्सो कम्मुणा होइ सुद्दो हवइ कम्मुणा ॥ ३३ ॥

एए पाउकरे बुद्धे जेहिं होइ सिणायओ।
सव्वकम्मविनिम्मुक्कं तं वयं बूम माहणं ॥ ३४ ॥

एवं गुणसमाउत्ता जे भवन्ति दिउत्तमा।
ते समत्था उ उद्धत्तुं परमप्पाणमेव य ॥ ३५ ॥

एवं तु संसए छिन्ने विजयघोसे य माहणे ।
समुदाय तओ तं तु जयघोसं महामुणिं ॥ ३६ ॥

तुट्ठे य विजयघोसे इणमुदाहु कयंजली ।
माहणत्तं जहाभूयं सुट्ठु मे उवदंसियं ॥ ३७ ॥

तुम्भे जइया जन्नाणं तुम्भे वेयविऊ विऊ ।
जोइसंगविऊ तुब्भे तुब्भे धम्माण पारगा ॥ ३८ ॥

तुब्भे समत्था उद्धत्तुं परमप्पाणमेव य ।
तमणुग्गहं करेहऽम्हं भिक्खेणं भिक्खुउत्तमा ॥ ३९ ॥

न कज्जं मज्झ भिक्खेण खिप्पं निक्खमसू दिया ।
मा भमिहिसि भयावट्टे घोरे संसारसागरे ॥ ४० ॥

उवलेवो होइ भोगेसु अभोगी नोवलिप्पई ।
भोगी भमइ संसारे अभोगी विप्पमुच्चई ॥ ४१ ॥

उल्लो सुक्को य दो छूढा गोलया मट्टियामया ।
दो वि आवडिया कुड्डे जो उल्लो सोऽत्थ लग्गई ॥ ४२ ॥

एवं लग्गन्ति दुम्मेहा जे नरा कामलालसा ।
विरत्ता उ न लग्गन्ति जहा से सुक्कगोलए ॥ ४३ ॥

एवं से विजयघोसे जयघोसस्स अन्तिए ।
अणगारस्स निक्खन्तो धम्मं सोच्चा अणुत्तरं ॥ ४४ ॥

खवित्ता पुव्वकम्माइं संजमेण तवेण य ।
जयघोसविजयघोसा सिद्धिं पत्ता अणुत्तरं ॥ ४५ ॥ ॥ त्ति बेमि ॥

॥ जन्नइज्जं समत्तं ॥ २५ ॥

॥ सामायारी षड्विंशतितमं अध्ययनम् ॥

सामायारिं पवक्खामि सव्वदुक्खविमोक्खणिं ।
जं चरित्ताण निग्गन्था तिण्णा संसारसागरं ॥ १ ॥

पढमा आवस्सिया नाम बिइया य निसीहिया ।
आपुच्छणा य तइया चउत्थी पडिपुच्छणा ॥ २ ॥

पंचमी छन्दणा नाम इच्छाकारो य छट्ठओ।
सत्तमो मिच्छकारो य तहक्कारो य अट्ठमो॥ ३॥

अब्भुट्ठाणं च नवमं दसमी उवसंपदा।
एसा दसंगा साहूणं सामायारी पवेइया॥ ४॥

गमणे आवस्सियं कुज्जा ठाणे कुज्जा निसीहियं।
आपुच्छणं सयंकरणे परकरणे पडिपुच्छणा॥ ५॥

छन्दणा दव्वजाएणं इच्छाकारो य सारणे।
मिच्छाकारो य निन्दाए तहक्कारो पडिस्सुए॥ ६॥

अब्भुट्ठाणं गुरुपूया अच्छणे उवसंपदा।
एवं दुपंचसंजुत्ता सामायारी पवेइया॥ ७॥

पुव्विल्लंमि चउब्भाए आइच्चंमि समुट्ठिए।
भण्डयं पडिलेहित्ता वन्दित्ता य तओ गुरुं॥ ८॥

पुच्छिज्ज पंजलिउडो किं कायव्वं मए इहं।
इच्छं निओइउं भन्ते वेयावच्चे व सज्झाए॥ ९॥

वेयावच्चे निउत्तेणं कायव्वं अगिलायओ।
सज्झाए वा निउत्तेण सव्वदुक्खविमोक्खणे॥ १०॥

दिवसस्स चउरो भागे भिक्खू कुज्जा वियक्खणो।
तओ उत्तरगुणे कुज्जा दिणभागेसु चउसु वि॥ ११॥

पढमं पोरिसिं सज्झायं बीयं झाणं झियायई।
तइयाए भिक्खायरियं पुणो चउत्थीए सज्झायं॥ १२॥

आसाढे मासे दुपया पोसे मासे चउप्पया।
चित्तासोएसु मासेसु तिपया हवइ पोरिसी॥ १३॥

अंगुलं सत्तरत्तेणं पक्खेण च दुरंगुलं।
वड्ढए हायए वावी मासेणं चउरंगुलं॥ १४॥

आसाढबहुलपक्खे भद्दवए कत्तिए य पोसे य।
फग्गुणवइसाहेसु य बोद्धव्वा ओमरत्ताओ॥ १५॥

जेट्ठामूले आसाढसावणे छहिं अंगुलेहिं पडिलेहा।
अट्ठहिं बीयतइयंमि तइए दस अट्ठहिं चउत्थे॥ १६॥

रत्तिं पि चउरो भागे भिक्खू कुज्जा वियक्खणो।
तओ उत्तरगुणे कुज्जा राइभाएसु चउसु वि॥ १७॥

पढमं पोरिसिं सज्झायं बीयं झाणं झियायई ।
तइयाए निद्दमोक्खं तु चउत्थी भुज्जो वि सज्झायं ॥ १८ ॥

जं नेइ जया रत्तिं नक्खत्तं तंमि नहचउब्भाए ।
संपत्ते विरमेज्ज: सज्झायं पओसकालम्मि ॥ १९ ॥

तम्मेव य नक्खत्ते गयणचउब्भागसावसेसंमि ।
वेरत्तियं पि कालं पडिलेहित्ता मुणी कुज्जा ॥ २० ॥

पुव्विल्लंमि चउब्भाए पडिलेहित्ताण भण्डयं ।
गुरुं वन्दित्तु सज्झायं कुज्जा दुक्खविमोक्खणं ॥ २१ ॥

पोरिसीए चउब्भाए वन्दित्ताण तओ गुरुं ।
अपडिक्कमित्ता कालस्स भायणं पडिलेहए ॥ २२ ॥

मुहपोत्तिं पडिलेहित्ता पडिलेहिज्ज गोच्छगं ।
गोच्छगलइयंगुलिओ वत्थाइं पडिलेहए ॥ २३ ॥

उड्ढं थिरं अतुरियं पुव्वं ता वत्थमेव पडिलेहे ।
तो बिइयं पप्फोडे तइयं च पुणो पमज्जिज्जा ॥ २४ ॥

अणच्चावियं अवलियं अणाणुबन्धिं अमोसलिं चेव ।
छप्पुरिमा नव खोडा पाणीपाणिविसोहणं ॥ २५ ॥

आरभडा सम्मद्दा वज्जेयव्वा य मोसली तइया ।
पप्फोडणा चउत्थी विक्खित्ता वेइया छट्ठी ॥ २६ ॥

पसिढिलपलम्बलोला एगा मोसा अणेगरूवधुणा ।
कुणइ पमाणिपमायं संकियगणणोवगं कुज्जा ॥ २७ ॥

अणूणाइरित्तपडिलेहा अविवच्चासा तहेव य ।
पढमं पयं पसत्थं सेसाणि य अप्पसत्थाइं ॥ २८ ॥

पडिलेहणं कुणन्तो मिहोकहं कुणइ जणवयकहं वा ।
देइ व पच्चक्खाणं वाएइ सयं पडिच्छइ वा ॥ २९ ॥

पुढवी-आउक्काए तेऊ-वाऊ-वणस्सइ-तसाणं ।
पडिलेहणापमत्तो छण्हं पि विराहओ होइ ॥ ३० ॥

पुढवी-आउक्काए तेऊ-वाऊ-वणस्सइ-तसाणं ।
पडिलेहणाआउत्तो छण्हं संरक्खओ होइ ॥ ३१ ॥

तइयाए पोरिसीए भत्तं पाणं गवेसए ।
छण्हं अन्नयरागम्मि कारणंमि समुट्ठिए ॥ ३२ ॥

वेयण-वेयावच्चे इरियट्ठाए य संजमट्ठाए ।
तह पाणवत्तियाए छट्ठं पुण धम्मचिन्ताए ॥ ३३ ॥

निग्गन्थो धिइमन्तो निग्गन्थी वि न करेज्ज छहिं चेव ।
ठाणेहिं उ इमेहिं अणइक्कमणा य से होइ ॥ ३४ ॥

आयंके उवसग्गे तितिक्खया बम्भचेरगुत्तीसु ।
पाणिदया तवहेउं सरीरवोच्छेयणट्ठाए ॥ ३५ ॥

अवसेसं भण्डगं गिज्झ चक्खुसा पडिलेहए ।
परमद्धजोयणाओ विहारं विहरए मुणी ॥ ३६ ॥

चउत्थीए पोरिसीए निक्खिवित्ताण भायणं ।
सज्झायं च तओ कुज्जा सव्वभावविभावणं ॥ ३७ ॥

पोरिसीए चउब्भाए वन्दित्ताण तओ गुरुं ।
पडिक्कमित्ता कालस्स सेज्जं तु पडिलेहए ॥ ३८ ॥

पासवणुच्चारभूमिं च पडिलेहिज्ज जयं जई ।
काउस्सग्गं तओ कुज्जा सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥ ३९ ॥

देवसियं च अईयारं चिन्तिज्जा अणुपुव्वसो ।
नाणंमि दंसणे चेव चरित्तम्मि तहेव य ॥ ४० ॥

पारियकाउस्सग्गो वन्दित्ताण तओ गुरुं ।
देसियं तु अईयारं आलोएज्ज जहक्कमं ॥ ४१ ॥

पडिक्कमित्तु निस्सल्लो वन्दित्ताण तओ गुरुं ।
काउस्सग्गं तओ कुज्जा सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥ ४२ ॥

पारियकाउस्सग्गो वन्दित्ताण तओ गुरुं ।
थुइमंगलं च काऊण कालं संपडिलेहए ॥ ४३ ॥

पढमं पोरिसिं सज्झायं बीयं झाणं झियायई ।
तइयाए निद्दमोक्खं तु सज्झायं तु चउत्थिए ॥ ४४ ॥

पोरिसीए चउत्थीए कालं तु पडिलेहिया ।
सज्झायं तु तओ कुज्जा अबोहेन्तो असंजए ॥ ४५ ॥

पोरिसीए चउब्भाए वन्दिऊण तओ गुरुं ।
पडिक्कमित्तु कालस्स कालं तु पडिलेहए ॥ ४६ ॥

आगए कायवोस्सग्गे सव्वदुक्खविमोक्खणे ।
काउस्सग्गं तओ कुज्जा सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥ ४७ ॥

राइयं च अईयारं चिन्तिज्ज अणुपुव्वसो ।
नाणंमि दंसणंमि य चरित्तंमि तवंमि य ॥ ४८ ॥

पारियकाउस्सग्गो वन्दित्ताण तओ गुरुं ।
राइयं तु अईयारं आलोएज्ज जहक्कमं ॥ ४९ ॥

पडिक्कमित्तु निस्सल्लो वन्दित्ताण तओ गुरुं ।
काउस्सग्गं तओ कुज्जा सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥ ५० ॥

किं तवं पडिवज्जामि एवं तत्थ विचिन्तए ।
काउस्सग्गं तु पारित्ता वन्दई य तओ गुरुं ॥ ५१ ॥

पारियकाउस्सग्गो वन्दित्ताण तओ गुरुं ।
तवं तु पडिवज्जेज्जा कुज्जा सिद्धाण संथवं ॥ ५२ ॥

एसा सामायारी समासेण वियाहिया ।
जं चरित्ता बहू जीवा तिण्णा संसारसागरं ॥ ५३ ॥ ॥ त्ति बेमि ॥

॥ सामायारी समत्ता ॥ २६ ॥

॥ खलुंकिज्जं सप्तविंशतितमं अध्ययनम् ॥

थेरे गणहरे गग्गे मुणी आसि विसारए ।
आइण्णे गणिभावम्मि समाहिं पडिसंधए ॥ १ ॥

वहणे वहमाणस्स कन्तारं अइवत्तई ।
जोगे वहमाणस्स संसारो अइवत्तई ॥ २ ॥

खलुंके जो उ जोएइ विहम्माणो किलिस्सई ।
असमाहिं च वेएइ तोत्तओ से य भज्जई ॥ ३ ॥

एगं डसइ पुच्छंमि एगं विन्धइऽभिक्खणं ।
एगो भंजइ समिलं एगो उप्पहपट्ठिओ ॥ ४ ॥

एगो पडइ पासेणं निवेसइ निवज्जई ।
उक्कुदइ उप्फिडइ सढे बालगवी वए ॥ ५ ॥

माई मुद्धेण पडइ कुद्धे गच्छइ पडिप्पहं ।
मयलक्खेण चिट्ठई वेगेण य पहावई ॥ ६ ॥

छिन्नाले छिन्दइ सेहिं दुइन्तो भंजए जुगं।
से वि य सुस्सुयाइत्ता उज्जाहित्ता पलायए॥ ७॥

खलुंका जारिसा जोज्जा दुस्सीसा वि हु तारिसा।
जोइया धम्मजाणम्मि भज्जन्ति धिइदुब्बला॥ ८॥

इड्ढीगारविए एगे एगेऽत्थ रसगारवे।
सायागारविए एगे एगे सुचिरकोहणे॥ ९॥

भिक्खालसिए एगे एगे ओमाणभीरुए।
थद्धे एगे अणुसासम्मी हेऊहिं कारणेहि य॥ १०॥

सो वि अन्तरभासिल्लो दोसमेव पकुव्वई।
आयरियाणं तु वयणं पडिकूलेइऽभिक्खणं॥ ११॥

न सा ममं वियाणाइ न य सा मज्झ दाहिई।
निग्गया होहिई मन्ने साहू अन्नोऽत्थ वच्चउ॥ १२॥

पेसिया पलिउंचन्ति ते परियन्ति समन्तओ।
रायवेट्ठिं च मन्नन्ता करेन्ति भिउडिं मुहे॥ १३॥

वाइया संगहिया चेव भत्तपाणेण पोसिया।
जायपक्खा जहा हंसा पक्कमन्ति दिसोदिसिं। १४॥

अह सारही विचिन्तेइ खलुंकेहिं समागओ।
किं मज्झ दुट्ठसीसेहिं अप्पा मे अवसीयई॥ १५॥

जारिसा मम सीसाओ तारिसा गलिगद्दहा।
गलिगद्दहे जहित्ताणं दढं पगिण्हई तवं॥ १६॥

मिउ मद्दवसंपन्नो गम्भीरो सुसमाहिओ।
विहरइ महिं महप्पा सीलभूएण अप्पणा॥ १७॥ त्ति बेमि॥

॥ खलुंकिज्जं समत्तं॥ १७॥

॥ मोक्खमग्गगई अट्ठाविंशतितमं अध्ययनम्॥

मोक्खमग्गगइं तच्चं सुणेह जिणभासियं।
चउकारणसंजुत्तं नाणदंसणलक्खणं॥ १॥

नाणं च दंसणं चेव चरित्तं च तवो तहा ।
एस मग्गो त्ति पन्नत्तो जिणेहिं वरदंसिहिं ॥ २ ॥

नाणं च दंसणं चेव चरित्तं च तवो तहा ।
एयमग्गमणुप्पत्ता जीवा गच्छन्ति सोग्गइं ॥ ३ ॥

तत्थ पंचविहं नाणं सुयं आभिनिबोहियं ।
ओहिनाणं तु तइयं मणनाणं च केवलं ॥ ४ ॥

एयं पंचविहं नाणं दव्वाण य गुणाण य ।
पज्जवाण य सव्वेसिं नाणं नाणीहि दंसियं ॥ ५ ॥

गुणाणमासओ दव्वं एगदव्वस्सिया गुणा ।
लक्खणं पज्जवाणं तु उभओ अस्सिया भवे ॥ ६ ॥

धम्मो अहम्मो आगासं कालो पुग्गल-जन्तवो ।
एस लोगो त्ति पन्नत्तो जिणेहिं वरदंसिहिं ॥ ७ ॥

धम्मो अहम्मो आगासं दव्वं इक्किक्कमाहियं ।
अणन्ताणि य दव्वाणि कालो पुग्गल-जन्तवो ॥ ८ ॥

गइलक्खणो उ धम्मो अहम्मो ठाणलक्खणो ।
भायणं सव्वदव्वाणं नहं ओगाहलक्खणं ॥ ९ ॥

वत्तणालक्खणो कालो जीवो उवओगलक्खणो ।
नाणेणं दंसणेणं च सुहेण य दुहेण य ॥ १० ॥

नाणं च दंसणं चेव चरित्तं च तवो तहा ।
वीरियं उवओगो य एयं जीवस्स लक्खणं ॥ ११ ॥

सद्दन्धयार-उज्जोओ पहा छायातवे इ वा ।
वण्णरसगन्धफासा पुग्गलाणं तु लक्खणं ॥ १२ ॥

एगत्तं च पुहत्तं च संखा संठाणमेव य ।
संजोगा य विभागा य पज्जवाणं तु लक्खणं ॥ १३ ॥

जीवाजीवा य बन्धो य पुण्णं पावासवो तहा ।
संवरो निज्जरा मोक्खो सन्तेए तहिया नव ॥ १४ ॥

तहियाणं तु भावाणं सब्भावे उवएसणं ।
भावेणं सद्दहन्तस्स सम्मत्तं तं वियाहियं ॥ १५ ॥

निसग्गुवएसरुई आणारुई सुत्त-बीयरुइमेव ।
अभिगम-वित्थाररुई किरिया-संखेव-धम्मरुई ॥ १६ ॥

भूयत्थेणाहिगया जीवाजीवा य पुण्णपावं च ।
सहसम्मइयासवसंवरो य रोएइ उ निसग्गो ॥ १७ ॥

जो जिणदिट्ठे भावे चउव्विहे सद्दहाइ सयमेव ।
एमेव नऽन्नह त्ति य स निसग्गरुइ त्ति नायव्वो ॥ १८ ॥

एए चेव उ भावे उवइट्ठे जो परेण सद्दहई ।
छउमत्थेण जिणेण व उवएसरुइ त्ति नायव्वो ॥ १९ ॥

रागो दोसो मोहो अन्नाणं जस्स अवगयं होइ ।
आणाए रोयंतो सो खलु आणारुई नाम ॥ २० ॥

जो सुत्तमहिज्जन्तो सुएण ओगाहई उ सम्मत्तं ।
अंगेण बाहिरेण व सो सुत्तरुइ त्ति नायव्वो ॥ २१ ॥

एगेण अणेगाइं पयाइं जो पसरई उ सम्मत्तं ।
उदए व्व तेल्लबिन्दू सो बीयरुइ त्ति नायव्वो ॥ २२ ॥

सो होइ अभिगमरुई सुयनाणं जेण अत्थओ दिट्ठं ।
एक्कारस अंगाइं पइण्णगं दिट्ठिवाओ य ॥ २३ ॥

दव्वाण सव्वभावा सव्वपमाणेहि जस्स उवलद्धा ।
सव्वाहि नयविहीहिं वित्थाररुइ त्ति नायव्वो ॥ २४ ॥

दंसणनाणचरित्ते तवविणए सच्चसमिइगुत्तीसु ।
जो किरियाभावरुई सो खलु किरियारुई नाम ॥ २५ ॥

अणभिग्गहियकुदिट्ठी संखेवरुइ त्ति होइ नायव्वो ।
अविसारओ पवयणे अणभिग्गहिओ य सेसेसु ॥ २६ ॥

जो अत्थिकायधम्मं सुयधम्मं खलु चरित्तधम्मं च ।
सद्दहइ जिणाभिहियं सो धम्मरुइ त्ति नायव्वो ॥ २७ ॥

परमत्थसंथवो वा सुदिट्ठपरमत्थसेवणा वा वि ।
वावन्नकुदंसणवज्जणा य सम्मत्तसद्दहणा ॥ २८ ॥

नत्थि चरित्तं सम्मत्तविहूणं दंसणे उ भइयव्वं ।
सम्मत्तचरित्ताइं जुगवं पुव्वं व सम्मत्तं ॥ २९ ॥

नादंसणिस्स नाणं नाणेण विणा न हुन्ति चरणगुणा ।
अगुणिस्स नत्थि मोक्खो नत्थि अमोक्खस्स निव्वाणं ॥ ३० ॥

निस्संकिय-निक्कंखिय-निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठी य ।
उववूह-थिरीकरणे वच्छल्ल-पभावणे अट्ठ ॥ ३१ ॥

सामाइयत्थ पढमं छेओवट्ठावणं भवे बीयं।
परिहारविसुद्धीयं सुहुमं तह संपरायं च ॥ ३२ ॥

अकसायं अहक्खायं छउमत्थस्स जिणस्स वा।
एयं चयरित्तकरं चारित्तं होइ आहियं ॥ ३३ ॥

तवो य दुविहो वुत्तो बाहिरब्भिन्तरो तहा।
बाहिरो छव्विहो वुत्तो एमेवब्भिन्तरो तवो ॥ ३४ ॥

नाणेण जाणई भावे दंसणेण य सद्दहे।
चरित्तेण न गेण्हाइ तवेण परिसुज्झई ॥ ३५ ॥

खवेत्ता पुव्वकम्माइं संजमेण तवेण य।
सव्वदुक्खप्पहीणट्ठा पक्कमन्ति महेसिणो ॥ ३६ ॥ ॥ त्ति बेमि ॥

॥ मोक्खमग्गगई समत्ता ॥ २८ ॥

॥ सम्मत्तपरक्कमे एकोनत्रिंशं अध्ययनम् ॥

सुयं मे आउसं तेणं भगवया एवमक्खायं। इह खलु सम्मत्तपरक्कमे नाम अज्झयणे समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइए जं सम्मं सद्दहित्ता पत्तियाइत्ता रोयइत्ता फासित्ता पालइत्ता तीरित्ता कित्तइत्ता सोहइत्ता आराहित्ता आणाए अणुपालइत्ता बहवे जीवा सिज्झन्ति बुज्झन्ति मुच्चन्ति परिनिव्वायन्ति सव्वदुक्खाणमन्तं करेन्ति। तस्स णं अयमट्ठे एवमाहिज्जइ तं जहा। संवेगे १ निव्वेए २ धम्मसद्धा ३ गुरुसाहम्मियसुस्सूसणया ४ आलोयणया ५ निन्दणया ६ गरिहणया ७ सामाइए ८ चउव्वीसत्थवे ९ वन्दणे १० पडिक्कमणे ११ काउस्सग्गे १२ पच्चक्खाणे १३ थवथुईमंगले १४ कालपडिलेहणया १५ पायच्छित्तकरणे १६ खमावणया १७ सज्झाए १८ वायणया १९ पडिपुच्छणया २० पडियट्टणया २१ अणुप्पेहा २२ धम्मकहा २३ सुयस्स आराहणया २४ एगग्गमणसंनिवेसणया २५ संजमे २६ तवे २७ वोदाणे २८ सुहसाए २९ अप्पडिबद्धया ३० विवित्तसयणासणसेवणया ३१ विणियट्टणया ३२ संभोगपच्चक्खाणे ३३ उवहिपच्चक्खाणे ३४ आहारपच्चक्खाणे ३५ कसायपच्चक्खाणे ३६ जोगपच्चक्खाणे ३७ सरीरपच्चक्खाणे ३८ सहायपच्चक्खाणे ३९ भत्तपच्चक्खाणे ४० सब्भावपच्चक्खाणे ४१ पडिरूवणया ४२ वेयावच्चे ४३

सव्वगुणसंपुण्णया ४४ वीयरागया ४५ खन्ती ४६ मुत्ती ४७ मद्दवे ४८ अज्जवे ४९ भावसच्चे ५० करणसच्चे ५१ जोगसच्चे ५२ मणगुत्तया ५३ वइगुत्तया ५४ कायगुत्तया ५५ मणसमाधारणया ५६ वइसमाधारणया ५७ कायसमाधारणया ५८ नाणसंपन्नया ५९ दंसणसंपन्नया ६० चरित्तसंपन्नया ६१ सोइन्दियनिग्गहे ६२ चक्खिन्दियनिग्गहे ६३ घाणिन्दियनिग्गहे ६४ जिब्भिन्दियनिग्गहे ६५ फासिन्दियनिग्गहे ६६ कोहविजए ६७ माणविजए ६८ मायाविजए ६९ लोहविजए ७० पेज्जदोसमिच्छादंसणविजए ७१ सेलेसी ७२ अकम्मया ७३ ॥

१ संवेगेणं भन्ते जीवे किं जणयइ ॥ संवेगेणं अणुत्तरं धम्मसद्धं जणयइ । अणुत्तराए धम्मसद्धाए संवेगं हव्वमागच्छइ । अणन्ताणुबन्धिकोहमाणमायालोभे खवेइ । कम्मं न बन्धइ । तप्पच्चइयं च णं मिच्छत्तविसोहिं काऊण दंसणाराहए भवइ । दंसणविसोहीए य णं विसुद्धाए अत्थेगइए तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झइ । सोहीए य णं विसुद्धाए तच्चं पुणो भवग्गहणं नाइक्कमइ ॥ १ ॥

२ निव्वेएणं भन्ते जीवे किं जणयइ ॥ निव्वेएणं दिव्वमाणुसतेरिच्छिएसु कामभोगेसु निव्वेयं हव्वमागच्छइ । सव्वविसएसु विरज्जइ सव्वविसएसु विरज्जमाणे आरम्भपरिच्चायं करेइ । आरम्भपरिच्चायं करेमाणे संसारमग्गं वोच्छिन्दइ सिद्धिमग्गं पडिवन्ने य भवइ ॥ २ ॥

३ धम्मसद्धाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ ॥ धम्मसद्धाए णं सायासोक्खेसु रज्जमाणे विरज्जइ । आगारधम्मं च णं चयइ अणगारिए णं जीवे सारीरमाणसाणं दुक्खाणं छेयणभेयणसंजोगाईणं वोच्छेयं करेइ अव्वाबाहं च सुहं निव्वत्तेइ ॥ ३ ॥

४ गुरुसाहम्मियसुस्सूसणाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ ॥ गुरुसाहम्मियसुस्सूसणाए णं विणयपडिवत्तिं जणयइ । विणयपडिवन्ने य णं जीवे अणच्चासायणसीले नेरइयतिरिक्खजोणियमणुस्सदेवदुग्गईओ निरुम्भइ । वण्णसंजलणभत्तिबहुमाणयाए मणुस्सदेवगईओ निबन्धइ सिद्धिं सोग्गइं च विसोहेइ । पसत्थाइं च णं विणयमूलाइं सव्वकज्जाइं साहेइ । अन्ने य बहवे जीवे विणइत्ता भवइ ॥ ४ ॥

५ आलोयणाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ ॥ आलोयणाए णं मायानियाणमिच्छादरिसणसल्लाणं मोक्खमग्गविग्घाणं अणन्तसंसारबन्धणाणं उद्धरणं करेइ । उज्जुभावं च जणयइ । उज्जुभावपडिवन्ने य णं जीवे अमाई इत्थीवेयनपुंसगवेयं च न बन्धइ । पुव्ववद्धं च णं निज्जरेइ ॥ ५ ॥

६ निन्दणयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ॥ निन्दणयाए णं पच्छाणुतावं जणयइ। पच्छाणुतावेणं विरज्जमाणे करणगुणसेढिं पडिवज्जइ। करणगुणसेढिं पडिवन्ने य णं अणगारे मोहणिज्जं कम्मं उग्घाएइ॥ ६॥

७ गरहणयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ॥ गरहणयाए अपुरेक्कारं जणयइ। अपुरेक्कारगए णं जीवे अप्पसत्थेहिंतो जोगेहिंतो नियत्तेइ पसत्थे य पडिवज्जइ पसत्थजोगपडिवन्ने य णं अणगारे अणन्तघाइपज्जवे खवेइ॥ ७॥

८ सामाइएणं भन्ते जीवे किं जणयइ॥ सामाइएणं सावज्जजोगविरइं जणयइ॥ ८॥

९ चउव्वीसत्थएणं भन्ते जीवे किं जणयइ॥ च० दंसणविसोहिं जणयइ॥ ९॥

१० वन्दणएणं भन्ते जीवे किं जणयइ॥ व० नीयागोयं कम्मं खवेइ। उच्चागोयं कम्मं निबन्धइ। सोहग्गं च णं अप्पडिहयं आणाफलं निव्वत्तेइ दाहिणभावं च णं जणयइ॥ १०॥

११ पडिक्कमणेणं भन्ते जीवे किं जणयइ। प० वयछिद्दाणि पिहेइ। पिहियवयछिद्दे पुण जीवे निरुद्धासवे असबलचरित्ते अट्ठसु पवयणमायासु उवउत्ते अपुहत्ते सुप्पणिहिंदिए विहरइ॥ ११॥

१२ काउस्सग्गेणं भन्ते जीवे किं जणयइ॥ का० तीयपडुप्पन्नं पायच्छित्तं विसोहेइ। विसुद्धपायच्छित्ते य जीवे निव्वुयहियए ओहरियभरु व्व भारवहे पसत्थज्झाणोवगए सुहंसुहेणं विहरइ॥ १२॥

१३ पच्चक्खाणेणं भन्ते जीवे किं जणयइ॥ प० आसवदाराइं निरुम्भइ। पच्चक्खाणेणं इच्छानिरोहं जणयइ। इच्छानिरोहं गए य णं जीवे सव्वदव्वेसु विणीयतण्हे सीइभूए विहरइ॥ १३॥

१४ थवथुइमंगलेणं भन्ते जीवे किं जणयइ॥ थ० नाणदंसणचरित्तबोहिलाभं जणयइ। नाणदंसणचरित्तबोहिलाभसंपन्ने य णं जीवे अन्तकिरियं कप्पविमाणोववत्तिगं आराहणं आराहेइ॥ १४॥

१५ कालपडिलेहणयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ॥ का० नाणावरणिज्जं कम्मं खवेइ॥ १५॥

१६ पायच्छित्तकरणेणं भन्ते जीवे किं जणयइ॥ पा० पावविसोहिं जणयइ निरइयारे यावि भवइ। सम्मं च णं पायच्छित्तं पडिवज्जमाणे मग्गं च मग्गफलं च विसोहेइ आयारं च आयारफलं च आराहेइ॥ १६॥

१७ खमावणयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ॥ ख० पल्हायणभावं जणयइ। पल्हायणभावमुवगए य सव्वपाणभूयजीवसत्तेसु मेत्तीभावमुप्पाएइ। मेत्तीभावमुवगए यावि जीवे भावविसोहिं काऊण निब्भए भवइ॥१७॥

१८ सज्झाएण भन्ते जीवे किं जणयइ॥ स० नाणावरणिज्जं कम्मं खवेइ॥ १८॥

१९ वायणाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ॥ वा० निज्जरं जणयइ। सुयस्स य अणासायणाए वट्टए। सुयस्स अणासायणाए वट्टमाणे तित्थधम्मं अवलम्बइ। तित्थधम्मं अवलम्बमाणे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ॥ १९॥

२० पडिपुच्छणयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ॥ प० सुत्तत्थतदुभयाइं विसोहेइ। कंखामोहणिज्जं कम्मं वोच्छिन्दइ॥ २०॥

२१ परियट्टणाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ॥ प० वंजणाइं जणयइ वंजणलद्धिं च उप्पाएइ॥ २१॥

२२ अणुप्पेहाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ॥ अ० आउयवज्जाओ सत्तकम्मप्पगडीओ धणियबन्धणबद्धाओ सिढिलबन्धणबद्धाओ पकरेइ। दीहकालट्ठिइयाओ हस्सकालट्ठिइयाओ पकरेइ। तिव्वाणुभावाओ मन्दाणुभावाओ पकरेइ। [बहुपएसग्गाओ अप्पपएसग्गाओ पकरेइ] आउयं च णं कम्मं सिया बन्धइ सिया नो बन्धइ। असायावेयणिज्जं च णं कम्मं नो भुज्जो भुज्जो उवचिणाइ अणाइयं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरन्तं संसारकन्तारं खिप्पामेव वीइवयइ॥ २२॥

२३ धम्मकहाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ॥ ध० निज्जरं जणयइ। धम्मकहाए णं पवयणं पभावेइ। पवयणपभावेणं जीवे आगमेसस्स भद्दत्ताए कम्मं निबन्धइ॥ २३॥

२४ सुयस्स आराहणयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ॥ सु० अन्नाणं खवेइ न य संकिलिस्सइ॥ २४॥

२५ एगग्गमणसंनिवेसणयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ॥ ए० चित्तनिरोहं करेइ॥ २५॥

२६ संजमएणं भन्ते जीवे किं जणयइ॥ सं० अणण्हयत्तं जणयइ॥२६॥

२७ तवेणं भन्ते जीवे किं जणयइ॥ तवेणं वोदाणं जणयइ॥ २७॥

२८ वोदाणेणं भन्ते जीवे किं जणयइ॥ वो० अकिरियं जणयइ। अकिरियाए भवित्ता तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वाइ सव्वदुक्खाणमन्तं करेइ॥ २८॥

२९ सुहसाएणं भन्ते जीवे किं जणयइ ॥ सु० अणुस्सुयत्तं जणयइ। अणुस्सुयाए णं जीवे अणुकम्पए अणुब्भडे विगयसोगे चरित्तमोहणिज्जं कम्मं खवेइ ॥ २९ ॥

३० अप्पडिबद्धयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ ॥ अ० निस्संगत्तं जणयइ। निस्संगत्तेणं जीवे एगे एगग्गचित्ते दिया य राओ य असज्जमाणे अप्पडिबद्धे यावि विहरइ ॥ ३० ॥

३१ विवित्तसयणासणयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ ॥ वि० चरित्तगुत्तिं जणयइ। चरित्तगुत्ते य णं जीवे विवित्ताहारे दढचरित्ते एगन्तरए मोक्खभावपडिवन्ने अट्ठविहकम्मगण्ठिं निज्जरेइ ॥ ३१ ॥

३२ विनियट्टणयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ ॥ वि० पावकम्माणं अकरणयाए अब्भुट्टेइ। पुव्वबद्धाण य निज्जरणयाए तं नियत्तेइ तओ पच्छा चाउरन्तं संसारकन्तारं वीइवयइ ॥ ३२ ॥

३३ संभोगपच्चक्खाणेणं भन्ते जीवे किं जणयइ ॥ सं० आलम्बणाइं खवेइ। निरालम्बणस्स य आययट्ठिया जोगा भवन्ति। सएणं लाभेणं संतुस्सइ परलाभं नो आसाएइ परलाभं नो तक्केइ नो पीहेइ नो पत्थेइ नो अभिलसइ। परलाभं अणस्सायमाणे अतक्केमाणे अपीहमाणे अपत्थेमाणे अणभिलसमाणे दुच्चं सुहसेज्जं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ॥ ३३ ॥

३४ उवहिपच्चक्खाणेणं भन्ते जीवे किं जणयइ ॥ उ० अपलिमन्थं जणयइ। निरुवहिए णं जीवे निक्कंखी उवहिमन्तरेण य न संकिलिस्सई ॥३४॥

३५ आहारपच्चक्खाणेणं भन्ते जीवे किं जणयइ ॥ आ० जीवियासंसप्पओगं वोच्छिन्दइ। जीवियासंसप्पओगं वोच्छिन्दित्ता जीवे आहारमन्तरेणं न संकिलिस्सइ ॥ ३५ ॥

३६ कसायपच्चक्खाणेणं भन्ते जीवे किं जणयइ ॥ क० वीयरागभावं जणयइ। वीयरागभावपडिवन्ने वि य णं जीवे समसुहदुक्खे भवइ ॥ ३६ ॥

३७ जोगपच्चक्खाणेणं भन्ते जीवे किं जणयइ ॥ जो० अजोगत्तं जणयइ। अजोगी णं जीवे नवं कम्मं न बन्धइ पुव्वबद्धं निज्जरेइ ॥ ३७ ॥

३८ सरीरपच्चक्खाणेणं भन्ते जीवे किं जणयइ ॥ स० सिद्धाइसयगुणत्तणं निव्वत्तेइ। सिद्धाइसयगुणसंपन्ने य णं जीवे लोगग्गमुवगए परमसुही भवइ ॥ ३८ ॥

३९ सहायपच्चक्खाणेणं भन्ते जीवे किं जणयइ ॥ स० एगीभावं जणयइ। एगीभावभूए वि य णं जीवे एगग्गं भावेमाणे अप्पझंझे अप्पकलहे

अप्पकसाए अप्पतुमंतुमे संजमबहुले संवरबहुले समाहिए यावि भवइ ॥ ३९ ॥

४० भत्तपच्चक्खाणेणं भन्ते जीवे किं जणयइ ॥ भ० अणेगाइं भवसयाइं निरुम्भइ ॥ ४० ॥

४१ सब्भावपच्चक्खाणेणं भन्ते जीवे किं जणयइ ॥ स० अनियट्टिं जणयइ । अनियट्टिपडिवन्ने य अणगारे चत्तारि केवलिकम्मंसे खवेइ तं जहा वेयणिज्जं आउयं नामं गोयं । तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ सव्वदुक्खाणमन्तं करेइ ॥ ४१ ॥

४२ पडिरूवयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ ॥ प० लाघवियं जणयइ । लघुभूए णं जीवे अप्पमत्ते पागडलिंगे पसत्थलिंगे विसुद्धसम्मत्ते सत्तसमिइसमत्ते सव्वपाणभूयजीवसत्तेसु वीससणिज्जरूवे अप्पडिलेहे जिइन्दिए विउलतवसमिइसमन्नागए यावि भवइ ॥ ४२ ॥

४३ वेयावच्चेणं भन्ते जीवे किं जणयइ ॥ वे० तित्थयरनामगोत्तं कम्मं निबन्धइ ॥ ४३ ॥

४४ सव्वगुणसंपन्नयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ ॥ स० अपुणरावत्तिं जणयइ । अपुणरावत्तिं पत्तए य णं जीवे सारीरमाणसाणं दुक्खाणं नो भागी भवइ ॥ ४४ ॥

४५ वीयरागयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ ॥ वी० नेहाणुबन्धणाणि तण्हाणुबन्धणाणि य वोच्छिन्दइ मणुन्नामणुन्नेसु सद्दरूवरसफरिसगन्धेसु चेव विरज्जइ ॥ ४५ ॥

४६ खन्तीए णं भन्ते जीवे किं जणयइ ॥ ख० परीसहे जिणइ ॥ ४६ ॥

४७ मुत्तीए णं भन्ते जीवे किं जणयइ ॥ मु० अकिंचणं जणयइ । अकिंचणे य जीवे अत्थलोलाणं अपत्थणिज्जो भवइ ॥ ४७ ॥

४८ अज्जवयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ ॥ अ० काउज्जुययं भावुज्जुययं भासुज्जुययं अविसंवायणं जणयइ । अविसंवायणसंपन्नयाए णं जीवे धम्मस्स आराहए भवइ ॥ ४८ ॥

४९ मद्दवयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ ॥ म० अणुस्सियत्तं जणयइ । अणुस्सियत्ते णं जीवे मिउमद्दवसंपन्ने अट्ठ मयट्ठाणाइं निट्ठावेइ ॥ ४९ ॥

५० भावसच्चेणं भन्ते जीवे किं जणयइ ॥ भा० भावविसोहिं जणयइ ॥ भावविसोहीए वट्टमाणे जीवे अरहन्तपन्नत्तस्स धम्मस्स आराहणयाए अब्भुट्टेइ । अरहन्तपन्नत्तस्स धम्मस्स आराहणयाए अब्भुट्टित्ता परलोगधम्मस्स आराहए हवइ ॥ ५० ॥

५१ करणसच्चेणं भन्ते जीवे किं जणयइ ॥ क० करणसत्तिं जणयइ। करणसच्चे वट्टमाणे जीवे जहावाई तहाकारी यावि भवइ ॥ ५१ ॥

५२ जोगसच्चेणं भन्ते जीवे किं जणयइ ॥ जो० जोगं विसोहेइ ॥५२॥

५३ मणगुत्तयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ ॥ म० जीवे एगग्गं जणयइ। एगग्गचित्ते णं जीवे मणगुत्ते संजमाराहए भवइ ॥ ५३ ॥

५४ वयगुत्तयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ ॥ व० निव्वियारत्तं जणयइ। निव्वियारे णं जीवे वइगुत्ते अज्झप्पजोगसाहणजुत्ते यावि भवइ ॥ ५४ ॥

५५ कायगुत्तयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ ॥ का० संवरं जणयइ। संवरेणं कायगुत्ते पुणो पावासवनिरोहं करेइ ॥ ५५ ॥

५६ मणसमाहारणयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ ॥ म० एगग्गं जणयइ। एगग्गं जणइत्ता नाणपज्जवे जणयइ। नाणपज्जवे जणइत्ता सम्मत्तं विसोहेइ मिच्छत्तं च निज्जरेइ ॥ ५६ ॥

५७ वयसमाहारणयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ ॥ व० वयसाहारणदंसणपज्जवे विसोहेइ। वयसाहारणदंसणपज्जवे विसोहित्ता सुलहबोहियत्तं निव्वत्तेइ दुल्लहबोहियत्तं निज्जरेइ ॥ ५७ ॥

५८ कायसमाहारणयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ ॥ का० चरित्तपज्जवे विसोहेइ। चरित्तपज्जवे विसोहित्ता अहक्खायचरित्तं विसोहेइ। अहक्खायचरित्तं विसोहित्ता चत्तारि केवलिकम्मंसे खवेइ। तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वाइ सव्वदुक्खाणमन्तं करेइ ॥ ५८ ॥

५९ नाणसंपन्नयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ। ना० जीवे सव्वभावाहिगमं जणयइ। नाणसंपन्ने णं जीवे चाउरन्ते संसारकन्तारे न विणस्सइ। जहा सूई ससुत्ता पडिया न विणस्सइ। तहा जीवे ससुत्ते संसारे न विणस्सइ ॥ नाणविणयतवचरित्तजोगे संपाउणइ ससमयपरसमयविसारए य असंघायणिज्जे भवइ ॥ ५९ ॥

६० दंसणसंपन्नयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ ॥ दं० भवमिच्छत्तछेयणं करेइ परं न विज्झायइ। परं अविज्झाएमाणे अणुत्तरेणं नाणदंसणेणं अप्पाणं संजोएमाणे सम्मं भावेमाणे विहरइ ॥ ६० ॥

६१ चरित्तसंपन्नयाए णं भन्ते जीवे किं जणयइ ॥ च० सेलेसीभावं जणयइ। सेलेसिं पडिवन्ने य अणगारे चत्तारि केवलिकम्मंसे खवेइ। तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वाइ सव्वदुक्खाणमन्तं करेइ ॥ ६१ ॥

६२ सोइन्दियनिग्गहेणं भन्ते जीवे किं जणयइ ॥ सो० मणुन्नामणुन्नेसु सद्देसु रागदोसनिग्गहं जणयइ तप्पच्चइयं कम्मं न बन्धइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥ ६२ ॥

६३ चक्खिन्दियनिग्गहेणं भन्ते जीवे किं जणयइ ॥ च० मणुन्नामणुन्नेसु रूवेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ तप्पच्चइयं कम्मं न बन्धइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥ ६३ ॥

६४ घाणिन्दियनिग्गहेणं भन्ते जीवे किं जणयइ ॥ घा० मणुन्नामणुन्नेसु गन्धेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ तप्पच्चइयं कम्मं न बन्धइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥ ६४ ॥

६५ जिब्भिन्दियनिग्गहेणं भन्ते जीवे किं जणयइ ॥ जि० मणुन्नामणुन्नेसु रसेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ तप्पच्चइयं कम्मं न बन्धइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥ ६५ ॥

६६ फासिन्दियनिग्गहेणं भन्ते जीवे किं जणयइ ॥ फा० मणुन्नामणुन्नेसु फासेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ तप्पच्चइयं कम्मं न बन्धइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥ ६६ ॥

६७ कोहविजएणं भन्ते जीवे किं जणयइ ॥ को० खन्तिं जणयइ कोहवेयणिज्जं कम्मं न बन्धइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥ ६७ ॥

६८ माणविजएणं भन्ते जीवे किं जणयइ ॥ मा० मद्दवं जणयइ माणवेयणिज्जं कम्मं न बन्धइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥ ६८ ॥

६९ मायाविजएणं भन्ते जीवे किं जणयइ ॥ मा० अज्जवं जणयइ मायावेयणिज्जं कम्मं न बन्धइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥ ६९ ॥

७० लोभविजएणं भन्ते जीवे किं जणयइ ॥ लो० संतोसं जणयइ लोभवेयणिज्जं कम्मं न बन्धइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥ ७० ॥

७१ पिज्जदोसमिच्छादंसणविजएणं भन्ते जीवे किं जणयइ ॥ पि० नाणदंसणचरित्ताराहणयाए अब्भुट्ठेइ ॥ अट्ठविहस्स कम्मस्स कम्मगण्ठिविमोयणयाए तप्पढमयाए जहाणुपुव्वीए अट्ठवीसइविहं मोहणिज्जं कम्मं उग्घाएइ पंचविहं नाणावरणिज्जं नवविहं दंसणावरणिज्जं पंचविहं अन्तरायं एए तिन्नि वि कम्मंसे जुगवं खवेइ। तओ पच्छा अणुत्तरं कसिणं पडिपुण्णं निरावरणं वितिमिरं विसुद्धं लोगालोगप्पभासगं केवलवरनाणदंसणं समुप्पाडेइ। जाव सजोगी भवइ ताव इरियावहियं कम्मं निबन्धइ सुहफरिसं दुसमयठिइयं। तं पढमसमए बद्धं बिइयसमए वेइयं

तइयसमए निज्जिण्णं तं बद्धं पुट्ठं उदीरियं वेइयं निज्जिण्णं सेयाले य अकम्मं चावि भवइ ॥ ७१ ॥

७२ अहाउयं पालइत्ता अन्तोमुहुत्तद्धावसेसाउए जोगनिरोहं करेमाणे सुहुमकिरियं अप्पडिवाइं सुक्कज्झाणं झायमाणे तप्पढमयाए मणजोगं निरुम्भइ वइजोगं निरम्भइ कायजोगं निरुम्भइ आणापाणनिरोहं करेइ ईसि पंचरहस्सक्खरुच्चारणट्ठाए य णं अणगारे समुच्छिन्नकिरियं अनियट्टिसुक्कज्झाणं झियायमाणे वेयणिज्जं आउयं नामं गोत्तं च एए चत्तारि कम्मंसे जुगवं खवेइ ॥ ७२ ॥

७३ तओ ओरालियतेयकम्माइं सव्वाहिं विप्पजहणाहिं विप्पजहित्ता उज्जुसेढिपत्ते अफुसमाणगई उड्ढं एगसमएणं अविग्गहेणं तत्थ गन्ता सागारोवउत्ते सिज्झइ बुज्झइ जाव अन्तं करेइ ॥ ७३ ॥

७४ एस खलु सम्मत्तपरक्कमस्स अज्झयणस्स अट्ठे समणेणं भगवया महावीरेणं आघविए पन्नविए परूविए दंसिए उवदंसिए ॥ ७४ ॥

॥ त्ति बेमि ॥

॥ सम्मत्तपरक्कमे समत्ते ॥ २९ ॥

॥ तवमग्गं त्रिंशं अध्ययनम् ॥

जहा उ पावगं कम्मं रागदोससमज्जियं ।
खवेइ तवसा भिक्खू तमेगग्गमणो सुण ॥ १ ॥

पाणवहमुसावायाअदत्तमेहुणपरिग्गहा विरओ ।
राईभोयणविरओ जीवो भवइ अणासवो ॥ २ ॥

पंचसमिओ तिगुत्तो अकसाओ जिइन्दिओ ।
अगारवो य निस्सल्लो जीवो होइ अणासवो ॥ ३ ॥

एएसिं तु विवच्चासे रागद्दोससमज्जियं ।
खवेइ उ जहा भिक्खू तमेगग्गमणो सुण ॥ ४ ॥

जहा महातलायस्स सन्निरुद्धे जलागमे ।
उस्सिचणाए तवणाए कमेणं सोसणा भवे ॥ ५ ॥

एवं तु संजयस्सावि पावकम्मनिरासवे ।
भवकोडीसंचियं कम्मं तवसा निज्जरिज्जइ ॥ ६ ॥

सो तवो दुविहो वुत्तो बाहिरब्भिन्तरो तहा।
बाहिरो छव्विहो वुत्तो एवमब्भिन्तरो तवो॥ ७॥

अणसणमूणोयरिया भिक्खायरिया य रसपरिच्चाओ।
कायकिलेसो संलीणया य बज्झो तवो होइ॥ ८॥

इत्तरिय मरणकाला य अणसणा दुविहा भवे।
इत्तरिय सावकंखा निरवकंखा उ बिइज्जिया॥ ९॥

जो सो इत्तरियतवो सो समासेण छव्विहो।
सेढितवो पयरतवो घणो य तह होइ वग्गो य॥ १०॥

तत्तो य वग्गवग्गो पंचमो छट्ठओ पइण्णतवो।
मणइच्छियचित्तत्थो नायव्वो होइ इत्तरिओ॥ ११॥

जा सा अणसणा मरणे दुविहा सा वियाहिया।
सवियारमवियारा कायचिट्ठं पई भवे॥ १२॥

अहवा सपरिकम्मा अपरिकम्मा य आहिया।
नीहारिमणीहारी आहारच्छेओ दोसु वि॥ १३॥

ओमोयरणं पंचहा समासेण वियाहियं।
दव्वओ खेत्तकालेणं भावेणं पज्जवेहि य॥ १४॥

जो जस्स उ आहारो तत्तो ओमं तु जो करे।
जहन्नेणेगसित्थाई एवं दव्वेण ऊ भवे॥ १५॥

गामे नगरे तह रायहाणिनिगमे य आगरे पल्ली।
खेडे कब्बडदोणमुहपट्टणमडम्बसंबाहे॥ १६॥

आसमपए विहारे सन्निवेसे समायघोसे य।
थलिसेणाखन्धारे सत्थे संवट्टकोट्टे य॥ १७॥

वाडेसु व रच्छासु व घरेसु वा एवमित्तियं खेत्तं।
कप्पइ उ एवमाई एवं खेत्तेण ऊ भवे॥ १८॥

पेडा य अद्धपेडा गोमुत्तिपयंगवीहिया चेव।
सम्बुक्कावट्टाऽऽययगन्तुंपच्चागया छट्ठा॥ १९॥

दिवसस्स पोरुसीणं चउण्हं पि उ जत्तिओ भवे कालो।
एवं चरमाणो खलु कालोमाणं मुणेयव्वं॥ २०॥

अहवा तइयाए पोरिसीए ऊणाइ घासमेसन्तो।
चउभागूणाए वा एवं कालेण ऊ भवे॥ २१॥

इत्थी वा पुरिसो वा अलंकिओ वाऽणलंकिओ वा वि।
अन्नयरवयत्थो वा अन्नयरेणं व वत्थेणं ॥ २२॥

अन्नेण विसेसेणं वण्णेणं भावमणुमुयन्ते उ।
एवं चरमाणो खलु भावोमाणं मुणेयव्वं ॥ २३ ॥

दव्वे खेत्ते काले भावम्मि य आहिया उ जे भावा।
एएहि ओमचरओ पज्जवचरओ भवे भिक्खू ॥ २४ ॥

अट्ठविहगोयरग्गं तु तहा सत्तेव एसणा।
अभिग्गहा य जे अन्ने भिक्खायरियमाहिया ॥ २५ ॥

खीरदहिसप्पिमाई पणीयं पाणभोयणं।
परिवज्जणं रसाणं तु भणियं रसविवज्जणं ॥ २६ ॥

ठाणा वीरासणाईया जीवस्स उ सुहावहा।
उग्गा जहा धरिज्जन्ति कायकिलेसं तमाहियं ॥ २७ ॥

एगन्तमणावाए इत्थीपसुविवज्जिए।
सयणासणसेवणया विवित्तं सयणासणं ॥ २८ ॥

एसो बाहिरगतवो समासेण वियाहिओ।
अब्भिन्तरं तवं एत्तो वुच्छामि अणुपुव्वसो ॥ २९ ॥

पायच्छित्तं विणओ वेयावच्चं तहेव सज्झाओ।
झाणं च विउस्सग्गो एसो अब्भिन्तरो तवो ॥ ३० ॥

आलोयणारिहाईयं पायच्छित्तं तु दसविहं।
जे भिक्खू वहई सम्मं पायच्छित्तं तमाहियं ॥ ३१ ॥

अब्भुट्ठाणं अंजलिकरणं तहेवासणदायणं।
गुरुभत्तिभावसुस्सूसा विणओ एस वियाहिओ ॥ ३२ ॥

आयरियमाईए वेयावच्चम्मि दसविहे।
आसेवणं जहाथामं वेयावच्चं तमाहियं ॥ ३३ ॥

वायणा पुच्छणा चेव तहेव परियट्टणा।
अणुप्पेहा धम्मकहा सज्झाओ पंचहा भवे ॥ ३४ ॥

अट्टरुद्दाणि वज्जित्ता झाएज्जा सुसमाहिए।
धम्मसुक्काइं झाणाइं झाणं तं तु बुहा वए ॥ ३५ ॥

सयणासणठाणे वा जे उ भिक्खू न वावरे।
कायस्स विउस्सग्गो छट्ठो सो परिकित्तिओ ॥ ३६ ॥

एवं तवं तु दुविहं जे सम्मं आयरे मुणी ।
से खिप्पं सव्वसंसारा विप्पमुच्चइ पण्डिए ॥ ३७ ॥ त्ति बेमि ॥

॥ तवमग्गं समत्तं ॥ ३० ॥

॥ चरणविही एकत्रिंशं अध्ययनम् ॥

चरणविहिं पवक्खामि जीवस्स उ सुहावहं ।
जं चरित्ता बहू जीवा तिण्णा संसारसागरं ॥ १ ॥

एगओ विरइं कुज्जा एगओ य पवत्तणं ।
असंजमे नियत्तिं च संजमे य पवत्तणं ॥ २ ॥

रागद्दोसे य दो पावे पावकम्मपवत्तणे ।
जे भिक्खू रुम्भई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥ ३ ॥

दण्डाणं गारवाणं च सल्लाणं च तियं तियं ।
जे भिक्खू चयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥ ४ ॥

दिव्वे य जे उवसग्गे तहा तेरिच्छमाणुसे ।
जे भिक्खू सहई सम्मं से न अच्छइ मण्डले ॥ ५ ॥

विगहाकसायसन्नाणं झाणाणं च दुयं तहा ।
जे भिक्खू वज्जई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥ ६ ॥

वएसु इन्दियत्थेसु समिईसु किरियासु य ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥ ७ ॥

लेसासु छसु काएसु छक्के आहारकारणे ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥ ८ ॥

पिण्डोग्गहपडिमासु भयट्ठाणेसु सत्तसु ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥ ९ ॥

मदेसु बम्भगुत्तीसु भिक्खुधम्मंमि दसविहे ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥ १० ॥

उवासगाणं पडिमासु भिक्खूणं पडिमासु य ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥ ११ ॥

किरियासु भूयगामेसु परमाहम्मिएसु य।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले॥ १२॥

गाहासोलसएहिं तहा असंजमम्मि य।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले॥ १३॥

बम्भम्मि नायज्झयणेसु ठाणेसु दसु समाहिए।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले॥ १४॥

एगवीसाए सबले बावीसाए परीसहे।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले॥ १५॥

तेवीसाइ सूयगडे रूवाहिएसु सुरेसु अ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले॥ १६॥

पणुवीसभावणासु उद्देसेसु दसाइणं।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले॥ १७॥

अणगारगुणेहिं च पगप्पम्मि तहेव य।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले॥ १८॥

पावसुयपसंगेसु मोहट्ठाणेसु चेव य।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले॥ १९॥

सिद्धाइगुणजोगेसु तेत्तीसासायणासु य।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले॥ २०॥

ईइ एएसु ठाणेसु जे भिक्खू जयई सया।
खिप्पं सो सव्वसंसारा विप्पमुच्चइ पण्डिओ॥ २१॥ त्ति बेमि॥

॥ चरणविही समत्ता॥ ३१॥

॥ पमायट्ठाणं द्वात्रिंशं अध्ययनम्॥

अच्चन्तकालस्स समूलगस्स सव्वस्स दुक्खस्स उ जो पमोक्खो।
तं भासओ मे पडिपुण्णचित्ता सुणेह एगन्तहियं हियत्थं॥ १॥

नाणस्स सव्वस्स पगासणाए अज्ञाणमोहस्स विवज्जणाए।
रागस्स दोसस्स य संखएणं एगन्तसोक्खं समुवेइ मोक्खं॥ २॥

तस्सेस मग्गो गुरुविद्धसेवा विवज्जणा बालजणस्स दूरा ।
सज्झायएगन्तनिसेवणा य सुत्तत्थसंचिन्तणया धिई य ॥ ३ ॥

आहारमिच्छे मियमेसणिज्जं सहायमिच्छे निउणत्थबुद्धिं ।
निकेयमिच्छेज्ज विवेगजोग्गं समाहिकामे समणे तवस्सी ॥ ४ ॥

न वा लभेज्जा निउणं सहायं गुणाहियं वा गुणओ समं वा ।
एक्को वि पावाइं विवज्जयन्तो विहरेज्ज कामेसु असज्जमाणो ॥ ५ ॥

जहा य अण्डप्पभवा बलागा अण्डं बलागप्पभवं जहा य ।
एमेव मोहाययणं खु तण्हा मोहं च तण्हाययणं वयन्ति ॥ ६ ॥

रागो य दोसो वि य कम्मबीयं कम्मं च मोहप्पभवं वयन्ति ।
कम्मं च जाईमरणस्स मूलं दुक्खं च जाईमरणं वयन्ति ॥ ७ ॥

दुक्खं हयं जस्स न होइ मोहो मोहो हओ जस्स न होइ तण्हा ।
तण्हा हया जस्स न होइ लोहो लोहो हओ जस्स न किंचणाइं ॥ ८ ॥

रागं च दोसं च तहेव मोहं उद्धत्तुकामेण समूलजालं ।
जे जे उवाया पडिवज्जियव्वा ते कित्तइस्सामि अहाणुपुव्विं ॥ ९ ॥

रसा पगामं न निसेवियव्वा पायं रसा दित्तिकरा नराणं ।
दित्तं च कामा समभिद्दवन्ति दुमं जहा साउफलं व पक्खी ॥ १० ॥

जहा दवग्गी पउरिन्धणे वणे समारुओ नोवसमं उवेइ ।
एविन्दियग्गी वि पगामभोइणो न बम्भयारिस्स हियाय कस्सई ॥ ११ ॥

विवित्तसेज्जासणजन्तियाणं ओमासणाणं दमिइन्दियाणं ।
न रागसत्तू धरिसेइ चित्तं पराइओ वाहिरिवोसहेहिं ॥ १२ ॥

जहा बिरालावसहस्स मूले न मूसगाणं वसही पसत्था ।
एमेव इत्थीनिलयस्स मज्झे न बम्भयारिस्स खमो निवासो ॥ १३ ॥

न रूवलावण्णविलासहासं न जंपियं इंगियपेहियं वा ।
इत्थीण चित्तंसि निवेसइत्ता दट्ठुं ववस्से समणे तवस्सी ॥ १४ ॥

अदंसणं चेव अपत्थणं च अचिन्तणं चेव अकित्तणं च ।
इत्थीजणस्सारियझाणजुग्गं हियं सया बम्भवए रयाणं ॥ १५ ॥

कामं तु देवीहि विभूसियाहिं न चाइया खोभइउं तिगुत्ता ।
तहा वि एगन्तहियं ति नच्चा विवित्तवासो मुणिणं पसत्थो ॥ १६ ॥

मोक्खाभिकंखिस्स उ माणवस्स संसारभीरुस्स ठियस्स धम्मे ।
नेयारिसं दुत्तरमत्थि लोए जहित्थिओ बालमणोहराओ ॥ १७ ॥

एए य संगे समइक्कमित्ता सुदुत्तरा चेव भवन्ति सेसा।
जहा महासागरमुत्तारित्ता नई भवे अवि गंगासमाणा॥ १८॥

कामाणुगिद्धिप्पभवं खु दुक्खं सव्वस्स लोगस्स सदेवगस्स।
जं काइयं माणसियं च किंचि तस्सऽन्तगं गच्छइ वीयरागो॥ १९॥

जहा य किंपागफला मणोरमा रसेण वण्णेण य भुज्जमाणा।
ते खुड्डए जीविय पच्चमाणा एओवमा कामगुणा विवागे॥ २०॥

जे इन्दियाणं विसया मणुन्ना न तेसु भावं निसिरे कयाइ।
न यामणुन्नेसु मणं पि कुज्जा समाहिकामे समणे तवस्सी॥ २१॥

चक्खुस्स रूवं गहणं वयन्ति तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु समो य जो तेसु स वीयरागो॥ २२॥

रूवस्स चक्खुं गहणं वयन्ति चक्खुस्स रूवं गहणं वयन्ति।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु॥ २३॥

रूवेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं अकालियं पावइ से विणासं।
रागाउरे से जह वा पयंगे आलोयलोले समुवेइ मच्चुं॥ २४॥

जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं।
दुद्दन्तदोसेण सएण जन्तू न किंचि रूवं अवरुज्झई से॥ २५॥

एगन्तरत्ते रुइरंसि रूवे अतालिसे से कुणई पओसं।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले न लिप्पई तेण मुणी विरागे॥ २६॥

रूवाणुगासाणुगए य जीवे चराचरे हिंसइ णेगरूवे।
चित्तेहिं ते परितावेइ बाले पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे॥ २७॥

रूवाणुवाएण परिग्गहेण उप्पायणे रक्खणसन्निओगे।
वए विओगे य कहं सुहं से संभोगकाले य अतित्तिलाभे॥ २८॥

रूवे अतित्ते य परिग्गहंमि सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स लोभाविले आययई अदत्तं॥ २९॥

तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो रूवे अतित्तस्स परिग्गहे य।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा तत्थाऽवि दुक्खा न विमुच्चई से॥ ३०॥

मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य पओगकाले य दुही दुरन्ते।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो रूवे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो॥ ३१॥

रूवाणुरत्तस्स नरस्स एवं कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि।
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं॥ ३२॥

एमेव रूवम्मि गओ पओसं उवेइ दुक्खोहपरंपराओ।
पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥ ३३ ॥

रूवे विरत्तो मणुओ विसोगो एएण दुक्खोहपरंपरेण।
न लिप्पए भवमज्झे वि सन्तो जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥ ३४ ॥

सोयस्स सद्दं गहणं वयन्ति तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु समो य जो तेसु स वीयरागो ॥ ३५ ॥

सद्दस्स सोयं गहणं वयन्ति सोयस्स सद्दं गहणं वयन्ति।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥ ३६ ॥

सद्देसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं अकालियं पावइ से विणासं।
रागाउरे हरिणमिगे व मुद्धे सद्दे अतित्ते समुवेइ मच्चुं ॥ ३७ ॥

जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं।
दुद्दन्तदोसेण सएण जन्तू न किंचि सद्दं अवरुज्झई से ॥ ३८ ॥

एगन्तरत्ते रुइरंसि सद्दे अतालिसे से कुणई पओसं।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥ ३९ ॥

सद्दाणुगासाणुगए य जीवे चराचरे हिंसइ णेगरूवे।
चित्तेहिं ते परियावेइ बाले पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥ ४० ॥

सद्दाणुवाएण परिग्गहेण उप्पायणे रक्खणसन्निओगे।
वए विओगे य कहं सुहं से संभोगकाले य अतित्तिलाभे ॥ ४१ ॥

सद्दे अतित्ते य परिग्गहंमि सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स लोभाविले आययई अदत्तं ॥ ४२ ॥

तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो सद्दे अतित्तस्स परिग्गहे य।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥ ४३ ॥

मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य पओगकाले य दुही दुरन्ते।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो सद्दे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥ ४४ ॥

सद्दाणुरत्तस्स नरस्स एवं कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि।
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥ ४५ ॥

एमेव सद्दम्मि गओ पओसं उवेइ दुक्खोहपरंपराओ।
पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥ ४६ ॥

सद्दे विरत्तो मणुओ विसोगो एएण दुक्खोहपरंपरेण।
न लिप्पए भवमज्झे वि सन्तो जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥ ४७ ॥

घाणस्स गन्धं गहणं वयन्ति तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु समो य जो तेसु स वीयरागो॥ ४८॥

गन्धस्स घाणं गहणं वयन्ति घाणस्स गन्धं गहणं वयन्ति।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु॥ ४९॥

गन्धेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं अकालियं पावइ से विणासं।
रागाउरे ओसहगन्धगिद्धे सप्पे बिलाओ विव निक्खमन्ते॥ ५०॥

जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं।
दुद्दन्तदोसेण सएण जन्तू न किंचि गन्धं अवरुज्झई से॥ ५१॥

एगन्तरत्ते रुइरंसि गन्धे अतालिसे से कुणई पओसं।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले न लिप्पई तेण मुणी विरागो॥ ५२॥

गन्धाणुगासाणुगए य जीवे चराचरे हिंसइ णेगरूवे।
चित्तेहिं ते परितावेइ बाले पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे॥ ५३॥

गन्धाणुवाएण परिग्गहेण उप्पायणे रक्खणसन्निओगे।
वए विओगे य कहं सुहं से संभोगकाले य अतित्तिलाभे॥ ५४॥

गन्धे अतित्ते य परिग्गहंमि सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स लोभाविले आययई अदत्तं॥ ५५॥

तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो गन्धे अतित्तस्स परिग्गहे य।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से॥ ५६॥

मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य पओगकाले य दुही दुरन्ते।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो गन्धे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो॥ ५७॥

गन्धाणुरत्तस्स नरस्स एवं कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि।
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं॥ ५८॥

एमेव गन्धम्मि गओ पओसं उवेइ दुक्खोहपरंपराओ।
पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं जं से पुणो होइ दुहं विवागे॥ ५९॥

गन्धे विरत्तो मणुओ विसोगो एएण दुक्खोहपरंपरेण।
न लिप्पई भवमज्झे वि सन्तो जलेण वा पोक्खरिणीपलासं॥ ६०॥

जिब्भाए रसं गहणं वयन्ति तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु समो य जो तेसु स वीयरागो॥ ६१॥

रसस्स जिब्भं गहणं वयन्ति जिब्भाए रसं गहणं वयन्ति।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु॥ ६२॥

रसेसु जो गेहिमुवेइ तिव्वं अकालियं पावइ से विणासं।
रागाउरे बडिसविभिन्नकाए मच्छे जहा आमिसभोगगिद्धे ॥ ६३ ॥

जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं।
दुद्दन्तदोसेण सएण जन्तू रसं न किंचि अवरुज्झई से ॥ ६४ ॥

एगन्तरत्ते रुइरे रसम्मि अतालिसे से कुणई पओसं।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥ ६५ ॥

रसाणुगासाणुगए य जीवे चराचरे हिंसइ णेगरूवे।
चित्तेहिं ते परितावेइ बाले पीलेइ अत्तट्ठगुरु किलिट्ठे ॥ ६६ ॥

रसाणुवाएण परिग्गहेण उप्पायणे रक्खणसन्निओगे।
वए विओगे य कहं सुहं से संभोगकाले य अतित्तिलाभे ॥ ६७ ॥

रसे अतित्ते य परिग्गहंमि सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स लोभाविले आययई अदत्तं ॥ ६८ ॥

तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो रसे अतित्तस्स परिग्गहे य।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥ ६९ ॥

मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य पओगकाले य दुही दुरन्ते।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो रसे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥ ७० ॥

रसाणुरत्तस्स नरस्स एवं कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि।
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥ ७१ ॥

एमेव रसम्मि गओ पओसं उवेइ दुक्खोहपरंपराओ।
पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥ ७२ ॥

रसे विरत्तो मणुओ विसोगो एएण दुक्खोहपरंपरेण।
न लिप्पई भवमज्झे वि सन्तो जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥ ७३ ॥

कायस्स फासं गहणं वयन्ति तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु समो य जो तेसु स वीयरागो ॥ ७४ ॥

फासस्स कायं गहणं वयन्ति कायस्स फासं गहणं वयन्ति।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥ ७५ ॥

फासेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं अकालियं पावइ से विणासं।
रागाउरे सीयजलावसन्ने गाहग्गहीए महिसे विवन्ने ॥ ७६ ॥

जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं।
दुद्दन्तदोसेण सएण जन्तू न किंचि फासं अवरुज्झई से ॥ ७७ ॥

एगन्तरत्ते रुइरंसि फासे अतालिसे से कुणई पओसं।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥ ७८ ॥

फासाणुगासाणुगए य जीवे चराचरे हिंसइ णेगरूवे।
चित्तेहिं ते परितावेइ बाले पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥ ७९ ॥

फासाणुवाएण परिग्गहेण उप्पायणे रक्खणसन्निओगे।
वए विओगे य कहं सुहं से संभोगकाले य अतित्तिलाभे ॥ ८० ॥

फासे अतित्ते य परिग्गहंमि सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स लोभाविले आययई अदत्तं ॥ ८१ ॥

तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो फासे अतित्तस्स परिग्गहे य।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥ ८२ ॥

मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य पओगकाले य दुही दुरन्ते।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो फासे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥ ८३ ॥

फासाणुरत्तस्स नरस्स एवं कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि।
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥ ८४ ॥

एमेव फासम्मि गओ पओसं उवेइ दुक्खोहपरंपराओ।
पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥ ८५ ॥

फासे विरत्तो मणुओ विसोगो एएण दुक्खोहपरंपरेण।
न लिप्पई भवमज्झे वि सन्तो जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥ ८६ ॥

मणस्स भावं गहणं वयन्ति तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु समो य जो तेसु स वीयरागो ॥ ८७ ॥

भावस्स मणं गहणं वयन्ति मणस्स भावं गहणं वयन्ति।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥ ८८ ॥

भावेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं अकालियं पावइ से विणासं।
रागाउरे कामगुणेसु गिद्धे करेणुमग्गावहिए गए वा ॥ ८९ ॥

जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं।
दुद्दन्तदोसेण सएण जन्तू न किंचि भावं अवरुज्झई से ॥ ९० ॥

एगन्तरत्ते रुइरंसि भावे अतालिसे से कुणई पओसं।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥ ९१ ॥

भावाणुगासाणुगए य जीवे चराचरे हिंसइ णेगरूवे।
चित्तेहिं ते परितावेइ बाले पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥ ९२ ॥

भावाणुवाएण परिग्गहेण उप्पायणे रक्खणसन्निओगे।
वए विओगे य कहं सुहं से संभोगकाले य अतित्तिलाभे ॥ ९३ ॥

भावे अतित्ते य परिग्गहंमि सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स लोभाविले आययई अदत्तं ॥ ९४ ॥

तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो भावे अतित्तस्स परिग्गहे य।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥ ९५ ॥

मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य पओगकाले य दुही दुरन्ते।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो भावे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥ ९६ ॥

भावाणुरत्तस्स नरस्स एवं कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि।
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥ ९७ ॥

एमेव भावम्मि गओ पओसं उवेइ दुक्खोहपरंपराओ।
पदुट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥ ९८ ॥

भावे विरत्तो मणुओ विसोगो एएण दुक्खोहपरंपरेण।
न लिप्पई भवमज्झे वि सन्तो जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥ ९९ ॥

एविन्दियत्था य मणस्स अत्था दुक्खस्स हेउं मणुयस्स रागिणो।
ते चेव थोवं पि कयाइ दुक्खं न वीयरागस्स करेन्ति किंचि ॥ १०० ॥

न कामभोगा समयं उवेन्ति न यावि भोगा विगइं उवेन्ति।
जे तप्पओसी य परिग्गही य सो तेसु मोहा विगइं उवेइ ॥ १०१ ॥

कोहं च माणं च तहेव मायं लोहं दुगुंछं अरइं रइं च।
हासं भयं सोगपुमित्थिवेयं नपुंसवेयं विविहे य भावे ॥ १०२ ॥

आवज्जई एवमणेगरूवे एवंविहे कामगुणेसु सत्तो।
अन्ने य एयप्पभवे विसेसे कारुण्णदीणे हिरिमे वइस्से ॥ १०३ ॥

कप्पं न इच्छिज्ज सहायलिच्छू पच्छाणुतावेण तवप्पभावं।
एवं वियारे अमियप्पयारे आवज्जई इन्दियचोरवस्से ॥ १०४ ॥

तओ से जायन्ति पओयणाइं निमज्जिउं मोहमहण्णवम्मि।
सुहेसिणो दुक्खविणोयणट्ठा तप्पच्चयं उज्जमए य रागी ॥ १०५ ॥

विरज्जमाणस्स य इन्दियत्था सद्दाइया तावइयप्पगारा।
न तस्स सव्वे वि मणुन्नयं वा निव्वत्तयन्ती अमणुन्नयं वा ॥ १०६ ॥

एवं ससंकप्पविकप्पणासुं संजायई समयमुवट्ठियस्स।
अत्थे असंकप्पयओ तओ से पहीयए कामगुणेसु तण्हा ॥ १०७ ॥

स वीयरागो कयसव्वकिच्चो खवेइ नाणावरणं खणेणं।
तहेव जं दंसणमावरेइ जं चऽन्तरायं पकरेइ कम्मं॥ १०८॥

सव्वं तओ जाणइ पासए य अमोहणे होइ निरन्तराए।
अणासवे झाणसमाहिजुत्ते आउक्खए मोक्खमुवेइ सुद्धे॥ १०९॥

सो तस्स सव्वस्स दुहस्स मुक्को जं बाहई सययं जन्तुमेयं।
दीहामयं विप्पमुक्को पसत्थो तो होइ अच्चन्तसुही कयत्थो॥ ११०॥

अणाइकालप्पभवस्स एसो सव्वस्स दुक्खस्स पमोक्खमग्गो।
वियाहिओ जं समुविच्च सत्ता कमेण अच्चन्तसुही भवन्ति॥ १११॥

त्ति बेमि॥

॥ पमायट्ठाणं समत्तं॥ ३२॥

॥ कम्मपयडी त्रयस्त्रिंशं अध्ययनम्॥

अट्ठ कम्माइं वोच्छामि आणुपुव्विं जहक्कमं।
जेहिं बद्धो अयं जीवो संसारे परिवट्टई॥ १॥
नाणस्सावरणिज्जं दंसणावरणं तहा।
वेयणिज्जं तहा मोहं आउकम्मं तहेव य॥ २॥

नामकम्मं च गोयं च अन्तरायं तहेव य।
एवमेयाइं कम्माइं अट्ठेव उ समासओ॥ ३॥

नाणावरणं पंचविहं सुयं आभिणिबोहियं।
ओहिनाणं च तइयं मणनाणं च केवलं॥ ४॥

निद्दा तहेव पयला निद्दानिद्दा पयलपयला य।
तत्तो य थीणगिद्धी उ पंचमा होइ नायव्वा॥ ५॥

चक्खुमचक्खुओहिस्स दंसणे केवले य आवरणे।
एवं तु नवविगप्पं नायव्वं दंसणावरणं॥ ६॥

वेयणीयं पि य दुविहं सायमसायं च आहियं।
सायस्स उ बहू भेया एमेव असायस्स वि॥ ७॥

मोहणिज्जं पि दुविहं दंसणे चरणे तहा।
दंसणे तिविहं वुत्तं चरणे दुविहं भवे॥ ८॥

सम्मत्तं चेव मिच्छत्तं सम्मामिच्छत्तमेव य ।
एयाओ तिन्नि पयडीओ मोहणिज्जस्स दंसणे ॥ ९ ॥

चरित्तमोहणं कम्मं दुविहं तु वियाहियं ।
कसायमोहणिज्जं तु नोकसायं तहेव य ॥ १० ॥

सोलसविहभेएणं कम्मं तु कसायजं ।
सत्तविहं नवविहं वा कम्मं च नोकसायजं ॥ ११ ॥

नेरइयतिरिक्खाउं मणुस्साउं तहेव य ।
देवाउयं चउत्थं तु आउकम्मं चउव्विहं ॥ १२ ॥

नामं कम्मं तु दुविहं सुहमसुहं च आहियं ।
सुहस्स उ बहू भेया एमेव असुहस्स वि ॥ १३ ॥

गोयं कम्मं दुविहं उच्चं नीयं च आहियं ।
उच्चं अट्ठविहं होइ एवं नीयं पि आहियं ॥ १४ ॥

दाणे लाभे य भोगे य उवभोगे वीरिए तहा ।
पंचविहमन्तरायं समासेण वियाहियं ॥ १५ ॥

एयाओ मूलपयडीओ उत्तराओ य आहिया ।
पएसग्गं खेत्तकाले य भावं चाउत्तरं सुण ॥ १६ ॥

सव्वेसिं चेव कम्माणं पएसग्गमणन्तगं ।
गण्ठियसत्ताईयं अन्तो सिद्धाण आहियं ॥ १७ ॥

सव्वजीवाण कम्मं तु संगहे छद्दिसागयं ।
सव्वेसु वि पएसेसु सव्वं सव्वेण बद्धगं ॥ १८ ॥

उदहीसरिसनामाण तीसई कोडिकोडिओ ।
उक्कोसिया ठिई होइ अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥ १९ ॥

आवरणिज्जाण दुण्हं पि वेयणिज्जे तहेव य ।
अन्तराए य कम्मम्मि ठिई एसा वियाहिया ॥ २० ॥

उदहीसरिसनामाणं सत्तरिं कोडिकोडिओ ।
मोहणिज्जस्स उक्कोसा अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥ २१ ॥

तेत्तीस सागरोवमा उक्कोसेण वियाहिया ।
ठिई उ आउकम्मस्स अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥ २२ ॥

उदहीसरिसनामाणं वीसइ कोडिकोडिओ ।
नामगोत्ताणं उक्कोसा अट्ठ मुहुत्ता जहन्निया ॥ २३ ॥

सिद्धाणऽणन्तभागो य अणुभागा हवन्ति उ।
सव्वेसु वि पएसग्गं सव्वजीवे सऽइच्छियं ॥ २४ ॥

तम्हा एएसि कम्माणं अणुभागे वियाणिया।
एएसिं संवरे चेव खवणे य जए बुहे ॥ २५ ॥ त्ति बेमि ॥

॥ कम्मपयडी समत्ता ॥ ३३ ॥

॥ लेसज्झयणं चतुस्त्रिंशं अध्ययनम् ॥

लेसज्झयणं पवक्खामि आणुपुव्विं जहक्कमं।
छण्हं पि कम्मलेसाणं अणुभावे सुणेह मे ॥ १ ॥

नामाइं वण्णरसगन्धफासपरिणामलक्खणं।
ठाणं ठिइं गइं चाउं लेसाणं तु सुणेह मे ॥ २ ॥

किण्हा नीला य काऊ य तेऊ पम्हा तहेव य।
सुक्कलेसा य छट्ठा य नामाइं तु जहक्कमं ॥ ३ ॥

जीमूयनिद्धसंकासा गवलरिट्ठगसन्निभा।
खंजणनयणनिभा किण्हलेसा उ वण्णओ ॥ ४ ॥

नीलाऽसोगसंकासा चासपिच्छसमप्पभा ॥
वेरुलियनिद्धसंकासा नीललेसा उ वण्णओ ॥ ५ ॥

अयसीपुप्फसंकासा कोइलच्छदसन्निभा।
पारेवयगीवनिभा काऊलेसा उ वण्णओ ॥ ६ ॥

हिंगुलधाउसंकासा तरुणाइच्चसन्निभा।
सुयतुण्डपईवनिभा तेऊलेसा उ वण्णओ ॥ ७ ॥

हरियालभेयसंकासा हलिद्दाभेयसंनिभा।
सणासणकुसुमनिभा पम्हलेसा उ वण्णओ ॥ ८ ॥

संखंककुन्दसंकासा खीरपूरसमप्पभा।
रययहारसंकासा सुक्कलेसा उ वण्णओ ॥ ९ ॥

जह कडुयतुम्बगरसो निम्बरसो कडुयरोहिणिरसो वा।
एत्तो वि अणन्तगुणो रसो य किण्हाए नायव्वो ॥ १० ॥

जह तिकडुयस्स य रसो तिक्खो जह हत्थिपिप्पलीए वा।
एत्तो वि अणन्तगुणो रसो उ नीलाए नायव्वो ॥ ११ ॥

जह तरुणअम्बगरसो तुवरकविट्ठस्स वावि जारिसओ।
एत्तो वि अणन्तगुणो रसो उ काऊए नायव्वो ॥ १२ ॥

जहपरिणयम्बगरसो पक्कविट्ठस्स वावि जारिसओ।
एत्तो वि अणन्तगुणो रसो उ तेऊए नायव्वो ॥ १३ ॥

वरवारुणीए व रसो विविहाण व आसवाण जारिसओ।
महुमेरयस्स व रसो एत्तो पम्हाए परएणं ॥ १४ ॥

खज्जूरमुद्दियरसो खीररसो खण्डसक्कररसो वा।
एत्तो वि अणन्तगुणो रसो उ सुक्काए नायव्वो ॥ १५ ॥

जह गोमडस्स गन्धो सुणगमडस्स व जहा अहिमडस्स।
एत्तो वि अणन्तगुणो लेसाणं अप्पसत्थाणं ॥ १६ ॥

जह सुरहिकुसुमगन्धो गन्धवासाण पिस्समाणाणं।
एत्तो वि अणन्तगुणो पसत्थलेसाणं तिण्हं पि ॥ १७ ॥

जह करगयस्स फासो गोजिब्भाए व सागपत्ताणं।
एत्तो वि अणन्तगुणो लेसाणं अप्पसत्थाणं ॥ १८ ॥

जह बूरस्स व फासो नवणीयस्स व सिरीसकुसुमाणं।
एत्तो वि अणन्तगुणो पसत्थलेसाण तिण्हं पि ॥ १९ ॥

तिविहो व नवविहो वा सत्तावीसइविहेक्कसीओ वा।
दुसओ तेयालो वा लेसाणं होइ परिणामो ॥ २० ॥

पंचासवप्पवत्तो तीहिं अगुत्तो छसुं अविरओ य।
तिव्वारम्भपरिणओ खुद्दो साहसिओ नरो ॥ २१ ॥

निद्धन्धसपरिणामो निस्संसो अजिइन्दिओ।
एयजोगसमाउत्तो किण्हलेसं तु परिणमे ॥ २२ ॥

इस्साअमरिसअतवो अविज्जमाया अहीरिया य।
गेही पओसे य सढे पमत्ते रसलोलुए ॥ २३ ॥

आरम्भाओ अविरओ खुद्दो साहस्सिओ नरो।
एयजोगसमाउत्तो नीललेसं तु परिणमे ॥ २४ ॥

वंके वंकसमायारे नियडिल्ले अणुज्जुए।
पलिउंचग ओवहिए मिच्छदिट्ठी अणारिए ॥ २५ ॥

उप्फालगदुट्ठवाई य तेणे यावि य मच्छरी।
एयजोगसमाउत्तो काऊलेसं तु परिणमे ॥ २६ ॥

नीयावित्ती अचवले अमाई अकुऊहले।
विणीयाविणए दन्ते जोगवं उवहाणवं ॥ २७ ॥

पियधम्मे दृढधम्मे वज्जभीरू हिएसए।
एयजोगसमाउत्तो तेऊलेसं तु परिणमे ॥ २८ ॥

पयणुक्कोहमाणे य मायालोभे य पयणुए।
पसन्तचित्ते दन्तप्पा जोगवं उवहाणवं ॥ २९ ॥

तहा पयणुवाई य उवसन्ते जिइन्दिए।
एयजोगसमाउत्तो पम्हलेसं तु परिणमे ॥ ३० ॥

अट्टरुद्दाणि वज्जित्ता धम्मसुक्काणि झायए।
पसन्तचित्ते दन्तप्पा समिए गुत्ते य गुत्तिसु ॥ ३१ ॥

सरागे वीयरागे वा उवसन्ते जिइन्दिए।
एयजोगसमाउत्तो सुक्कलेसं तु परिणमे ॥ ३२ ॥

असंखिज्जाणोसप्पिणीण उस्सप्पिणीण जे समया।
संखाईया लोगा लेसाण हवन्ति ठाणाइं ॥ ३३ ॥

मुहुत्तद्धं तु जहन्ना तेत्तीसा सागरा मुहुत्तऽहिया।
उक्कोसा होइ ठिई नायव्वा किण्हलेसाए ॥ ३४ ॥

मुहुत्तद्धं तु जहन्ना दस उदही पलियमसंखभागमब्भहिया।
उक्कोसा होइ ठिई नायव्वा नीललेसाए ॥ ३५ ॥

मुहुत्तद्धं तु जहन्ना तिण्णुदही पलियमसंखभागमब्भहिया।
उक्कोसा होइ ठिई नायव्वा काउलेसाए ॥ ३६ ॥

मुहुत्तद्धं तु जहन्ना दोण्णुदही पलियमसंखभागमब्भहिया।
उक्कोसा होइ ठिई नायव्वा तेउलेसाए ॥ ३७ ॥

मुहुत्तद्धं तु जहन्ना दस होन्ति य सागरा मुहुत्तहिया।
उक्कोसा होइ ठिई नायव्वा पम्हलेसाए ॥ ३८ ॥

मुहुत्तद्धं तु जहन्ना तेत्तीसं सागरा मुहुत्तहिया।
उक्कोसा होइ ठिई नायव्वा सुक्कलेसाए ॥ ३९ ॥

एसा खलु लेसाणं ओहेण ठिई उ वण्णिया होइ।
चउसु वि गईसु एत्तो लेसाण ठिइं तु वोच्छामि ॥ ४० ॥

दस वाससहस्साइं काऊए ठिई जहन्निया होइ।
तिण्णुदही पलियमसंखभागं च उक्कोसा ॥ ४१ ॥

तिण्णुदही पलियवमसंखभागो जहन्न नीलठिई।
दस उदही पलिओवममसंखभागं च उक्कोसा ॥ ४२ ॥

दस उदही पलिओवममसंखभागं जहन्निया होइ।
तेत्तीससागराइं उक्कोसा होइ किण्हाए ॥ ४३ ॥

एसा नेरइयाणं लेसाण ठिई उ वण्णिया होइ।
तेण परं वोच्छामि तिरियमणुस्साण देवाणं ॥ ४४ ॥

अन्तोमुहुत्तमद्धं लेसाण ठिई जहिं जहिं जा उ।
तिरियाण नराणं वा वज्जित्ता केवलं लेसं ॥ ४५ ॥

मुहुत्तद्धं तु जहन्ना उक्कोसा होइ पुव्वकोडी उ।
नवहि वरिसेहिं ऊणा नायव्वा सुक्कलेसाए ॥ ४६ ॥

एसा तिरियनराणं लेसाण ठिई उ वण्णिया होइ।
तेण परं वोच्छामि लेसाण ठिई उ देवाणं ॥ ४७ ॥

दस वाससहस्साइं किण्हाए ठिई जहन्निया होइ।
पलियमसंखिज्जइमो उक्कोसा होइ किण्हाए ॥ ४८ ॥

जा किण्हाए ठिई खलु उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया।
जहन्नेणं नीलाए पलियमसंखं च उक्कोसा ॥ ४९ ॥

जा नीलाए ठिई खलु उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया।
जहन्नेणं काऊए पलियमसंखं च उक्कोसा ॥ ५० ॥

तेण परं वोच्छामि तेऊलेसा जहा सुरगणाणं।
भवणवइ-वाणमन्तर-जोइस-वेमाणियाणं च ॥ ५१ ॥

पलिओवमं जहन्ना उक्कोसा सागरा उ दुण्हऽहिया।
पलियमसंखेज्जेणं होइ सभागेण तेऊए ॥ ५२ ॥

दस वाससहस्साइं तेऊए ठिई जहन्निया होइ।
दुण्णुदही पलिओवमअसंखभागं च उक्कोसा ॥ ५३ ॥

जा तेऊए ठिई खलु उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया।
जहन्नेणं पम्हाए दस मुहुत्ताऽहियाइं उक्कोसा ॥ ५४ ॥

जा पम्हाए ठिई खलु उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया।
जहन्नेणं सुक्काए तेत्तीसमुहुत्तमब्भहिया ॥ ५५ ॥

किण्हा नीला काऊ तिन्नि वि एयाओ अहम्मलेसाओ।
एयाहि तिहि वि जीवो दुग्गइं उववज्जई ॥ ५६ ॥

तेऊ पम्हा सुक्का तिन्नि वि एयाओ धम्मलेसाओ।
एयाहि तिहि वि जीवो सुग्गइं उववज्जई ॥ ५७ ॥

लेसाहिं सव्वाहिं पढमे समयम्मि परिणयाहिं तु।
न हु कस्सइ उववाओ परे भवे अत्थि जीवस्स ॥ ५८ ॥

लेसाहिं सव्वाहिं चरिमे समयम्मि परिणयाहिं तु।
न हु कस्सइ उववाओ परे भवे अत्थि जीवस्स ॥ ५९ ॥

अन्तमुहुत्तम्मि गए अन्तमुहुत्तम्मि सेसए चेव।
लेसाहिं परिणयाहिं जीवा गच्छन्ति परलोयं ॥ ६० ॥

तम्हा एयासि लेसाणं अणुभावं वियाणिया।
अप्पसत्थाओ वज्जित्ता पसत्थाओऽहिट्ठिए मुणि ॥ ६१ ॥

॥ त्ति बेमि ॥

॥ लेसज्झयणं समत्तं ॥ ३४ ॥

॥ अणगारज्झयणं पञ्चत्रिंशं अध्ययनम् ॥

सुणेह मे एगमणा मग्गं बुद्धेहिं देसियं।
जमायरन्तो भिक्खू दुक्खाणन्तकरे भवे ॥ १ ॥

गिहवासं परिच्चज्ज पवज्जामस्सिए मुणी।
इमे संगे वियाणिज्जा जेहिं सज्जन्ति माणवा ॥ २ ॥

तहेव हिंसं अलियं चोज्जं अबम्भसेवणं।
इच्छाकामं च लोभं च संजओ परिवज्जए ॥ ३ ॥

मणोहरं चित्तघरं मल्लधूवेण वासियं।
सकवाडं पण्डुरुल्लोयं मणसा वि न पत्थए ॥ ४ ॥

इन्दियाणि उ भिक्खुस्स तारिसम्मि उवस्सए।
दुक्कराइं निवारेउं कामरागविवड्ढणे ॥ ५ ॥

सुसाणे सुन्नगारे वा रुक्खमूले व एक्कओ ।
पइरिक्के परकडे वा वासं तत्थऽभिरोयए ॥ ६ ॥

फासुयम्मि अणाबाहे इत्थीहिं अणभिद्दुए ।
तत्थ संकप्पए वासं भिक्खू परमसंजए ॥ ७ ॥

न सयं गिहाइं कुविज्जा णेव अन्नेहिं कारए ।
गिहकम्मसमारम्भे भूयाणं दिस्सए वहो ॥ ८ ॥

तसाणं थावराणं च सुहुमाणं बायराण य ।
तम्हा गिहसमारम्भं संजओ परिवज्जए ॥ ९ ॥

तहेव भत्तपाणेसु पयणे पयावणेसु य ।
पाणभूयदयट्ठाए न पये न पयावए ॥ १० ॥

जलधन्ननिस्सिया जीवा पुढवीकट्ठनिस्सिया ।
हम्मन्ति भत्तपाणेसु तम्हा भिक्खू न पयावए ॥ ११ ॥

विसप्पे सव्वओधारे बहुपाणविणासणे ।
नत्थि जोइसमे सत्थे तम्हा जोइं न दीवए ॥ १२ ॥

हिरण्णं जायरूवं च मणसा वि न पत्थए ।
समलेट्ठुकंचणे भिक्खू विरए कयविक्कए ॥ १३ ॥

किणन्तो कइओ होइ विक्किणन्तो य वाणिओ ।
कयविक्कयम्मि वट्टन्तो भिक्खू न भवइ तारिसो ॥ १४ ॥

भिक्खियव्वं न केयव्वं भिक्खुणा भिक्खवित्तिणा ।
कयविक्कओ महादोसो भिक्खावित्ती सुहावहा ॥ १५ ॥

समुयाणं उंछमेसिज्जा जहासुत्तमणिन्दियं ।
लाभालाभम्मि संतुट्ठे पिण्डवायं चरे मुणी ॥ १६ ॥

अलोले न रसे गिद्धे जिब्भादन्ते अमुच्छिए ।
न रसट्ठाए भुंजिज्जा जवणट्ठाए महामुणी ॥ १७ ॥

अच्चणं रयणं चेव वन्दणं पूयणं तहा ।
इड्ढीसक्कारसम्माणं मणसा वि न पत्थए ॥ १८ ॥

सुक्कं झाणं झियाएज्जा अणियाणे अकिंचणे ।
वोसट्ठकाए विहरेज्जा जाव कालस्स पज्जओ ॥ १९ ॥

निज्जूहिऊण आहारं कालधम्मे उवट्ठिए ।
जहिऊण माणुसं बोन्दिं पहू दुक्खा विमुच्चई ॥ २० ॥

निम्ममे निरहंकारे वीयरागो अणासवो।
संपत्तो केवलं नाणं सासयं परिणिव्वुडे ॥ २१ ॥ त्ति बेमि ॥

॥ अणगारज्झयणं समत्तं ॥ ३५ ॥

॥ जीवाजीवविभत्ती षट्त्रिंशं अध्ययनम् ॥ 36॥

जीवाजीवविभत्तिं सुणेह मे एगमणा इओ।
जं जाणिऊण भिक्खू सम्मं जयइ संजमे ॥ १ ॥

जीवा चेव अजीवा य एस लोए वियाहिए।
अजीवदेसमागासे अलोगे से वियाहिए ॥ २ ॥

दव्वओ खेत्तओ चेव कालओ भावओ तहा।
परूवणा तेसि भवे जीवाणमजीवाण य ॥ ३ ॥

रूविणो चेवऽरूवी य अजीवा दुविहा भवे।
अरूवी दसहा वुत्ता रूविणो य चउव्विहा ॥ ४ ॥

धम्मत्थिकाए तद्देसे तप्पएसे य आहिए।
अहम्मे तस्स देसे य तप्पएसे य आहिए ॥ ५ ॥

आगासे तस्स देसे य तप्पएसे य आहिए।
अद्धासमए चेव अरूवी दसहा भवे ॥ ६ ॥

धम्माधम्मे य दो चेव लोगमित्ता वियाहिया।
लोगालोगे य आगासे समए समयखेत्तिए ॥ ७ ॥

धम्माधम्मागासा तिन्नि वि एए अणाइया।
अपज्जवसिया चेव सव्वद्धं तु वियाहिया ॥ ८ ॥

समए वि सन्तई पप्प एवमेव वियाहिए।
अएसं पप्प साईए सपज्जवसिए वि य ॥ ९ ॥

खन्धा य खन्धदेसा य तप्पएसा तहेव य।
परमाणुणो य बोद्धव्वा रूविणो य चउव्विहा ॥ १० ॥

एगत्तेण पुहत्तेण खन्धा य परमाणुणो।
लोएगदेसे लोए य भइयव्वा ते उ खेत्तओ ॥

इत्तो कालविभागं तु तेसिं वुच्छं च उव्विहं ॥ ११ ॥

संतइं पप्प तेऽणाई अपज्जवसिया वि य ।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥ १२ ॥

असंखकालमुक्कोसं एक्को समओ जहन्नयं ।
अजीवाण य रूवीणं ठिई एसा वियाहिया ॥ १३ ॥

अणन्तकालमुक्कोसमेक्को समओ जहन्नयं ।
अजीवाण य रूवीण अन्तरेयं वियाहियं ॥ १४ ॥

वण्णओ गन्धओ चेव रसओ फासओ तहा ।
संठाणओ य विन्नेओ परिणामो तेसि पंचहा ॥ १५ ॥

वण्णओ परिणया जे उ पंचहा ते पकित्तिया ।
किण्हा नीला य लोहिया हालिद्दा सुक्किला तहा ॥ १६ ॥

गन्धओ परिणया जे उ दुविहा ते वियाहिया ।
सुब्भिगन्धपरिणामा दुब्भिगन्धा तहेव य ॥ १७ ॥

रसओ परिणया जे उ पंचहा ते पकित्तिया ।
तित्तकडुयकसाया अम्बिला महुरा तहा ॥ १८ ॥

फासओ परिणया जे उ अट्ठहा ते पकित्तिया ।
कक्खडा मउया चेव गरुया लहुया तहा ॥ १९ ॥

सीया उण्हा य निद्धा य तहा लुक्खा य आहिया ।
इय फासपरिणया एए पुग्गला समुदाहिया ॥ २० ॥

संठाणपरिणया जे उ पंचहा ते पकित्तिया ।
परिमण्डला य वट्टा य तंसा चउरंसमायया ॥ २१ ॥

वण्णओ जे भवे किण्हे भइए से उ गन्धओ ।
रसओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥ २२ ॥

वण्णओ जे भवे नीले भइए से उ गन्धओ ।
रसओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥ २३ ॥

वण्णओ लोहिए जे उ भइए से उ गन्धओ ।
रसओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥ २४ ॥

वण्णओ पीयए जे उ भइए से उ गन्धओ ।
रसओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥ २५ ॥

वण्णओ सुक्किले जे उ भइए से उ गन्धओ।
रसओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥ १६ ॥

गन्धओ जे भवे सुब्भी भइए से उ वण्णओ।
रसओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥ १७ ॥

गन्धओ जे भवे दुब्भी भइए से उ वण्णओ।
रसओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥ १८ ॥

रसओ तित्तए जे उ भइए से उ वण्णओ।
गन्धओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥ १९ ॥

रसओ कडुए जे उ भइए से उ वण्णओ।
गन्धओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥ ३० ॥

रसओ कसाए जे उ भइए से उ वण्णओ।
गन्धओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥ ३१ ॥

रसओ अम्बिले जे उ भइए से उ वण्णओ।
गन्धओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥ ३२ ॥

रसओ महुरए जे उ भइए से उ वण्णओ।
गन्धओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥ ३३ ॥

फासओ कक्खडे जे उ भइए से उ वण्णओ।
गन्धओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥ ३४ ॥

फासओ मउए जे उ भइए से उ वण्णओ।
गन्धओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥ ३५ ॥

फासओ गुरुए जे उ भइए से उ वण्णओ।
गन्धओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥ ३६ ॥

फासओ लहुए जे उ भइए से उ वण्णओ।
गन्धओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥ ३७ ॥

फासओ सीयए जे उ भइए से उ वण्णओ।
गन्धओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥ ३८ ॥

फासओ उण्हए जे उ भइए से उ वण्णओ।
गन्धओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥ ३९ ॥

फासओ निद्धए जे उ भइए से उ वण्णओ।
गन्धओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥ ४० ॥

फासओ लुक्खए जे उ भइए से उ वण्णओ।
गन्धओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥ ४१ ॥

परिमण्डलसंठाणे भइए से उ वण्णओ।
गन्धओ रसओ चेव भइए फासओ वि य ॥ ४२ ॥

संठाणओ भवे वट्टे भइए से उ वण्णओ।
गन्धओ रसओ चेव भइए फासओ वि य ॥ ४३ ॥

संठाणओ भवे तंसे भइए से उ वण्णओ।
गन्धओ रसओ चेव भइए फासओ वि य ॥ ४४ ॥

संठाणओ भवे चउरंसे भइए से उ वण्णओ।
गन्धओ रसओ चेव भइए फासओ वि य ॥ ४५ ॥

जे आयय्संठाणे भइए से उ वण्णओ।
गन्धओ रसओ चेव भइए फासओ वि य ॥ ४६ ॥

एसा अजीवविभत्ती समासेण वियाहिया।
इत्तो जीवविभत्तिं वुच्छामि अणुपुव्वसो ॥ ४७ ॥

संसारत्था य सिद्धा य दुविहा जीवा वियाहिया।
सिद्धा णेगविहा वुत्ता तं मे कित्तयओ सुण ॥ ४८ ॥

इत्थी पुरिससिद्धा य तहेव य नपुंसगा।
सलिंगे अन्नलिंगे य गिहिलिंगे तहेव य ॥ ४९ ॥

उक्कोसोगाहणाए य जहन्नमज्झिमाइ य।
उड्ढं अहे य तिरियं च समुद्दम्मि जलम्मि य ॥ ५० ॥

दस य नपुंसएसुं वीसं इत्थियासु य।
पुरिसेसु य अट्ठसयं समएणेगेण सिज्झई ॥ ५१ ॥

चत्तारि य गिहिलिंगे अन्नलिंगे दसेव य।
सलिंगेण अट्ठसयं समएणेगेण सिज्झई ॥ ५२ ॥

उक्कोसोगाहणाए य सिज्झन्ते जुगवं दुवे।
चत्तारि जहन्नाए मज्झे अट्ठुत्तरं सयं ॥ ५३ ॥

चउरुड्ढलोए य दुवे समुद्दे तओ जले वीसमहे तहेव य।
सयं च अट्ठुत्तर तिरियलोए समएणेगेण सिज्झई धुवं ॥ ५४ ॥

कहिं पडिहया सिद्धा कहिं सिद्धा पइट्ठिया।
कहिं बोन्दि चइत्ताणं कत्थ गन्तूण सिज्झई ॥ ५५ ॥

अलोए पडिहया सिद्धा लोयग्गे य पइट्ठिया।
इहं बोन्दि चइत्ताणं तत्थ गन्तूण सिज्झई ॥ ५६ ॥

बारसहिं जोयणेहिं सव्वट्ठस्सुवरिं भवे।
ईसीपब्भारनामा उ पुढवी छत्तसंठिया ॥ ५७ ॥

पणयालसयसहस्सा जोयणाणं तु आयया।
तावइयं चेव वित्थिण्णा तिगुणो साहियपरिरओ ॥ ५८ ॥

अट्ठजोयणबाहुल्ला सा मज्झम्मि वियाहिया।
परिहायन्ती चरिमन्ते मच्छियपत्ताओ तणुयरी ॥ ५९ ॥

अज्जुणसुवण्णगमई सा पुढवी निम्मला सहावेणं।
उत्ताणगछत्तगसंठिया य भणिया जिणवरेहिं ॥ ६० ॥

संखंककुन्दसंकासा पण्डुरा निम्मला सुहा।
सीयाए जोयणे तत्तो लोयन्तो उ वियाहिओ ॥ ६१ ॥

जोयणस्स उ जो तत्थ कोसो उवरिमो भवे।
तस्स कोसस्स छब्भाए सिद्धाणोगाहणा भवे ॥ ६२ ॥

तत्थ सिद्धा महाभागा लोगग्गम्मि पइट्ठिया।
भवप्पवंचओ मुक्का सिद्धिं वरगई गया ॥ ६३ ॥

उस्सेहो जस्स जो होइ भवम्मि चरिमम्मि उ।
तिभागहीणा तत्तो य सिद्धाणोगाहणा भवे ॥ ६४ ॥

एगत्तेण साईया अपज्जवसिया वि य।
पुहत्तेण अणाईया अपज्जवसिया वि य ॥ ६५ ॥

अरूविणो जीवघणा नाणदंसणसन्निया।
अउलं सुहं संपत्ता उवमा जस्स नत्थि उ ॥ ६६ ॥

लोगेगदेसे ते सव्वे नाणदंसणसन्निया।
संसारपारनित्थिण्णा सिद्धिं वरगइं गया ॥ ६७ ॥

संसारत्था उ जे जीवा दुविहा ते वियाहिया।
तसा य थावरा चेव थावरा तिविहा तहिं ॥ ६८ ॥

पुढवी आउजीवा य तहेव य वणस्सई।
इच्चेए थावरा तिविहा तेसिं भेए सुणेह मे ॥ ६९ ॥

दुविहा पुढवीजीवा सुहुमा बायरा तहा।
पज्जत्तमपज्जत्ता एवमेए दुहा पुणो ॥ ७० ॥

बायरा जे उ पज्जत्ता दुविहा ते वियाहिया।
सण्हा खरा य बोद्धव्वा सण्हा सत्तविहा तहिं ॥ ७१ ॥

किण्हा नीला य रुहिरा य हालिद्दा सुक्किला तहा।
पण्डुपणगमट्टिया खरा छत्तीसईविहा ॥ ७२ ॥

पुढवी य सक्करा वालुया य उवले सिला य लोणूसे।
अय-तउय-तम्ब-सीसग-रुप्प-सुवण्णे य वइरे य ॥ ७३ ॥

हरियाले हिंगुलुए मणोसिला सासगंजण-पवाले।
अब्भपडलऽब्भवालुय बायरकाए मणिविहाणे ॥ ७४ ॥

गोमेज्जए य रुयगे अंके फलिहे य लोहियक्खे य।
मरगय-मसारगल्ले भुयमोयग-इन्दनीले य ॥ ७५ ॥

चन्दण-गेरुय-हंसगब्भे पुलए सोगन्धिए य बोद्धव्वे।
चन्दप्पह-वेरुलिए जलकन्ते सूरकन्ते य ॥ ७६ ॥

एए खरपुढवीए भेया छत्तीसमाहिया।
एगविहमणाणत्ता सुहुमा तत्थ वियाहिया ॥ ७७ ॥

सुहुमा सव्वलोगम्मि लोगदेसे य बायरा।
इत्तो कालविभागं तु तेसिं वुच्छं चउव्विहं ॥ ७८ ॥

संतइं पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥ ७९ ॥

बावीससहस्साइं वासाणुक्कोसिया भवे।
आउठिई पुढवीणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥ ८० ॥

असंखकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं।
कायठिई पुढवीणं तं कायं तु अमुंचओ ॥ ८१ ॥

अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं।
विजढंमि सए काए पुढवीजीवाण अन्तरं ॥ ८२ ॥

एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ।
संठाणदेसओ वावि विहाणाइं सहस्सओ ॥ ८३ ॥

दुविहा आउजीवा उ सुहुमा बायरा तहा।
पज्जत्तमपज्जत्ता एवमेए दुहा पुणो ॥ ८४ ॥

बायरा जे उ पज्जत्ता पंचहा ते पकित्तिया।
सुद्धोदए य उस्से हरतणू महिया हिमे ॥ ८५ ॥

एगविहमणाणत्ता सुहुमा तत्थ वियाहिया ।
सुहुमा सव्वलोगम्मि लोगदेसे य बायरा ॥ ८६ ॥

सन्तइं पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य ।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥ ८७ ॥

सत्तेव सहस्साइं वासाणुकोसिया भवे ।
आउट्ठिई आऊणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥ ८८ ॥

असंखकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
कायट्ठिई आऊणं तं कायं तु अमुंचओ ॥ ८९ ॥

अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजढंमि सए काए आऊजीवाण अन्तरं ॥ ९० ॥

एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।
संठाणदेसओ वावि विहाणाइं सहस्सओ ॥ ९१ ॥

दुविहा वणस्सईजीवा सुहुमा बायरा तहा ।
पज्जत्तमपज्जत्ता एवमेए दुहा पुणो ॥ ९२ ॥

बायरा जे उ पज्जत्ता दुविहा ते वियाहिया ।
साहारणसरीरा य पत्तेगा य तहेव य ॥ ९३ ॥

पत्तेगसरीरा उ जेगहा ते पकित्तिया ।
रुक्खा गुच्छा य गुम्मा य लया वल्ली तणा तहा ॥ ९४ ॥

वलया पव्वगा कुहुणा जलरुहा ओसही तहा ।
हरियकाया य बोद्धव्वा पत्तेगाइं वियाहिया ॥ ९५ ॥

साहारणसरीरा उ णेगहा ते पकित्तिया ।
आलुए मूलए चेव सिंगबेरे तहेव य ॥ ९६ ॥

हरिली सिरिली सस्सिरिली जावई केयकन्दली ।
पलण्डुलसणकन्दे य कन्दली य कुडुंबए ॥ ९७ ॥

लोहिणीहू य थीहू य कुहगा य तहेव य ।
कन्दे य वज्जकन्दे य कन्दे सूरणए तहा ॥ ९८ ॥

अस्सकण्णी य बोद्धव्वा सीहकण्णी तहेव य ।
मुसुण्ढी य हलिद्दा यऽणेगहा एवमायओ ॥ ९९ ॥

एगविहमणाणत्ता सुहुमा तत्थ वियाहिया ।
सुहुमा सव्वलोगम्मि लोगदेसे य बायरा ॥ १०० ॥

संतइं पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥ १०१ ॥

दस चेव सहस्साइं वासाणुक्कोसिया भवे।
वणप्फईण आउं अन्तोमुहुत्तं जहन्नगं ॥ १०२ ॥

अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं।
कायठिई पणगाणं तं कायं तु अमुंचओ ॥ १०३ ॥

असंखकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं।
विजढंमि सए काए पणगजीवाण अन्तरं ॥ १०४ ॥

एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ।
संठाणदेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो ॥ १०५ ॥

इच्चेए थावरा तिविहा समासेण वियाहिया।
इत्तो उ तसे तिविहे वुच्छामि अणुपुव्वसो ॥ १०६ ॥

तेऊ वाऊ य बोद्धव्वा उराला य तसा तहा।
इच्चेए तसा तिविहा तेसिं भेए सुणेह मे ॥ १०७ ॥

दुविहा तेउजीवा उ सुहुमा बायरा तहा।
पज्जत्तमपज्जत्ता एवमेए दुहा पुणो ॥ १०८ ॥

बायरा जे उ पज्जत्ता णेगहा ते वियाहिया।
इंगाले मुम्मुरे अगणी अच्चि जाला तहेव य ॥ १०९ ॥

उक्का विज्जू य बोद्धव्वा णेगहा एवमायओ।
एगविहमणाणत्ता सुहुमा ते वियाहिया ॥ ११० ॥

सुहुमा सव्वलोगम्मि लोगदेसे य बायरा।
इत्तो कालविभागं तु तेसिं वुच्छं चउव्विहं ॥ १११ ॥

संतइं पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥ ११२ ॥

तिण्णेव अहोरत्ता उक्कोसेण वियाहिया।
आउट्ठिई तेऊणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥ ११३ ॥

असंखकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं।
कायट्ठिई तेऊणं तं कायं तु अमुंचओ ॥ ११४ ॥

अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं।
विजढंमि सए काए तेउजीवाण अन्तरं ॥ ११५ ॥

एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ।
संठाणदेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो॥ ११६॥

दुविहा वाउजीवा उ सुहुमा बायरा तहा।
पज्जत्तमपज्जत्ता एवमेव दुहा पुणो॥ ११७॥

बायरा जे उ पज्जत्ता पंचहा ते पकित्तिया।
उक्कलिया-मण्डलिया-घण-गुंजा सुद्ध-वाया य॥ ११८॥

संवट्टगवाया यऽणेगहा एवमायओ।
एगविहमणाणत्ता सुहुमा तत्थ वियाहिया॥ ११९॥

सुहुमा सव्वलोगम्मि एगदेसे य बायरा।
इत्तो कालविभागं तु तेसिं वुच्छं चउव्विहं॥ १२०॥

संतइं पप्पऽणाइया अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य॥ १२१॥

तिण्णेव सहस्साइं वासाणुक्कोसिया भवे।
आउट्ठिई वाऊणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया॥ १२२॥

असंखकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं।
कायट्ठिई वाऊणं तं कायं तु अमुंचओ॥ १२३॥

अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं।
विजढंमि सए काए वाउजीवाण अन्तरं॥ १२४॥

एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ।
संठाणदेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो॥ १२५॥

ओराला तसा जे उ चउहा ते पकित्तिया।
बेइन्दिय-तेइन्दिय-चउरे-पंचिन्दिया चेव॥ १२६॥

बेइन्दिया उ जे जीवा दुविहा ते पकित्तिया।
पज्जत्तमपज्जत्ता तेसिं भेए सुणेह मे॥ १२७॥

किमिणो सोमंगला चेव अलसा माइवाहया।
वासीमुहा य सिप्पीया संखा संखणगा तहा॥ १२८॥

पल्लोयाणुल्लया चेव तहेव य वराडगा।
जलूगा जालगा चेव चन्दणा य तहेव य॥ १२९॥

इइ बेइन्दिया एए णेगहा एवमायओ।
लोगेगदेसे ते सव्वे न सव्वत्थ वियाहिया॥ १३०॥

संतइं पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य॥ १३१॥

वासाइं बारसा चेव उक्कोसेण वियाहिया।
बेइन्दियआउठिई अन्तोमुहुत्तं जहन्निया॥ १३२॥

संखिज्जकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं।
बेइन्दियकायठिई तं कायं तु अमुंचओ॥ १३३॥

अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं।
बेइन्दियजीवाणं अन्तरं च वियाहियं॥ १३४॥

एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ।
संठाणदेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो॥ १३५॥

तेइन्दिया उ जे जीवा दुविहा ते पकित्तिया।
पज्जत्तमपज्जत्ता तेसिं भेए सुणेह मे॥ १३६॥

कुन्थुपिवीलिउड्डंसा उक्कलुद्देहिया तहा।
तणहारकट्ठहारा य मालुगा पत्तहारगा॥ १३७॥

कप्पासऽट्ठिमिजा य न्तिदुगा तउसमिंजगा।
सदावरी य गुम्मी य बोद्धव्वा इन्दगाइया॥ १३८॥

इन्दगोवगमाईया णेगहा एवमायओ।
लोगेगदेसे ते सव्वे न सव्वत्थ वियाहिया॥ १३९॥

संतइं पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य॥ १४०॥

एगूणपण्णऽहोरत्ता उक्कोसेण वियाहिया।
तेइन्दियआउठिई अन्तोमुहुत्तं जहन्निया॥ १४१॥

संखिज्जकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं।
तेइन्दियकायठिई तं कायं तु अमुंचओ॥ १४२॥

अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं।
तेइन्दियजीवाणं अन्तरेयं वियाहियं॥ १४३॥

एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ।
संठाणदेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो॥ १४४॥

चउरिन्दिया उ जे जीवा दुविहा ते पकित्तिया।
पज्जत्तमपज्जत्ता तेसिं भेए सुणेह मे॥ १४५॥

अन्धिया पोत्तिया चेव मच्छिया मसगा तहा।
भमरे कीडपयंगे य ढिंकुणे कुंकुणे तहा॥ १४६॥

कुक्कुडे सिंगिरीडी य नन्दावत्ते य विंछिए।
डोले भिंगारी य विरली अच्छिवेहए॥ १४७॥

अच्छिले माहए अच्छिरोडए विचित्ते चित्तपत्तए।
ओहिंजलिया जलकारी य नीया तन्तवयाइया॥ १४८॥

इय चउरिन्दिया एए ऽणेगहा एवमायओ।
लोगेगदेसे ते सव्वे न सव्वत्थ वियाहिया॥ १४९॥

संतइं पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य॥ १५०॥

छच्चेव य मासा उ उक्कोसेण वियाहिया।
चउरिन्दिय-आउठिई अन्तोमुहुत्तं जहन्निया॥ १५१॥

संखिज्जकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं।
चउरिन्दिय-कायठिई तं कायं तु अमुंचओ॥ १५२॥

अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं।
चउरिन्दियजीवाणं अन्तरेयं वियाहियं॥ १५३॥

एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ।
संठाणदेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो॥ १५४॥

पंचिन्दिया उ जे जीवा चउव्विहा ते वियाहिया।
नेरइयातिरिक्खा य मणुया देवा य आहिया॥ १५५॥

नेरइया सत्तविहा पुढवीसु सत्तसू भवे।
रयणाभसक्कराभा वालुयाभा य आहिया॥ १५६॥

पंकाभा धूमाभा तमा तमतमा तहा।
इइ नेरइया एए सत्तहा परिकित्तिया॥ १५७॥

लोगस्स एगदेसम्मि ते सव्वे उ वियाहिया।
एत्तो कालविभागं तु वोच्छं तेसिं चउव्विहं॥ १५८॥

संतइं पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य॥ १५९॥

सागरोवममेगं तु उक्कोसेण वियाहिया।
पढमाए जहन्नेणं दसवाससहस्सिया॥ १६०॥

तिण्णेव सागरा ऊ उक्कोसेण वियाहिया ।
दोच्चाए जहन्नेणं एगं तु सागरोवमं ॥ १६१ ॥

सत्तेव सागरा ऊ उक्कोसेण वियाहिया ।
तइयाए जहन्नेणं तिण्णेव सागरोवमा ॥ १६२ ॥

दस सागरोवमा ऊ उक्कोसेण वियाहिया ।
चउत्थीए जहन्नेणं सत्तेव सागरोवमा ॥ १६३ ॥

सत्तरस सागरा ऊ उक्कोसेण वियाहिया ।
पंचमाए जहन्नेणं दस चेव सागरोवमा ॥ १६४ ॥

बावीस सागरा ऊ उक्कोसेण वियाहिया ।
छट्ठीए जहन्नेणं सत्तरस सागरोवमा ॥ १६५ ॥

तेत्तीस सागरा ऊ उक्कोसेण वियाहिया ।
सत्तमाए जहन्नेणं बावीसं सागरोवमा ॥ १६६ ॥

जा चेव य आउठिई नेरइयाणं वियाहिया ।
सा तेसिं कायठिई जहन्नुकोसिया भवे ॥ १६७ ॥

अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजढंमि सए काए नेरइयाणं अन्तरं ॥ १६८ ॥

एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।
संठाणदेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो ॥ १६९ ॥

पंचिन्दियतिरिक्खाओ दुविहा ते वियाहिया ।
सम्मुच्छिमतिरिक्खाओ गब्भवक्कन्तिया तहा ॥ १७० ॥

दुविहा ते भवे तिविहा जलयरा थलयरा तहा ।
खहयरा य बोद्धव्वा तेसिं भेए सुणेह मे ॥ १७१ ॥

मच्छा य कच्छभा य गाहा य मगरा तहा ।
सुंसुमारा य बोद्धव्वा पंचहा जलयराहिया ॥ १७२ ॥

लोएगदेसे ते सव्वे न सव्वत्थ वियाहिया ।
एत्तो कालविभागं तु वोच्छं तेसिं चउव्विहं ॥ १७३ ॥

संतइं पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य ।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥ १७४ ॥

एगा य पुव्वकोडी उ उक्कोसेण वियाहिया ।
आउट्ठिई जलयराणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥ १७५ ॥

पुव्वकोडीपुहुत्तं तु उक्कोसेण वियाहिया।
कायट्ठिई जलयराणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥ १७६ ॥
अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं।
विजढंमि सए काए जलयराणं अन्तरं ॥ १७७ ॥
एएसिं वण्णओ चेव गंधओ रसफासओ।
संठाणदेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो ॥ १७८ ॥
चउप्पया य परिसप्पा दुविहा थलयरा भवे।
चउप्पया चउविहा ते मे कित्तयओ सुण ॥ १७९ ॥
एगखुरा दुखुरा चेव गण्डीपयसणप्पया।
हयमाइगोणमाइगयमाइसीहमाइणो ॥ १८० ॥
भुओरगपरिसप्पा य परिसप्पा दुविहा भवे।
गोहाई अहिमाई य एक्केक्का णेगहा भवे ॥ १८१ ॥
लोएगदेसे ते सव्वे न सव्वत्थ वियाहिया।
एत्तो कालविभागं तु वोच्छं तेसिं चउव्विहं ॥ १८२ ॥
संतइं पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥ १८३ ॥
पलिओवमाइं तिण्णि उ उक्कोसेण वियाहिया।
आउट्ठिई थलयराणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥ १८४ ॥
पुव्वकोडिपुहत्तेणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया।
कायट्ठिई थलयराणं अन्तरं तेसिमं भवे ॥ १८५ ॥
कालमणन्तमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं।
विजढम्मि सए काए थलयराणं तु अन्तरं ॥ १८६ ॥
चम्मे उ लोमपक्खी य तइया समुग्गपक्खिया।
वियपक्खी य बोद्धव्वा पक्खिणो य चउव्विहा ॥ १८७ ॥
लोगेगदेसे ते सव्वे न सव्वत्थ वियाहिया।
इत्तो कालविभागं तु वोच्छं तेसिं चउव्विहं ॥ १८८ ॥
संतइं पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥ १८९ ॥
पलिओवमस्स भागो असंखेज्जइमो भवे।
आउट्ठिई खहयराणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥ १९० ॥
असंखभागो पलियस्स उक्कोसेण उ साहिओ।
पुव्वकोडीपुहत्तेणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥ १९१ ॥

कायठिई खहयराणं अन्तरं तेसिमं भवे।
कालं अणन्तमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ॥ १९१ ॥

एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ।
संठाणदेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो ॥ १९३ ॥

मणुया दुविहभेया उ ते मे कित्तयओ सुण।
संमुच्छिमा य मणुया गब्भवक्कन्तिया तहा ॥ १९४ ॥

गब्भवक्कन्तिया जे उ तिविहा ते वियाहिया।
अकम्मकम्मभूमा य अन्तरद्दीवया तहा ॥ १९५ ॥

पन्नरस तीसविहा भेया अट्ठवीसइं।
संखा उ कमसो तेसिं इइ एसा वियाहिया ॥ १९६ ॥

संमुच्छिमाण एसेव भेओ होइ वियाहिओ।
लोगस्स एगदेसम्मि ते सव्वे वि वियाहिया ॥ १९७ ॥

संतइं पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥ १९८ ॥

पलिओवमाइं तिण्णि उ असंखेज्जइमो भवे।
आउट्ठिई मणुयाणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥ १९९ ॥

पलिओवमाइं तिण्णि उ उक्कोसेण उ साहिया।
पुव्वकोडिपुहत्तेणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥ २०० ॥

कायट्ठिई मणुयाणं अन्तरं तेसिमं भवे।
अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ॥ २०१ ॥

एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ।
संठाणदेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो ॥ २०२ ॥

देवा चउव्विहा वुत्ता ते मे कित्तयओ सुण।
भोमिज्ज-वाणमन्तर-जोइस-वेमाणिया तहा ॥ २०३ ॥

दसहा भवणवासी अट्ठहा वणचारिणो।
पंचविहा जोइसिया दुविहा वेमाणिया तहा ॥ २०४ ॥

असुरा नागसुवण्णा विज्जू अग्गी वियाहिया।
दीवोदहिदिसा वाया थणिया भवणवासिणो ॥ २०५ ॥

पिसायभूया जक्खा य रक्खसा किन्नरा य किंपुरिसा।
महोरगा य गन्धव्वा अट्ठविहा वाणमन्तरा ॥ २०६ ॥

चन्दा सूरा य नक्खत्ता गहा तारागणा तहा ।
दिसाविचारिणो चेव पंचहा जोइसालया ॥ २०७ ॥
वेमाणिया उ जे देवा दुविहा ते वियाहिया ।
कप्पोवगा य बोद्धव्वा कप्पाईया तहेव य ॥ २०८ ॥
कप्पोवगा बारसहा सोहम्मीसाणगा तहा ।
सणंकुमारमाहिन्दा बम्भलोगा य लन्तगा ॥ २०९ ॥
महासुक्का सहस्सारा आणया पाणया तहा ।
आरणा अच्चुया चेव इइ कप्पोवगा सुरा ॥ २१० ॥
कप्पाईया उ जे देवा दुविहा ते वियाहिया ।
गेविज्जाऽणुत्तरा चेव गेविज्जा नवहा तहिं ॥ २११ ॥
हेट्ठिमाहेट्ठिमा चेव हेट्ठिमामज्झिमा तहा ।
हेट्ठिमाउवरिमा चेव मज्झिमाहेट्ठिमा तहा ॥ २१२ ॥
मज्झिमामज्झिमा चेव मज्झिमाउवरिमा तहा ।
उवरिमाहेट्ठिमा चेव उवरिमामज्झिमा तहा ॥ २१३ ॥
उवरिमाउवरिमा चेव इय गेविज्जगा सुरा ।
विजया वेजयन्ता य जयन्ता अपराजिया ॥ २१४ ॥
सव्वत्थसिद्धगा चेव पंचहाऽणुत्तरा सुरा ।
इय वेमाणिया एए णेगहा एवमायओ ॥ २१५ ॥
लोगस्स एगदेसम्मि ते सव्वे वि वियाहिया ।
इत्तो कालविभागं तु वोच्छं तेसिं चउव्विहं ॥ २१६ ॥
संतइं पप्पाऽणाईया अपज्जवसिया वि य ।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥ २१७ ॥
साहियं सागरं एक्कं उक्कोसेणं ठिई भवे ।
भोमेज्जाणं जहन्नेणं दसवाससहस्सिया ॥ २१८ ॥
पलिओवममेगं तु उक्कोसेणं ठिई भवे ।
वन्तराणं जहन्नेणं दसवाससहस्सिया ॥ २१९ ॥
पलिओवममेगं तु वासलक्खेण साहियं ।
पलिओवमऽट्ठभागो जोइसेसु जहन्निया ॥ २२० ॥
दो चेव सागराइं उक्कोसेण वियाहिया ।
सोहम्मंमि जहन्नेणं एगं च पलिओवमं ॥ २२१ ॥
सागरा साहिया दुन्नि उक्कोसेणं वियाहिया ।
ईसाणम्मि जहन्नेणं साहियं पलिओवमं ॥ २२२ ॥

सागराणि य सत्तेव उक्कोसेणं ठिई भवे ।
सणंकुमारे जहन्नेणं दुन्नि ऊ सागरोवमा ॥ २२३ ॥
साहिया सागरा सत्त उक्कोसेणं ठिई भवे ।
माहिन्दम्मि जहन्नेणं साहिया दुन्नि सागरा ॥ २२४ ॥
दस चेव सागराइं उक्कोसेणं ठिई भवे ।
बम्भलोए जहन्नेणं सत्त ऊ सागरोवमा ॥ २२५ ॥
चउद्दस सागराइं उक्कोसेणं ठिई भवे ।
लन्तगम्मि जहन्नेणं दस ऊ सागरोवमा ॥ २२६ ॥
सत्तरस सागराइं उक्कोसेणं ठिई भवे ।
महासुक्के जहन्नेणं चोद्दस सागरोवमा ॥ २२७ ॥
अट्ठारस सागराइं उक्कोसेणं ठिई भवे ।
सहस्सारे जहन्नेणं सत्तरस सागरोवमा ॥ २२८ ॥
सागरा अउणवीसं तु उक्कोसेणं ठिई भवे ।
आणयम्मि जहन्नेणं अट्ठारस सागरोवमा ॥ २२९ ॥
वीसं तु सागराइं उक्कोसेणं ठिई भवे ।
पाणयम्मि जहन्नेणं सागरा अउणवीसई ॥ २३० ॥
सागरा इक्कवीसं तु उक्कोसेणं ठिई भवे ।
आरणम्मि जहन्नेणं वीसई सागरोवमा ॥ २३१ ॥
बावीसं सागराइं उक्कोसेणं ठिई भवे ।
अच्चुयम्मि जहन्नेणं सागरा इक्कवीसई ॥ २३२ ॥
तेवीस सागराइं उक्कोसेणं ठिई भवे ।
पढमम्मि जहन्नेण बावीसं सागरोवमा ॥ २३३ ॥
चउवीस सागराइं उक्कोसेणं ठिई भवे ।
बिइयम्मि जहन्नेणं तेवीसं सागरोवमा ॥ २३४ ॥
पणवीस सागराइं उक्कोसेणं ठिई भवे ।
तइयम्मि जहन्नेणं चउवीसं सागरोवमा ॥ २३५ ॥
छव्वीस सागराइं उक्कोसेणं ठिई भवे ।
चउत्थम्मि जहन्नेणं सागरा पणुवीसई ॥ २३६ ॥
सागरा सत्तवीसं तु उक्कोसेणं ठिई भवे ।
पंचमम्मि जहन्नेणं सागरा उ छवीसई ॥ २३७ ॥
सागरा अट्ठवीसं तु उक्कोसेणं ठिई भवे ।
छट्ठम्मि जहन्नेणं सागरा सत्तवीसई ॥ २३८ ॥

सागरा अउणतीसं तु उक्कोसेणं ठिई भवे।
सत्तमम्मि जहन्नेणं सागरा अट्ठवीसई ॥ २३९ ॥
तीसं तु सागराइं उक्कोसेणं ठिई भवे।
अट्ठमम्मि जहन्नेणं सागरा अउणतीसई ॥ २४० ॥
सागरा इक्कतीसं तु उक्कोसेणं ठिई भवे।
नवमम्मि जहन्नेणं तीसई सागरोवमा ॥ २४१ ॥
तेत्तीस सागराइं उक्कोसेणं ठिई भवे।
चउसुं पि विजयाईसु जहन्नेणेक्कतीसई ॥ २४२ ॥
अजहन्नमणुक्कोसा तेत्तीसं सागरोवमा।
महाविमाणे सव्वट्ठे ठिई एसा वियाहिया ॥ २४३ ॥
जा चेव य आउठिई देवाणं तु वियाहिया।
सा तेसिं कायठिई जहन्नमुक्कोसिया भवे ॥ २४४ ॥
अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं।
विजढंमि सए काए देवाणं हुज्ज अन्तरं ॥ २४५ ॥
एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफाससो।
संठाणदेसओ वावि विहाणाइं सहस्सओ ॥ २४६ ॥
संसारत्था य सिद्धा य इय जीवा वियाहिया।
रूविणो चेव रूवी य अजीवा दुविहा वि य ॥ २४७ ॥
इय जीवमजीवे य सोच्चा सद्दहिऊण य।
सव्वनयाणं अणुमए रमेज्ज संजमे मुणी ॥ २४८ ॥
तओ बहूणि वासाणि सामण्णमणुपालिया।
इमेण कम्मजोगेण अप्पाणं संलिहे मुणी ॥ २४९ ॥
बारसेव उ वासाइं संलेहुक्कोसिया भवे।
संवच्छरं मज्झिमिया छम्मासा य जहन्निया ॥ २५० ॥
पढमे वासचउक्कंमि विगई-निज्जूहणं करे।
बिइए वासचउक्कम्मि विचित्तं तु तवं चरे ॥ २५१ ॥
एगन्तरमायामं कट्टु संवच्छरे दुवे।
तओ संवच्छरद्धं तु नाइविगिट्ठं तवं चरे ॥ २५२ ॥
तओ संवरच्छरद्धं तु विगिट्ठं तु तवं चरे।
परिमियं चेव आयामं तंमि संवच्छरे करे ॥ २५३ ॥
कोडीसहियमायामं कट्टु संवच्छरे मुणी।
मासद्ध-मासिएणं तु आहारेण तवं चरे ॥ २५४ ॥

कन्दप्पमाभिओगं च किब्बिसियं मोहमासुरत्तं च ।
एयाउ दुग्गईओ मरणम्मि विराहिया होन्ति ॥ २५५ ॥
मिच्छादंसणरत्ता सनियाणा उ हिंसगा ।
इय जे मरन्ति जीवा तेसिं पुण दुल्लहा बोही ॥ २५६ ॥
सम्मद्दंसणरत्ता अनियाणा सुक्कलेसमोगाढा ।
इय जे मरन्ति जीवा तेसिं सुलहा भवे बोही ॥ २५७ ॥
मिच्छादंसणरत्ता सनियाणा कण्हलेसमोगाढा ।
इय जे मरन्ति जीवा तेसिं पुण दुल्लहा बोही ॥ २५८ ॥
जिणवयणे अणुरत्ता जिणवयणं जे करेन्ति भावेण ।
अमला असंकिलिट्ठा ते होन्ति परित्तसंसारी ॥ २५९ ॥
बालमरणाणि बहुसो अकाममरणाणि चेव य बहूणि ।
मरिहिन्ति ते वराया जिणवयणं जे न जाणन्ति ॥ २६० ॥
बहुआगमविन्नाणा समाहिउप्पायगा य गुणगाही ।
एएण कारणेणं अरिहा आलोयणं सोउं ॥ २६१ ॥
कन्दप्प-कोक्कुयाइं तह सील-सहाव-हसण-विगहाइं ।
विम्हावेन्तो य परं कन्दप्पं भावणं कुणइ ॥ २६२ ॥
मन्ताजोगं काउं भूईकम्मं च जे पउंजन्ति ।
साय-रस-इड्ढि-हेउं अभिओगं भावणं कुणइ ॥ २६३ ॥
नाणस्स केवलीणं धम्मायरियस्स संघसाहूणं ।
माई अवण्णवाई किब्बिसियं भावणं कुणइ ॥ २६४ ॥
अणुबद्धरोसपसरो तह य निमित्तंमि होइ पडिसेवी ।
एएहि कारणेहि आसुरियं भावणं कुणइ ॥ २६५ ॥
सत्थग्गहणं विसभक्खणं च जलणं च जलप्पवेसो य ।
अणायारभण्डसेवा जम्मणमरणाणि बन्धन्ति ॥ २६६ ॥
इइ पाउकरे बुद्धे नायए परिनिव्वुए ।
छत्तीसं उत्तरज्झाए भवसिद्धीयसंमए ॥ २६७ ॥ त्ति बेमि

॥ जीवाजीवविभत्ती समत्ता ॥ ३६ ॥

॥ उत्तराध्ययनसूत्रं समाप्तम् ॥